पूर्वांचल केशरी
(असमीया दैनिक)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path,
ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94350 14771, 97070 14771

E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in

हिंदी दैनिक

गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 11 | अंक : 107 | गुवाहाटी | शनिवार, 16 नवंबर, 2024 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 12 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

असम में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सीप्लेन सेवा का हुआ परीक्षण पेज 3

जनजातीय समाज की पढ़ाई, कमाई और दवाई पर सरकार का जोर : प्रधानमंत्री पेज 4

मुख्यमंत्री नायब सैनी ने गुरूग्राम अस्पताल का नाम श्री गुरु नानक देव किया पेज 5

कालिंजर दुर्ग में उमड़ी लाखों श्रद्धालुओं की भीड़, भगवान नीलकंठेश्वर का हुआ पूजन पेज 8

सुप्रभात
अन्न के सिवाय कोई दूसरा धन नहीं है।
- आचार्य चाणक्य

न्यूज गैलरी

ईसी ने की गृह मंत्री शाह के बैग की तलाशी

मुंबई। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि शुक्रवार को महाराष्ट्र के हिंगोली में चुनाव प्रचार के दौरान चुनाव आयोग के अधिकारियों ने उनके हेलीकॉप्टर की जांच की। उन्होंने सभी से स्वस्थ चुनाव प्रणाली में अपना योगदान देने की अपील की। इस जांच से जुड़ा एक वीडियो *एक्स* पर साझा करते हुए शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) निष्पक्ष चुनाव और स्वस्थ चुनाव प्रणाली में विश्वास करती है और निर्वाचन आयोग के नियमों का पालन करती है। -शेष पृष्ठ दो पर

ननकाना साहिब जा रहे हिंदू तीर्थयात्री की गोली मारकर हत्या

नई दिल्ली। पाकिस्तान के ननकाना साहिब में गुरु नानक देव की 555वें प्रकाश पर्व समारोह में भाग लेने जा रहे एक पाकिस्तानी हिंदू तीर्थयात्री की लुटेरों ने गोली मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। सिंध प्रांत के लरकाना शहर के मूल निवासी राजेश कुमार अपने दोस्त और एक रिश्तेदार के साथ कार से लाहौर से ननकाना साहिब जा रहे थे, तभी लाहौर से लगभग 60 किलोमीटर दूर मानांवाला-ननकाना -शेष पृष्ठ दो पर

प्रधानमंत्री ने बोड़ोलैंड महाउत्सव का उद्घाटन किया

बोड़ो लोगों की तरह विकास का मार्ग अपनाएं : पीएम मोदी

■ विकसित भारत समाचार

कोकराझाड़/नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज शाम नई दिल्ली में केडी यादव कुश्ती स्टेडियम, साई इंदिरा गांधी स्टेडियम परिसर में बोड़ोलैंड महाउत्सव का औपचारिक उद्घाटन किया। पीएम मोदी ने इस मेगा इवेंट का उद्घाटन करने से पहले बोड़ोफा यूएन ब्रह्म की मोबाइल प्रतिमा पर भावभीनी श्रद्धांजलि दीं। अपने विचार-विमर्श में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीटीआर के लोगों के प्रति अपनी भावनात्मक कृतज्ञता व्यक्त की, जो इसकी संस्कृति, परंपरा, भाषा और शिक्षा की रक्षा के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। बोड़ो शब्द- *खुलुम्बई,* नमस्कार के साथ अपने भाषण की शुरुआत करते हुए उन्होंने कहा कि वह बोड़ो लोगों को याद रखेंगे, जिन्होंने बीटीआर समझौते के बाद 2020 में बोड़ोलैंड के कोकराझाड़ की अपनी यात्रा के दौरान उन्हें गर्मजोशी से प्यार दिया। उन्होंने कहा कि समझौते के बाद बोड़ोलैंड में शांति की नई लहर देखी गई है और यह क्षेत्र सद्भाव का स्थान बन गया है। उन्होंने यह भी कहा कि शांति लौटने के बाद बीटीसी में लोगों के चेहरे मुस्कुरा उठे हैं और विकास कार्य गति पकड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैंने बोड़ोलैंड की एक मां की खुशी महसूस की, जिसका बेटा जंगल में चला गया, हथियार उठाए और अपनी मां को हताशा में छोड़ गया, लेकिन जंगल से लौटने के बाद, मां और बेटे के बीच फिर से मिलन हुआ है। इससे बड़ी कोई खुशी नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि असम और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में दस हजार से अधिक उग्रवादी मुख्यधारा में वापस आ गए हैं। उन्होंने कहा कि वह हिंसा का रास्ता छोड़ने के लिए बोड़ो लोगों को धन्यवाद और आभार व्यक्त करने के लिए बोड़ोलैंड महोत्सव में आए हैं। भारत सरकार ने बीटीआर को 1500 करोड़ रुपए का वित्तीय पैकेज जारी किया है

और असम सरकार ने भी 4000 से अधिक एनडीएफबी सदस्यों को 4 लाख रुपए प्रत्येक के विकास और पुनर्वास के लिए धन जारी किया है। उन्होंने कहा कि बोड़ो युवाओं को कौशल, उद्यमिता और रोजगार पर जोर दिया जा रहा है और भारत सरकार रेशम उत्पादन और पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए बीटीआर को समर्थन देगी। आरक्षित वनों की रक्षा, मानस राष्ट्रीय उद्यान, रायमाना राष्ट्रीय उद्यान और सिखनझाड़ राष्ट्रीय उद्यान के विकास की पहल की सराहना करते हुए मोदी ने आने वाली पीढ़ियों की देखभाल करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे बोड़ो लोगों की कड़ी मेहनत का उचित जवाब देंगे। अपने भाषण में, बीटीसी के सीईएम प्रमोद बोड़ो ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आदिवासी किंवदंतियों के लिए उचित सम्मान और प्रतिक्रिया दे रहे हैं और आदिवासी संस्कृति और विरासत के उत्कर्ष के लिए अवसर प्रदान कर रहे हैं। बोड़ोलैंड महोत्सव को ऐतिहासिक आयोजन बताते हुए बोड़ो ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और असम के मुख्यमंत्री डॉ हिमंत विश्व शर्मा बीटीआर समझौते पर हस्ताक्षर करने और शांति स्थापित करने में सहायक रहे हैं। उन्होंने दलित समुदायों की देखभाल के लिए भी मोदी की सराहना की। उन्होंने उम्मीद जताई कि भारत सरकार भारत में छठी अनुसूची परिषदों को उन्नत करने के लिए संविधान के 125वें संशोधन में कुछ बदलाव लाएगी। उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार जेल में बंद एनडीएफबी सदस्यों को रिहा करने के लिए कदम उठाएगी। खुले सत्र को असम के राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने भी संबोधित किया और कैबिनेट मंत्री यूजी ब्रह्म, सांसद जयंत बसुमतारी और रवांग्रा नर्जारी, आब्सू और जीएचएसएस के अध्यक्ष डॉ. सुरथ नर्जारी और प्रोफेसर रमेश भारद्वाज ने भी भाग -शेष पृष्ठ दो पर

बीच बाजार दबंगई दिखा रहे पानबाजार ओसी का निलंबन

गुवाहाटी। असम के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) जीपी सिंह ने शुक्रवार को कार्रवाई करते हुए पानबाजार पुलिस स्टेशन के प्रभारी निरीक्षक भार्गव बोरबोरा को निलंबित करने की घोषणा की। यह कार्रवाई एक वीडियो के सामने आने के बाद की गई है, जिसमें एक पुलिस अधिकारी एक डिलीवरी एजेंट के साथ मारपीट करता हुआ दिखाई दे रहा है। मामले की विभागीय जांच के भी आदेश दिए गए हैं। डीजीपी सिंह ने कहा कि इंस्पेक्टर भार्गव बोरबोरा का व्यवहार अस्वीकार्य है। उन्हें तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जा रहा है और सीपी गुवाहाटी को तुरंत किसी -शेष पृष्ठ दो पर

आईसीसी ने पीओके में चैंपियंस ट्रॉफी का दौरा रद्द किया

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) से पीओके क्षेत्रों में चैंपियंस ट्रॉफी का दौरा रद्द करने को कहा है। पीसीबी ने गुरुवार (14 नवंबर) को कहा था कि ट्रॉफी स्कार्दू, हुंजा, मरी और मुजफ्फराबाद का दौरा करेगी। एक रिपोर्ट के अनुसार, बीसीसीआई ने पीसीबी की योजना पर आपत्ति जताई और फिर आईसीसी ने पाकिस्तान बोर्ड से उक्त शहरों में ट्रॉफी का दौरा रद्द करने को कहा। सूत्रों के अनुसार, बीसीसीआई सचिव जय शाह ने भी ट्रॉफी को पीओके ले जाने के पीसीबी के कदम की निंदा की। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने स्कार्दू, मुरी और मुजफ्फराबाद में 2025 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के नियोजित ट्रॉफी दौरे को रद्द कर दिया है, ये क्षेत्र पाकिस्तान के कब्जे वाले -शेष पृष्ठ दो पर

असम : ऑनलाइन ट्रेडिंग घोटाले का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

गुवाहाटी। केंद्रीय जांच एजेंसी सीबीआई ने दो हजार करोड़ रुपए से ज्यादा के असम के ऑनलाइन ट्रेडिंग घोटाले में मुख्य आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। सीबीआई ने घोटाले के मुख्य आरोपी गोपाल पॉल को सिलीगुड़ी से गिरफ्तार किया। ऑनलाइन ट्रेडिंग घोटाले यानी कि एजेआरएस मार्केटिंग मामले में सीबीआई द्वारा -शेष पृष्ठ दो पर

पूर्वोत्तर को देश के विकास का इंजन बनाना प्रधानमंत्री मोदी का संकल्प : सिंधिया

अगरतला (हि.स.)। केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि पूर्वोत्तर देश का विकास इंजन बने, यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की केवल आशा और अभिलाषा नहीं है, बल्कि यह प्रधानमंत्री मोदी का संकल्प भी है। इसके लिए व्यापक पैमाने पर कार्य भी इन वर्षों में किए गए हैं। सिंधिया ने कहा कि बीते 10 वर्षों में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रधानमंत्री तथा राज्य सरकारों ने मिलकर पूर्वोत्तर राज्यों में परिवर्तन लाए हैं। सिंधिया शुक्रवार को अगरतला में त्रिपुरा के मुख्यमंत्री प्रो. माणिक साहा

के साथ बैठक करने के बाद एक संयुक्त पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे। अपने तीन दिवसीय पूर्वोत्तर दौरे के तीसरे दिन शुक्रवार को केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने त्रिपुरा तथा मेघालय में विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। अपनी यात्रा के पहले और दूसरे दिन सिंधिया ने अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम तथा नगालैंड के मुख्यमंत्रियों के साथ बैठकें कीं। साथ ही वे अन्य कई कार्यक्रमों में भी शामिल हुए। उन्होंने मिजोरम तथा नगालैंड के बाद शुक्रवार को अगरतला में मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के लिए पहले 24,000 करोड़ रुपए का बजट आवंटन किया जाता था, लेकिन आज इस क्षेत्र के लिए 1,03,000 करोड़ रुपए का -शेष पृष्ठ दो पर

बांग्लादेश में बढ़ते चरमपंथ पर अमेरिका चिंतित

वाशिंगटन। व्हाइट हाउस की एक पूर्व अधिकारी ने कहा कि बांग्लादेश में बढ़ते चरमपंथ को लेकर अमेरिका में गंभीर चिंताएं हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि बांग्लादेश की अपदस्थ पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने इसे अच्छी तरह से नियंत्रित किया था। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पूर्व उप सहायक और 2017 से 2021 तक दक्षिण एवं मध्य एशिया के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के वरिष्ठ निदेशक पद पर सेवाएं दे चुकीं लीजा कर्टिस -शेष पृष्ठ दो पर

जिस दिन जातीय जनगणना हो गई, देश का चेहरा बदल जाएगा : राहुल गांधी

गोड्डा (हि.स.)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि जिस दिन जातीय जनगणना हो गई, उसी दिन से देश का चेहरा बदल जाएगा। दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और गरीबों को उनकी असली ताकत का पता चलेगा और इसके बाद एक नयी राजनीति की शुरुआत हो जाएगी। राहुल गांधी शुक्रवार को कांग्रेस की महगामा से उम्मीदवार दीपिका पांडे सिंह के समर्थन में बलवड्डा उच्च विद्यालय मेहरमा में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि भाजपा भले ही जातीय जनगणना की मांग नकार दे, लेकिन कांग्रेस पार्टी लोकसभा में इसका प्रस्ताव पास करेगी। उन्होंने कहा कि दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों, गरीबों की सही संख्या सामने आते ही हम आरक्षण की 50 प्रतिशत की दीवार -शेष पृष्ठ दो पर

झामुमो आदिवासियों की नहीं घुसपैठियों की पार्टी बन गई : शर्मा

रांची (हि.स.)। असम के मुख्यमंत्री और भाजपा के सह चुनाव प्रभारी हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि आज लगातार यहां आदिवासी आबादी घट रही है, और मुस्लिम आबादी तेजी से बढ़ रही है। आज हिंदू 67 प्रतिशत और मुस्लिम आबादी 33 प्रतिशत हो गई है। लगातार हमारे संथाल परगना में घुसपैठियों ने आना शुरू किया, लेकिन सरकार

ने इस मुद्दे पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि ये बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं, अपने झारखंड के मुसलमान नहीं हैं। पाकुड़ और साहिबगंज में ये आबादी 35 प्रतिशत हो गई है। झामुमो आदिवासियों की पार्टी नहीं है, बल्कि घुसपैठियों के वोटबैंक के लिए उनकी पार्टी बन गई है। शर्मा शुक्रवार को दुमका जिले -शेष पृष्ठ दो पर

स्पेन में नर्सिंग होम में आग लगने से दस लोगों की मौत

मैड्रिड (हि.स.)। स्पेन के आरागॉन प्रांत की राजधानी जारागोजा के विलाफ्रांका डी एब्रो में जार्डिन्स डी विलाफ्रांका नर्सिंग होम में आग लगने से कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य झुलस गए। झुलसे लोगों में से दो की हालत गंभीर है। जारागोजा से घटनास्थल करीब 20 मिनट की दूरी पर है। स्पेन के ईएल पीएआईएस समाचार पत्र ने सरकार के हवाले से यह जानकारी दी। जारागोजा के दमकल विभाग के कर्मचारियों ने सूचना पर आज सुबह पांच बजे -शेष पृष्ठ दो पर

शर्मा शर्डउवेब
SHARMA
HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947

+91 7002506581
সুমন ফাইবাৰ এণ্ড ইনটেৰিঅ'ৰ
SUMAN
FIBRE & INTERIOR
Siddiqui Ali Commercial Complex, S.J. Road, Athgaon, Guwahati-781001
WHOLESALER OF :
PVC FALSE CEILING & WALL PANEL, DOOR FITTINGS, PLYWOOD, SUNMICA
POWER TOOLS, MODULAR KITCHEN & ACCESSORIES

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

MURTI AVAILABLE

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc. **ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, **Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

दुश्मनों के खिलाफ एकजुट हों भारतीय

गडकरी ने बंटेंगे तो कटेंगे नारे का किया बचाव

मुंबई। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने योगी आदित्यनाथ के नारे बटेंगे तो कटेंगे का बचाव किया है। उन्होंने कहा कि लोगों को इस नारे का गलत मतलब नहीं निकालना चाहिए और देश के दुश्मनों और आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होना चाहिए। गडकरी ने ये भी दावा किया कि आगामी विधानसभा चुनाव में राज्य में महायुति गठबंधन की सरकार सत्ता में वापसी करेगी। नितिन गडकरी ने कहा कि हमारी पूजा पद्धति अलग हो सकती हैं, कुछ लोग मंदिर जाते हैं तो कुछ मस्जिद और कुछ गिरिजाघर, लेकिन आखिर में तो हम सब भारतीय हैं। हमें बटेंगे तो कटेंगे नारे का गलत मतलब नहीं निकालना चाहिए बल्कि आतंकवाद और देश के दुश्मनों के खिलाफ एकजुट होना चाहिए। सभी भारतीयों को एकजुट होना चाहिए और ये किसी को बांटने के लिए नहीं है, लेकिन दुख की बात है कि लोग इसका गलत मतलब निकाल रहे हैं। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ ने एक जनसभा के दौरान ये नारा दिया था, जिसे लेकर राजनीतिक बयानबाजी जारी है। कई नेताओं ने योगी आदित्यनाथ के नारे का समर्थन किया है तो कई नेता ऐसे भी हैं, जो योगी के नारे को भड़काऊ और लोगों को बांटने वाला बता रहे हैं। नितिन गडकरी ने आगामी विधानसभा चुनाव में महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन की सरकार बनने का दावा किया। गडकरी ने कहा कि लोकसभा चुनाव के दौरान अलग माहौल था, लेकिन अब विधानसभा चुनाव में शिव सेना और कांग्रेस के विचार मेल नहीं खा रहे हैं। महायुति गठबंधन की तरफ से सीएम पद के चेहरे को लेकर गडकरी ने कहा कि चुनाव एकनाथ शिंदे, अजित पवार और देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में हो रहे हैं और चुनाव के बाद ये तीनों नेता, पार्टी आलाकमान और चुने हुए प्रतिनिधि नेता का चुनाव करेंगे।

दिल्ली के प्रदूषण में हुआ सुधार, एक्यूआई 396 हुआ दर्ज

नई दिल्ली (हि.स.)। राजधानी दिल्ली और एनसीआर के लोगों को प्रदूषण से थोड़ी राहत मिली है। शुक्रवार को राष्ट्रीय राजधानी में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में शुक्रवार को मामूली कमी आई और अब यह गंभीर श्रेणी से घटकर बेहद खराब श्रेणी में आ गया है। शुक्रवार को औसत एक्यूआई 396 दर्ज किया गया। इस बीच, दिल्ली सरकार ने प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए केंद्रीय गुणवत्ता प्रबंधन आयोग द्वारा जारी ग्रेप का तीसरा चरण भी लागू कर दिया है। पिछले दो दिन से दिल्ली में एक्यूआई का स्तर 400 से ऊपर चल रहा था। गुरुवार को दिल्ली में एक्यूआई 424 दर्ज किया गया था, जो गंभीर श्रेणी में था। शुक्रवार को प्रदूषण से हल्की राहत मिली है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के एक्यूआई बुलेटिन के मुताबिक, दिल्ली में बीते 24 घंटे का औसत एक्यूआई 396 दर्ज किया गया, जो प्रदूषण की बेहद खराब श्रेणी है।

मोरीगांव में मनाया गया आदिवासी गौरव दिवस

मोरीगांव (हिंस)। मोरीगांव जिला नेहरू युवा केंद्र की पहल पर और जीवन ज्योति कृषक संघ के सहयोग से आजाद भारत आंदोलन के सबसे लोकप्रिय आदिवासी युवा नेताओं में शुमार बिरसा मुंडा की आज यहां जयंती मनायी गयी है। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर, 1875 को झारखंड में हुआ था। 9 जुलाई, 1900 को रांची की सेंट्रल जेल में उनकी मृत्यु हो गई। वह भारतीय लोगों के लिए लगातार काम करते रहे। आदिवासी समुदाय के लोगों की तमाम समस्याओं समेत अपने मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहे। वह ब्रिटिश शासन के विरोध में जेल में थे, 9 जून, 1900 को रांची की सेंट्रल जेल में उनकी मृत्यु हो गई। महज 24 साल के अंतराल में आदिवासी समुदाय के बीच भाषण देकर संघ आंदोलन खड़ा कर विश्व में पहचान बनाने वाले साहसी आदिवासी युवा नेता बिरसा मुंडा की आज जयंती है। देश के अन्य हिस्सों की तरह आज आदिवासी गौरव दिवस मोरीगांव जिला के थेकेरा हायर सेकेंडरी स्कूल में मनाया गया। मोरीगांव जिला नेहरू युवा केंद्र और जीवन ज्योति कृषक संघ द्वारा आयोजित जन जातीय गौरव दिवस पर पूर्वी हिस्से में स्वच्छता, वृक्षारोपण के साथ-साथ गायन के साथ ही जनसभा के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

भारत को हर प्रकार के सामर्थ्य में नंबर वन बनाना है : भागवत

गुरुग्राम (हि.स.)। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि जितना ज्ञान हम कमा सकते हैं, कमाना चाहिए। सीखते रहना ही जीवन है और सीखते-सीखते बुद्ध बन जाना है। शोध के लिए उत्तम प्रकार की जानकारी होनी चाहिए और हमारे भारत में सभी तरह के उत्तम मॉडल विद्यमान हैं। डॉ. भागवत शुक्रवार को गुरुग्राम स्थित एसजीटी युनीवर्सिटी में विजन फॉर विकसित भारत के विषय पर अखिल भारतीय शोधार्थी सम्मेलन के पहले दिन प्रथम सत्र को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन को इसरो के चेयरमैन डॉ. सोमनाथ और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता डॉ. कैलाश सत्यार्थी ने भी संबोधित किया। डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि हमारे युवाओं में पुरानी पीढ़ी से अधिक क्षमता है।

चराईदेव में गिरफ्तार अल्फा-स्वा का लिंकमैन

चराईदेव (हिंस)। पुलिस ने चराइदेव में अल्फा-स्वा के एक लिंकमैन को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि गिरफ्तार लिंकमैन की पहचान चराइदेव के बरहाट चकलिया निवासी रूबुल रंजन कलिता उर्फ रंजन असम के रूप में हुई है। गिरफ्तार लिंकमैन से फिलहाल सोनारी थाना में पुलिस पूछताछ कर रही है। ज्ञात हो कि चराईदेव में अल्फा-स्वा की गतिविधियों में वृद्धि हुई है। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष स्वाधीनता दिवस के मौके पर अल्फा-स्वा द्वारा राज्य में 25 स्थानों पर बम लगाए जाने की जांच एनआईए कर रही है। अल्फा-स्वा से संबंध रखने वाले दर्जन भर से अधिक लोगों को इस दरमियान गिरफ्तार किया जा चुका है।

बॉलीवुड गायक सोनू निगम ने किए ब्रह्मा मंदिर के दर्शन पूजा सरोवर

अजमेर (हिंस)। अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर मेले में शुक्रवार को बॉलीवुड के मशहूर सिंगर सोनू निगम ने उपस्थिति दर्ज कराई। गायक सोनू निगम ने यहां पुष्कर सरोवर का पूजन किया और फिर जगत पिता ब्रह्मा के दर्शन किए। गायक सोनू निगम को पुरोहित अजय पाराशर ने पूजा अर्चना कराई और पुष्कर सरोवर की उत्पत्ति उसकी मान्यता व यहां की पौराणिक कहानी से अवगत कराया। सोनू निगम की तीर्थ राज पुष्कर में गहरी आस्था है। सोनू निगम का पुजारी परिवार ने स्वागत किया। सोनू निगम काफी देर तक पुष्कर सरोवर के घाट पर हाथ जोड़कर खड़े रहे। बाद में उन्होंने घाट पर खड़े होकर सैल्फी भी बनाई।

मणिपुरी महिला को दी गई थी थर्ड डिग्री यातना, शव परीक्षण रिपोर्ट से खुलासा

इंफाल। मणिपुर के हिंसा प्रभावित जिरीबाम जिले में सात नवंबर को मारी गई आदिवासी महिला के शव परीक्षण रिपोर्ट से पता चला है कि उसे थर्ड-डिग्री यातना का शिकार बनाया गया था और वह 99 फीसदी तक जल गई थी। महिला के शव का परीक्षण नौ नवंबर को असम के सिलचर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में किया गया। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि 31 वर्षीय आदिवासी महिला के शरीर के कई हिस्से और हाथ-पैर गायब थे और केमिकल विश्लेषण के लिए विसरा एकत्र नहीं किया जा सका, क्योंकि अधिकांश जल गए थे और पहचानने योग्य नहीं थे। इसमें यह भी कहा गया है कि मस्तिष्क के ऊतक को प्लास्टिक में लपेटा हुआ पाया गया था, जो पिघला हुआ था। तीन बच्चों की मां का शव सात नवंबर को सशस्त्र उग्रवादियों के एक समूह के हमले के बाद जैरॉन गांव में उनके घर पर पाया गया था। रिपोर्ट में कहा गया है कि थर्ड डिग्री यातना के बाद मृत्यु से पहले जलने के कारण सदमे से महिला की मौत हुई। उनके शरीर का 99 फीसदी हिस्सा जल गया था।

APOLLO HOSPITALS CHENNAI
GERIATRICS (ELDERLY CARE SPECIALIST)
Apollo HOSPITALS
Dr.Priyanka Rana Patgiri, MD
Will be available only for consultation at Guwahati
ON 23rd November'2024
Patients suffering from Polypharmacy,orthogeriatrics (fallsarthritis), sarcopenia, incontinence(fecal&urinary),dementiadelerium,balance&gait disorders,diabetes & hypertension in elderly, sleep disorders and all senior citizens to attend for thair medical complaints may register their nams in advance at:
APOLLO HOSPITALS REGIONAL OFFICE
Rajgarh Main Road, Opp-By Lane -10
Ph:8404037649,0361-3102669,0361-3102166

दिल्ली के एलजी ने घुसपैठियों के खिलाफ कड़े कद उठाने के निर्देश दिए

नई दिल्ली। झारखंड विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी अवैध बांग्लादेशी घुसपैठिए का मुद्दा उठा रही है और आरोप लगा रही है कि राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस अवैध घुसपैठियों को बढ़ावा दे रही है। अब दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने शुक्रवार को अवैध घुसपैठियों पर चिंता जताई है। उन्होंने पुलिस आयुक्त को अवैध प्रवासियों की पहचान करने का निर्देश दिया है और एक महीने तक विशेष अभियान चलाने के साथ-साथ केंद्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय कर उनके खिलाफ एक्शन लेने का निर्देश दिया है। सक्सेना ने दिल्ली के मुख्य सचिव और नागरिक एजेंसियों-एमसीडी और एनडीएमसी को भी *सतर्क* रहने का निर्देश दिया। उन्होंने अंदेशा जताया है कि अवैध प्रवासी फर्जी नागरिकता और चुनाव पहचान पत्र प्राप्त का प्रयास कर सकते हैं। बता दें कि दिल्ली में अगले साल के आरंभ में विधानसभा चुनाव हो सकते हैं। ऐसे में उपराज्यपाल का यह आदेश प्रशासनिक रूप के साथ-साथ राजनीतिक रूप से भी अहम है, क्योंकि दिल्ली में भाजपा के नेता सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी पर अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों और रोहिंग्या को संरक्षण देने का आरोप लगा रहे हैं। उपराज्यपाल कार्यालय की ओर से गुरुवार को दिल्ली के मुख्य सचिव, पुलिस और एमसीडी आयुक्तों और एनडीएमसी के अध्यक्ष को पत्र लिखा गया है। इस पत्र में उपराज्यपाल कार्यालय ने कहा कि अन्य विश्वसनीय स्रोतों और सोशल मीडिया की कुछ रिपोर्ट बताती हैं कि दिल्ली में अवैध प्रवासियों की संख्या में अचानक काफी इजाफा हुआ है। उपराज्यपाल की ओर से भेजे गये पत्र में कहा गया है कि ऐसे लोगों द्वारा फुटपाथ, सार्वजनिक सड़क और पार्कों पर अतिक्रमण की घटनाएं बढ़ी हैं। ऐसी खबरें हैं कि उनके पहचान दस्तावेज जैसे चुनाव पहचान पत्र, आधार कार्ड, आदि को फर्जी दस्तावेजों के आधार पर तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने आगे लिखा है कि इन दस्तावेजों को ये अवैध अप्रवासी नागरिकता के दस्तावेज के रूप पेश कर रहे हैं यदि अवैध अप्रवासियों को चुनाव पहचान पत्र मिल जाता है तो इससे लोकतंत्र का सबसे शक्तिशाली अधिकार मिल जाएगा और इसके बाद वो वोट दे पाएंगे। यदि किसी तरह से अवैध अप्रवासियों को वोट का अधिकार मिल जाता है। तो यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी खतरा हो सकता है। उन्होंने पत्र में मुख्य सचिव को निर्देश दिया है और कहा है कि पहचान दस्तावेजों के लिए आवेदन करने वाले लोगों के सत्यापन में अतिरिक्त सतर्कता बरतने की जरूरत है। इस बाबत वह संभागीय आयुक्त के माध्यम से जिला मजिस्ट्रेटों को निर्देश दे सकते हैं।

APOLLO HOSPITALS CHENNAI
Apollo HOSPITALS
ORTHOPAEDIC SURGEON
DR. ARUN KANNAN MS Ortho(aims),FAOA(Aus),FARS(USA) Fellowship in Hip and Knee/Tumors (Minneapolis, USA) &Hip & Knee Replacement (Richmond, USA)
Will be available only for consultation at Guwahati
ON 23rd November'2024
Specialized in Computer Assisted Orthopaedic Surgery,Hip & Knee replacement, Arthroscopic Surgery,Modern Fracture treatment,Spine Surgeries, Back Pain related problems can register their names at:
APOLLO HOSPITALS REGIONAL OFFICE
Rajgarh Main Road, Opp-By Lane -10
Ph :8404037649, 03613102669, 0361-3102166

पृष्ठ एक का शेष

बोड़ो लोगों की तरह...

लिया। इससे पहले आब्सू के अध्यक्ष दीपेन बोड़ो ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर बोड़ोलैंड क्षेत्र में रहने वाले विभिन्न समुदायों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। प्रधानमंत्री का बोड़ो पारंपरिक बागरुंबा और रवांस्वंदरी नृत्य और अन्य नृत्य समूहों द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया। उन्होंने बोड़ो जीआई आइटम, पारंपरिक पोशाक, संगीत वाद्ययंत्र और खाद्य पदार्थों के स्टॉल का भी दौरा किया। उन्होंने स्मारिका *बोड़ोलैंड जैकलोंग* का भी विमोचन किया। बोड़ोलैंड महोत्सव के संबंध में *भारतीय विरासत और परंपराओं में योगदान देने वाली समृद्ध बोड़ो संस्कृति, परंपरा और साहित्य* विषय पर एक खुली बैठक की अध्यक्षता आब्सू के अध्यक्ष दीपेन बोड़ो ने की। खुली बैठक को असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा, बीटीसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रमोद बोड़ो ने संबोधित किया। इसके बाद बोड़ो पारंपरिक फैशन शोकेस और सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन प्रसिद्ध गायिका सुलेखा बसुमतारी ने किया। प्रसिद्ध बोड़ो गायक और कलाकार-बिग्राई ब्रह्म, गौतम ब्रह्म, बुडांग बुलोब ब्रह्म, मेनका बसुमतारी, फविला जे. बोरगोयारी, मेंडेला ब्रह्म, फविलाओ बसुमतारी, फुंगजा मशहरी, सुजुमा, फुकन, गीताश्री रामचियारी, मासूम नारजारी, इला बसुमतारी, रिंगकुमानी बसुमतारी, सिंपल ब्रह्म ने अपनी प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में असम, बीटीसी, पश्चिम बंगाल, मेघालय, नेपाल और देश के अन्य हिस्सों से छह हजार से अधिक प्रतिनिधियों और मेहमानों ने हिस्सा लिया।

बीच बाजार दबंगई ...

अन्य अधिकारी को तैनात करने का निर्देश दिया गया है। यह घटना शाम करीब 6:30 बजे फैंसी बाजार में जेल रोड ट्रैफिक प्वाइंट के पास घटी, जिसका वीडियो वहां खड़े एक व्यक्ति ने अपने मोबाइल फोन में कैद कर लिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, यह टकराव तब शुरू हुआ जब डिलीवरी एजेंट ने जेल रोड के पास कथित तौर पर लाल बत्ती पार कर ली। एक पुलिस अधिकारी ने एजेंट उसका पीछा किया, उसे सड़क के किनारे घसीटा और उसके साथ हिंसक तरीके से मारपीट की। वीडियो में अधिकारी को डिलीवरी एजेंट की गर्दन पकड़ते हुए और आक्रामक तरीके से चिल्लाते हुए दिखाया गया है कि तुम्हें क्या लगता है *तुम कहां जा रहे हो?* और *मैं तुम्हें मार डालूंगा।* दर्शकों की विनती के बावजूद, अधिकारी ने हमला जारी रखा। घटना को रिकॉर्ड करने वाले एक प्रत्यक्षदर्शी ने दावा किया कि जब अधिकारी ने वीडियो बनाते हुए देखा तो उसने उन्हें धमकाया। प्रत्यक्षदर्शी ने कहा कि उसने मुझसे रिकॉर्डिंग बंद करने को कहा और दूसरों को चेतावनी दी कि वे अपने काम से काम रखें। बाद में एक पुलिस अधिकारी ने अधिकारी के कार्य को उचित ठहराते हुए कहा कि डिलीवरी एजेंट ने रुकने के निर्देशों की अनदेखी की थी और प्रतिबंधित *प्रवेश निषेध* क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास किया था।

असम : ऑनलाइन ट्रेडिंग...

41 मामलों की जांच की जा रही है। इन मामलों की जांच पहले असम पुलिस द्वारा की जा रही थी, लेकिन बाद में असम पुलिस से इन मामलों को सीबीआई को सौंप दिया गया। सीबीआई ने बीते हफ्ते ही अपनी जांच शुरू की है। सीबीआई ने एक बयान में बताया है कि जांच की जिम्मेदारी लेने के बाद से एजेंसी ने पांच राज्यों के 92 ठिकानों पर तलाशी अभियान चलाया। इस दौरान 24 मोबाइल फोन, 18 कंप्यूटर, सात हार्ड डिस्क और 11 लैपटॉप जब्त किए गए हैं। एजेंसी ने जब्त किए गए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से डाटा भी सफलतापूर्वक हासिल कर लिया है। पूर्व में इस मामले की जांच करते हुए असम पुलिस ने इस मामले से जुड़े अन्य मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था, जबकि पॉल अभी तक फरार था। असम में ऑनलाइन ट्रेडिंग घोटाले का अगस्त के अंतिम सप्ताह में उस वक्त खुलासा हुआ था, जब 29 वर्षीय दीपांकर बर्मन की कंपनी में भारी मात्रा में धन लगाने वाले निवेशकों का पैसा वापस नहीं मिला। इस पर निवेशकों ने पुलिस से इसकी शिकायत की। पुलिस जांच के दौरान पता चला कि यह घोटाला दो हजार करोड़ रुपए से भी ज्यादा का है। इस मामले में असम पुलिस ने बर्मन, बिशाल फुकन, अभिनेत्री सुमी बोरा और उनके पति समेत 18 लोगों को गिरफ्तार किया है।

पूर्वोत्तर को देश...

बजट आवंटित किया गया है। बजट के आवंटन में चार गुणा बढ़ोतरी की गई है। सिंधिया ने कहा कि अगर एक-एक क्षेत्र को अलग से देखें तो सड़क के क्षेत्र में भी पूर्वोत्तर में व्यापक पैमाने पर कार्य हुए हैं। जहां 65 वर्षों में 10,000 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग बनाए गए थे, वहीं 10 वर्षों के प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में 5,500 किलोमीटर नए राष्ट्रीय राजमार्ग पूर्वोत्तर क्षेत्र में बनाए गए हैं। केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने कहा कि रेल के क्षेत्र में भी ऐसी स्थिति रही है। उन्होंने कहा कि पहले पूर्वोत्तर के सिर्फ एक राज्य में लोगों को रेल की सुविधा मिल रही थी, आज तीन राज्यों में रेलवे की सुविधा जनता को मिल रही है। सरकार का लक्ष्य है कि आने वाले दो-तीन वर्षों में पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में रेल की सुविधा तैयार हो जाएगी। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों में रेलवे की 30 अलग-अलग परियोजनाओं पर काम चल रहा है। इसके लिए रेलवे विभाग द्वारा 82,000 करोड़ रुपए का आबंटन किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि जहां पहले प्रत्येक माह सिर्फ 60 किलोमीटर नई रेल लाइनें बिछाई जा रही थी, वहीं आज 190 किलोमीटर नई रेल लाइन प्रति माह बिछाई जा रही हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि नागरिक विमानन के क्षेत्र में भी पूर्वोत्तर में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। जहां 65 वर्षों में सिर्फ नौ एयरपोर्ट पूर्वोत्तर में बनाए गए थे। पूर्वोत्तर के दो राज्यों में 65 वर्षों में एयरपोर्ट ही नहीं बने थे। वहीं, आज पूर्वोत्तर में 17 एयरपोर्ट है। उन्होंने कहा कि बीते 10 वर्ष के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में हर क्षेत्र में इसी प्रकार तेजी से कार्य हुए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश की माणिक साहा सरकार में त्रिपुरा का विकास तेजी से हुआ है। यही वजह है कि आज यहां का सकल घरेलू उत्पाद 90,000 करोड़ रुपए तक पहुंच चुका है। त्रिपुरा में साक्षरता की दर 97 फीसदी तक पहुंच चुकी है। पर कैपिटा जीडीपी 9 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ रही है। प्रति व्यक्ति आय 1,60,000 रुपए तक पहुंच गई है। इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने त्रिपुरा के साथ-साथ पूरे पूर्वोत्तर राज्यों में चल रहे विकास कार्यों तथा संपूर्ण हुए कार्यों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में और भी अनेक परियोजनाएं शुरू की जा रही हैं जिससे पूर्वोत्तर भारत के विकास का इंजन बनेगा। केंद्रीय मंत्री सिंधिया के तीन दिवसीय पूर्वोत्तर दौरे का आज तीसरा और अंतिम दिन है। केंद्रीय मंत्री सिंधिया बुधवार की देर शाम इटानगर पहुंचे थे। इटानगर पहुंचने पर उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री तथा राज्य के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठकें कीं। इस यात्रा के दौरान उन्होंने अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम के साथ ही नगालैंड में भी मुख्यमंत्री के साथ बैठक की। आज वे त्रिपुरा का दौरा कर रहे हैं। उन्होंने त्रिपुरा के मुख्यमंत्री प्रो. माणिक साहा के साथ भी समीक्षा बैठक की। सिंधिया अगरतला में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में भी शामिल हुए। सिंधिया अपनी इस यात्रा के दौरान आज मेघालय भी जाएंगे, जहां वे री-भोई जिले में चेरी ब्लॉसम महोत्सव-2024 में भाग लेंगे।

बांग्लादेश में बढ़ते ...

ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। शेख हसीना को सत्ता से बेदखल करने और राजनीतिक व्यवस्था में सुधार के प्रयासों से बहुत उम्मीद है। लोगों को उम्मीद है कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया और मजबूत होगी। कर्टिस ने एक साक्षात्कार में कहा कि लेकिन बहुत चिंता भी है। कुछ इस्लामी चरमपंथियों को जेलों से रिहा कर दिया गया है। अल्पसंख्यकों, हिंदुओं, ईसाइयों पर कुछ हमले हुए हैं। कर्टिस ने कहा कि हमने बांग्लादेश में आतंकवाद का इतिहास देखा है। 2016 में होली (आर्टिसन) बेकरी पर हमला हुआ था। यह बहुत गंभीर घटना थी। बांग्लादेश में आईएसआईएस (इस्लामिक स्टेट) के कुछ आतंकवादी मौजूद थे। शेख हसीना ने बांग्लादेश में चरमपंथी समस्या को नियंत्रित करने में अच्छा काम किया। उन्होंने कहा कि इस बात को लेकर चिंता है कि ये लोग राजनीतिक परिदृश्य में वापस आ जाएंगे, जो बांग्लादेश के लिए ठीक नहीं होगा। उन्होंने कहा कि यह पूरे क्षेत्र, अमेरिका या किसी के लिए भी मददगार नहीं होगा। हम बांग्लादेश में एक नाजुक दौर से गुज़र रहे हैं। इसलिए भले ही यह ट्रंप की पहली प्राथमिकता न हो, लेकिन मुझे लगता है कि उनकी टीम, उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा टीम को इस बात पर ध्यान देना होगा कि (वहां) क्या हो रहा है। कर्टिस ने यह भी कहा कि आने वाले प्रशासन को भारत के साथ मिलकर काम करना चाहिए क्योंकि भारत को भी बांग्लादेश के भविष्य को लेकर चिंता है और पड़ोसी होने के नाते उस पर सबसे अधिक असर पड़ता है।

जिस दिन जातीय ...

को झारखंड से लेकर दिल्ली तक तोड़कर दिखाएंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि झारखंड में भाजपा ने पिछड़ों का रिजर्वेशन 27 से घटाकर 14 प्रतिशत कर दिया। इस बार हमारी सरकार बनते ही एसटी का रिजर्वेशन 26 से 28 प्रतिशत, एससी 10 से 12 प्रतिशत और पिछड़ों का आरक्षण 14 से बढ़ाकर 27 प्रतिशत कर दिया जाएगा। कांग्रेस नेता ने कहा कि देश की शीर्ष ब्यूरोक्रेसी में आदिवासियों और पिछड़ों की भागीदारी न के बराबर हैं। उन्होंने कहा कि 90 अफसर आपकी सारी की सारी जीएसटी बांटते हैं, वो तय करते हैं कि पैसा कैसे बांटा जाएगा। इन 90 लोगों में एक आदिवासी है।

झामुमो आदिवासियों की...

के जरमुंडी में चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। घुसपैठियों ने आदिवासियों की जमीनों पर कब्जा कर लिया, लेकिन सरकार ने उनका साथ नहीं दिया। प्रदेश में एक आदिवासी मुख्यमंत्री होने के बाद भी आदिवासियों को उनका सम्मान और उनका हक नहीं मिल रहा है। जामताड़ा और साहिबगंज में शुक्रवार को स्कूल बंद कर दिए जाते हैं। उन्होने हेमंत सरकार पर सवाल उठाते हुए कहा कि अगर शुक्रवार को स्कूल बंद किए जाते हैं तो मंगलवार को भी बद होने चाहिए। आज झारखंड में रामनवमी का जुलूस और दुर्गा पूजन नहीं करने दिया जाता। हिंदुओं को एक होना होगा, हमारे वोट बंट जाते हैं लेकिन घुसपैठियों के वोट एक ही पार्टी को जाते हैं। इसलिए हमको एक रहना होगा, बंटने से बचना होगा- एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे। राहुल गांधी, आलमगीर आलम और इरफान अंसारी जैसे लोग हर चुनाव में हमारे समाज को तोड़ने के लिए कोशिश करते हैं। ये लोग चुनाव के समय हमारे समाज को एससी-एसटी-ओबीसी में बांटने का काम करते हैं। शर्मा ने कहा कि हेमंत सरकार के संरक्षण में घुपैठिए हमारी रोटी-बेटी- माटी को लूटने का काम कर रहे हैं लेकिन भाजपा सरकार बनते ही घुसपैठिओं के बच्चों को आदिवासी प्रमाण पत्र नहीं मिलने देंगे। साथ ही उनको मुखिया का चुनाव भी नहीं लड़ने दिया जाएगा। इसके अलावा आदिवासियों से घुसपैठियों द्वारा हड़पी गई जमीनों को वापस दिलाया जाएगा। शर्मा ने कहा कि झारखंड की रोटी-बेटी-माटी की सुरक्षा भाजपा नीत एनडीए सरकार करेगी।

स्पेन में नर्सिंग होम...

पहुंचकर आग बुझाई। यह नर्सिंग होम अल्फोन्सो बेस लाबुएर्टा स्ट्रीट पर है। हादसे के समय 69 लोग नर्सिंग होम में थे। नगर पालिका के मेयर वोल्गा रोड्रिग्ज ने पुष्टि की कि आग एक गद्दे में लगने के बाद फैल गई। आरागॉन में केंद्र सरकार के प्रतिनिधि फर्नांडो बेल्ट्रान ने प्रभावित परिवारों से मिलने नर्सिंग होम पहुंचे। आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए न्यायिक जांच शुरू कर दी गई है। बेलट्रान ने कहा कि यह हृदयविदारक घटना है। आग नर्सिंग होम के एक कमरे में लगी। इसमें नर्सिंग होम का कोई भी कर्मचारी प्रभावित नहीं हुआ। आरागॉन के आंतरिक मंत्री रॉबर्टो बरमूडेज डी कास्त्रो ने नर्सिंग होम का दौरा किया और प्रभावित परिवारों से मिलकर संवेदना व्यक्त की।

ईसी ने की गृह ...

शाह ने कहा कि आज महाराष्ट्र के हिंगोली विधानसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार के दौरान चुनाव आयोग के अधिकारियों के द्वारा मेरे हेलीकॉप्टर की जांच की गई। भाजपा निष्पक्ष चुनाव और स्वस्थ चुनाव प्रणाली में विश्वास रखती है और माननीय चुनाव आयोग द्वारा बनाए गए सभी नियमों का पालन करती है। उन्होंने कहा कि एक स्वस्थ चुनाव प्रणाली में हम सभी को अपना योगदान देना चाहिए और भारत को विश्व का सबसे मजबूत लोकतंत्र बनाए रखने में अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। शाह की ओर से साझा किए गए वीडियो में देखा जा सकता है कि चुनाव अधिकारी उनके हेलीकॉप्टर की जांच कर रहे हैं। इस दौरान एक अधिकारी को बैग और अन्य सामान की जांच करते भी देखा गया। चुनाव आयोग के अधिकारियों द्वारा नेताओं के सामान की जांच करने की घटना उस समय चुनावी मुद्दे में तब्दील हो गई जब शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे के बैग की जांच की गई थी। ज्ञात हो कि कुछ दिन पहले लातूर और यवतमाल जिलों में पहुंचने के बाद चुनाव आयोग के अधिकारियों ने महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के एक *बैग* की जांच की थी।

ननकाना साहिब जा ...

साहिब रोड पर तीन लुटेरों ने उनका रास्ता रोक लिया। पुलिस ने बताया कि बंदूकधारियों ने तीनों से साढ़े चार लाख रुपए और चालक से 10,000 रुपए छीन लिए। कुमार के विरोध करने पर लुटेरों ने उन पर गोलियां चला दीं और भाग गए। बुधवार रात डकैती और गोलीबारी की घटना के बाद कुमार को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया, जहां गुरुवार को उनकी मौत हो गई। कुमार के रिश्तेदार की शिकायत पर अज्ञात लोगों के खिलाफ पाकिस्तान दंड संहिता की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। शुक्रवार को गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व का मुख्य समारोह गुरुद्वारा जन्मस्थान ननकाना साहिब में आयोजित किया गया। इसमें भारत से 2,500 से अधिक सिखों और बड़ी संख्या में स्थानीय एवं विदेशी श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया।

आईसीसी ने पीओके ...

कश्मीर (पीओके) में आते हैं। यह निर्णय पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) द्वारा इन शहरों को दौरे के कार्यक्रम में शामिल करने की घोषणा के तुरंत बाद आया, जिस पर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने तत्काल आपत्ति जताई थी। उल्लेखनीय है कि पीसीबी ने 16 से 24 नवंबर तक चैंपियंस ट्रॉफी के राष्ट्रव्यापी ट्रॉफी दौरे की घोषणा की थी। आठ टीमों का यह टूर्नामेंट फरवरी-मार्च 2025 में पाकिस्तान में आयोजित किया जाना है और क्रिकेट के इस महाकुंभ की तैयारी के लिए पीसीबी ने ट्रॉफी दौरे का आयोजन किया था। हालांकि, इंडिया टुडे को पता चला है कि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) की विवादित भूमि के अंतर्गत आने वाले शहरों में ट्रॉफी दौरे को रद्द कर दिया गया है। इस बीच, चैंपियंस ट्रॉफी 2025 विवादों में घिर गई है, क्योंकि भारत ने इस क्रिकेट इवेंट के लिए पाकिस्तान जाने से मना कर दिया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने आईसीसी को पत्र लिखकर टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान जाने से भारत के इनकार पर स्पष्टीकरण मांगा है। आईसीसी को लिखे अपने पत्र में पीसीबी ने भारत के रुख के बारे में आधिकारिक स्पष्टीकरण मांगा है। पाकिस्तान की ओर से भेजे गए पत्र में इवेंट के प्रारूप या संभावित हाइब्रिड मॉडल पर चर्चा नहीं की गई है। पीसीबी ने गुरुवार शाम को एक्स पर लिखा कि तैयार हो जाओ, पाकिस्तान। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 ट्रॉफी टूर 16 नवंबर को इस्लामाबाद में शुरू होगा, जिसमें स्कार्दू, मरी, हुंजा और मुजफ्फराबाद जैसे दर्शनीय पर्यटन स्थलों का भी दौरा किया जाएगा।

कामरूप में मनाया गया जनजातीय गौरव दिवस

रंगिया (विभास)। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आज देशभर के साथ साथ कामरूप जिले में भी जनजातीय गौरव दिवस मनाया गया। जिला विकास आयुक्त सुशांत कुमार दत्ता ने जन जातीय लोक नायक भगवान बिरसा मुंडा को श्रद्धांजलि अर्पित की और आदिवासी लोगों के सामाजिक-आर्थिक विकास में उनके योगदान के बारे में बताया। उन्होंने आदिवासी समुदाय के व्यापक विकास के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई धरती आबा आदिवासी ग्राम विकास मिशन के हिस्से के रूप में आज से 26 नवंबर तक कामरूप जिले में किए जाने वाले कार्यक्रमों का भी विवरण दिया। सरकारी विभाग आज से 26 नवंबर तक कामरूप जिले के 128 आदिवासी गांवों में शिविर आयोजित करेंगे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पात्र लोगों को आधार पंजीकरण, आयुष्मान भारत कार्ड, किसान सम्मान योजना, पीएम-जन धन योजना, जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र और राशन कार्ड मिले और यह सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएं कि वे इस लाभ से वंचित न रहें। जिला विकास आयुक्त सुशांत कुमार दत्ता ने कहा कि इन शिविरो के जरिए कृषि, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, खाद्य, सार्वजनिक वितरण और उपभोक्ता मामले, पंचायत और ग्रामीण विकास सहित अन्य संबंधित विभागों द्वारा कार्यान्वित लोक कल्याणकारी योजनाओं विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति के लिए जारी योजनाओं से इन गांवों के आदिवासी लोगों को लाभ मिल सके इसके लिए लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने और सभी पात्र व्यक्तियों या परिवारों को शामिल करने की परिकल्पना की गई है। कार्यक्रम में सहायक आयुक्त देवाशीष बोरा ने स्वागत भाषण दिया। जिले के विभिन्न स्थानों से करीब सौ से भी अधिक जनजातीय लोगों के अलावा इस कार्यक्रम में कृषि, खाद्य, सार्वजनिक वितरण और उपभोक्ता मामले, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, पंचायत और ग्रामीण विकास विभागों के अधिकारियों ने भी भाग लिया। बैठक में जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर बिहार के जमुई में आयोजित केंद्रीय समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्र के नाम संबोधन का सीधा प्रसारण भी किया गया।

असम में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सीप्लेन सेवा का हुआ परीक्षण

मंत्री जयंत मल्लबरुवा बरझाड़ से पांडुघाट तक किया सफर

गुवाहाटी (हिंस)। असम के पर्यटन क्षेत्रों को गति देने के लिए राज्य सरकार लगातार कदम उठा रही है। इस कड़ी में राज्य के दूर-दराज के पर्यटन क्षेत्रों तक पहुंच आसान बनाने के लिए सीप्लेन की योजना शुरू करने की तैयारी की गयी है। शुक्रवार को गुवाहाटी के बरझाड़ हवाई अड्डे से सीप्लेन का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। राज्य के पर्यटन मंत्री जयंत मल्लबरुवा ने बरझाड़ से सीप्लेन में सवार होकर गुवाहाटी के पांडुघाट में उतरकर सीप्लेन का सफल परीक्षण किया। सीप्लेन के सफल परीक्षण के अंत में उन्होंने इस संबंध में अपनी भावनाएं व्यक्त की और कहा कि आज का दिन असम के लिए खास है। यह पहली बार है जब असम में सीप्लेन का परिचालन किया गया है। यह हमारे लिए बहुत खुशी का दिन है। बरझाड़ हवाई अड्डे से आज परीक्षण के दौरान हमने सीप्लेन में सवार होकर पांडुघाट तक का सफर किया। उन्होंने कहा कि हम यह देखने का प्रयास करेंगे कि इस सीप्लेन को कितनी जल्दी परिचालन चरण में लाया जा सकता है। मल्लबरुवा ने कहा कि आपको जानकर खुशी होगी कि सीप्लेन भारत में पहली बार नदी में उतरा है। इससे पहले यह समुद्र में उतर चुका है या अन्य स्थानों पर उतर चुका है, लेकिन आज सीप्लेन पहली बार नदी में उतरा है इसलिए यह हमारे लिए खुशी की बात है। यह सीप्लेन असम के कनेक्टिविटी और पर्यटन क्षेत्र के लिए एक बड़ा जुड़ाव है। अगर हम इस सीप्लेन को असम के काजीरंगा, उमरांग्सू, माजुली, डिब्रूगढ़ आदि तक चला सकते हैं तो असम की पूरी परिवहन प्रणाली या पर्यटन क्षेत्र एक लंबा रास्ता तय करेगा। मंत्री ने इस सीप्लेन के सफल परीक्षण पर अपार प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने इसके लिए परिवहन विभाग और पर्यटन विभाग को धन्यवाद दिया। मंत्री ने कहा कि अपने जीवन में पहली बार वह सीप्लेन पर सवार होकर खुश हैं। असम में सीप्लेन का सफल परीक्षण प्रदेश के भविष्य के पर्यटन उद्योग और असम की कनेक्टिविटी प्रणाली के लिए एक बहुत ही नया और दूरगामी विस्तार है। उन्होंने बताया कि इस सीप्लेन के माध्यम से किसी भी जल निकाय पर लैंडिंग की जा सकती है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि राज्य में सीप्लेन के शामिल होने से असम के पर्यटन क्षेत्र में आमूलचूल बदलाव आएगा। इसके बाद काजीरंगा, माजुली या उमरांग्सू में भी इसका परीक्षण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सीप्लेन को ऑपरेशनल होने में छह महीने या एक साल का समय लगेगा।

असम राजभवन ने मनाया झारखंड का स्थापना दिवस

आदिवासी नेता बिरसा मुंडा को श्रद्धांजलि दी

गुवाहाटी (हिंस)। *एक भारत श्रेष्ठ भारत* पहल के तहत, राजभवन असम ने आज यहां राजभवन के सम्मेलन कक्ष में झारखंड का स्थापना दिवस मनाया। इस समारोह का उद्देश्य देशभर में एकता और विविधता को बढ़ावा देना है। इस अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस भी मनाया गया। राजभवन के अधिकारियों और कर्मचारियों ने झारखंड के महान आदिवासी नेता स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। राज्यपाल सचिवालय की ओएसडी कबिता डेका ने इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यह समारोह भारत में एकता और विविधता के महत्व को उजागर करता है। देश के विकास और वृद्धि में विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के योगदान को स्वीकार करता है। उन्होंने कहा कि इस दिन को झारखंड स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, अनूठी परंपराओं और भारत के विकास और वृद्धि में झारखंड के लोगों के योगदान का जश्न मनाता है। इस अवसर पर झारखंड से आए प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

एक महिला समेत चार ड्रग्स तस्कर गिरफ्तार

मोरीगांव (हिंस)। मोरीगांव जिले के मैराबाड़ी इलाके में पुलिस की टीम ने ड्रग्स समेत चार तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। जिसमें एक महिला तस्कर शामिल है। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि मैराबाड़ी के तातिकटो नघरिया बस्ती इलाके में चलाए गए अभियान के दौरान 10 प्लास्टिक के छोटे-छोटे कंटेनर में ड्रग्स, नगद 50 हजार रुपए समेत चार ड्रग्स तस्कर को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार तस्कर की पहचान सैफुल इस्लाम, शरीफुल इस्लाम सद्दाम हुसैन और मरजीना खातून के रूप में की गई है। गिरफ्तार सभी आरोपित पुलिस की आंख में धूल झोंककर काफी लंबे समय से नगांव और मोरीगांव जिले में ड्रग्स का कारोबार चलाते आ रहे थे। घटना के संबंध में पुलिस एक प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तार चारों तस्करों से सघन पूछताछ कर रही है।

श्री हनुमान मंदिर नगांव में कार्तिक पूर्णिमा पर विशाल भजन संध्या कार्यक्रम संपन्न

नगांव (निसं)। कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के उपलक्ष में हैबरगांव धिंग रोड स्थित श्री हनुमान मंदिर प्रांगण में पूर्णिमा महोत्सव की सभी तैयारी के बाद श्री हनुमान जन्मोत्सव समिति के तत्वधान में एक दिवसीय कार्यक्रम में भजनो का एक विशाल कार्यक्रम भी मंदिर के सम्मुख सेठ मेघराज अग्रवाल स्मृति भवन में आयोजित किया गया है। भजन कार्यक्रम हेतू फरीदाबाद से अंकित शर्मा को आमंत्रित किया गया है। जो बाबा के महोत्सव में सुमधुर भजनो की पेशकश करेंगे। कल प्रात: 5.15 श्री हनुमान मंदिर के कपाट बाबा के दर्शन के लिए खोल दिए जाएगे। पंडित अनिल शर्मा द्वारा पूजा अर्चना के बाद प्रात: आरती संपन्न होगी और फिर भक्तो द्वारा दरबार में हाजरी का क्रम आरंभ होगा। बाबा की दिव्य ज्योत प्रज्वलित की जाएगी। श्री हनुमान बाबा का आलौकिक श्रृंगार किया जाएगा। मंदिर परिसर को भी रंग-बिरंगी लाइटो से सजाया गया है। रात्रि भंडारे की व्यवस्था भवन में की गई है। मंदिर में सवामणी को भोग भी बाबा को अर्पित कर भक्तो में वितरित किया जाएगा। श्री हनुमान जन्मोत्सव समिति के अध्यक्ष प्रह्लाद राय तोदी ने सभी भक्तो से अनुरोध किया है कि विशाल भजन कार्यक्रम में उपस्थित होकर बाबा के कृपा पात्र बने।

श्री सत्यनारायण ठाकुरबाड़ी मंदिर में महिलाओं ने धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किया

नगांव (निसं)। कार्तिक द्वादशी बुधवार को हैबरगांव स्थित श्रीसत्यनारायण ठाकुरबाड़ी में दीप दान उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर इस्कान गुवाहाटी से पधारी निकिता अजितसरीया ने राधा-कृष्ण नाम की महिमा बताते हुए कहा कि भागवद नाम कीर्तन ही जीवन को भवसागर से पार करा सकता है। उन्होंने कहा कि जब तक मनुष्य के अंदर भगवान के प्रति समर्पण की भावना नहीं होगी, तब तक भक्ति नहीं हो सकती है। क्योंकि भक्ति भाव भगवान के प्रति स्वयं को समर्पण करने से ही होगा। उन्होंने कहा कि अहंकार के वश में होकर हम कभी भी भक्ति की राह में सफल नहीं हो सकते हैं। क्योंकि मां जशोदा के अंदर मैं रुपी अहंकार होने से भगवान कृष्ण को खुटें में नहीं बांध सकी। उन्होंने दीप दान, दामोदर लीला और कार्तिक मास के महत्व पर भी विस्तृत से प्रकाश डाला। उल्लेखनीय कि बुधवार सायं को मंदिर परिसर में 300 दीप प्रज्ज्वलित किए गए, जिससे मंदिर परिसर दीपों से जगमगाहट उठा। मानो दीप दिपावली मनाई गई हो। यहा बताते चले की पौराणिक कथाओ के अनुसार भगवान शिव ने कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को त्रिपुराशुर नामक राक्षस का वध किया था। देवताओं ने खुश होकर दीप दिपावली मनाई। तभी से दीप दिपावली मनाई जाती है। उक्त कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने भक्ति भाव से भजन कीर्तन भी किया। भक्तिमय कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री सत्यनारायण ठाकुर बाडी मंदिर संचालन समिति के संयोजक बिनोद खेतावत और कार्तिक मास महिला ग्रुप की नीतू पोद्दार, ममता शर्मा, आभा शर्मा, शारदा पारीक, शिल्पा भरतीया, भारती जाजोदिया, प्रेमा पोद्दार, सरला खेरिया, नेहा खेतान, सुनीता अग्रवाल, मंजु शर्मा, प्रमिलाअग्रवाला, गुवाहाटी से आई मिकू पोद्दार का सराहनीय सहयोग रहा ।

मायुमं, कामाख्या शाखा ने बच्चों के संग मनाया बाल दिवस

गुवाहाटी (विभास)। मायुमं कामाख्या शाखा ने अध्यक्ष स्नेहल बिदासरिया की अध्यक्षता में स्वर्गीय नेमीचंद कौशल्या देवी अग्रवाला फाउंडेशन के सौजन्य से उनके पुत्र राकेश अग्रवाला साथ संयुक्त रूप से मिलकर फैंसी बाजार स्थित बोटेनिकल गार्डन में जरुरतमंद बच्चो व शाखा सदस्योंओ के बच्चो के संग बाल दिवस मनाया। कार्यक्रम में बच्चों को झूले, रेल गाड़ी आदि की सवारी करवाई गई। कई गेम भी बच्चों के लिए आयोजित किए गए। बच्चों के बीच चॉकलेटस्, गिफ्ट, कलर, जूस बिस्कुट आदि वितरीत किए गए। इस अवसर पर शाखा अध्यक्ष स्नेह बीदासरिया ने कहा कि हम बाल दिवस पर इन नन्हे नन्हे जरूरतमंद बच्चों के चेहरे पे खुशी देखना चाहते चाहते हैं। हम बाल दिवस के अलावा भी अन्य दिनों में बच्चों के कार्यक्रम करने के लिए प्रस्तुत हैं। इस कार्यक्रम की संयोजिका पूर्व अध्यक्ष व प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य पिंकी बैगानी और नम्रता सुराणा थी ।जनसम्पर्क सचिव अरुणा अग्रवाल ने बताया की कार्यक्रम में सचिव अनुसूया शर्मा, कोषाध्यक्ष खुसबू मोर, उपाध्यक्ष रजनी पगारिया, सह सचिव मीना जैन, नमिता दुधेरिया, अनिशा अग्रवाल, जया पारीक, कृतिका अग्रवाल, निष्ठा पौद्दार, सीमा शर्मा, ममता सेठी, किरण अग्रवाल, मेनका जैन, दीक्षा शर्मा, प्रियंका जैन, चांदनी बैद, नेहा जैन, वर्षा जैन आदि सदरस्याएं उपस्थित थी।

रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार एएसआई खुर्शीद अली

हैलाकांदी (हिंस)। पुलिस सब इंस्पेक्टर खुर्शीद अली को भ्रष्टाचार निरोधक दस्ते ने रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों आज गिरफ्तार कर लिया। निदेशालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक निदेशालय, असम को एक शिकायत प्राप्त हुई थी। जिसमें आरोप लगाया गया था कि अब्दुल्लापुर गश्ती चौकी, पीएस लाला, जिला हैलाकांदी के सहायक उपनिरीक्षक खुर्शीद अली ने शिकायतकर्ता से आपराधिक मामले में राहत देने के एवज में पांच हजार रुपए रिश्वत की मांग की थी। रिश्वत देने के लिए तैयार न होने पर, शिकायतकर्ता ने उपर्युक्त लोक सेवक के खिलाफ आवश्यक कानूनी कार्रवाई करने के लिए इस निदेशालय से संपर्क किया। तदनुसार, सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक निदेशालय की एक टीम द्वारा अब्दुल्लापुर गश्ती चौकी के पास शुक्रवार को जाल बिछाया गया। एएसआई खुर्शीद अली को शिकायतकर्ता से मांगी गई पांच हजार सात सौ रुपए की रिश्वत लेते ही रंगे हाथों पकड़ लिया गया। उसके कब्जे से रिश्वत की रकम बरामद कर ली गई है और स्वतंत्र गवाहों की मौजूदगी में जब्त कर ली गई है। आरोपित लोक सेवक के खिलाफ पर्याप्त सबूत मिलने पर उसे सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक निदेशालय की टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। इस संबंध में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 (2018 में संशोधित) की धारा 7(ए) के तहत एसीबी पुलिस थाने में 15/11/2024 को एसीबी पीएस केस संख्या 81/2024 के तहत मामला दर्ज किया गया। आवश्यक कानूनी अनुवर्ती कार्रवाई चल रही है।

कृष्णचंद्र गांधी फाउंडेशन का जनजाति गौरव सम्मान समारोह आयोजित

गुवाहाटी। पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति की इकाई कृष्णचंद्र गांधी फाउंडेशन द्वारा बिरसा मुंडा जयंती को जनजाति गौरव दिवस के रूप में आयोजित करते हुए जनजाति गौरव सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध कलाकार बाबा सत्यनारायण मौर्य व विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री अवनीश भटनागर की उपस्थिति में अरूणाचल प्रदेश के अबोतानि विद्या निकेतन पाचिन नाहरलगुन की वरिष्ठ आचार्या यान्या कार्लो व असम के कार्बी आंग्लाग में एकल विद्यालयों के कार्य हेतु समर्पित कांति बोड़ो को जनजाति गौरव दिवस सम्मान प्रदान किया गया। फाउंडेशन के सचिव समरीन डेका ने जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि संस्था द्वारा अरूणाचल, मेघालय, असम सहित अन्य राज्यों के विद्यालयों को इस वर्ष संगीत व घोष के वाद्य यंत्र प्रदान किए गए साथ ही मणिपुर में शिक्षा से वंचित छात्रों हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की। इस अवसर पर फाउंडेशन के अध्यक्ष दीप ज्योति राजखोवा भी उपस्थित रहे। सम्मान स्वरूप दोनों को 25 हजार की प्रथक प्रथक राशि सहित अंगवस्त्र प्रदान किया गया। सचिव समरीन डेका ने घोषणा किया कि अगले वर्ष से फाउंडेशन द्वारा 5लोगों को इस प्रकार से जनजाति गौरव दिवस के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा। अखिल भारतीय मंत्री ब्रह्मा राव ने कहा दोनों कार्यकर्ता मौन तपस्वी की तरह कार्यरत हैं।

असम अल्पसंख्यकभाषाई उन्नयन बोर्ड ने पूप्रामायुमं को प्रदान की दो एंबुलेंस

होजाई (हिंस)। असम भाषिक संख्या लघु उन्नयन बोर्ड ने पूर्वोत्तर प्रदेशीय मायुमं को दो एंबुलेंस प्रदान की। असम भाषिक संख्या लघु उन्नयन बोर्ड के अध्यक्ष शिलादित्य देव ने उक्त एंबुलेंस की चाबी गुवाहाटी स्थित नेहरू स्टेडियम में बृहस्पतिवार को आयोजित एंबुलेंस वितरण कार्यक्रम में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मायुमं के प्रांतीय अध्यक्ष पंकज जलान को सौंपी। गौरतलाब है कि, मायुमं की होजाई शाखा व मानकचार शाखा को एक-एक एंबुलेंस स्वास्थ्य सेवा को आगे बढ़ाने हेतु प्रदान की गई है। इस उपलक्ष पर हमारे संवाददाता से बात करते हुए असम भाषिक संख्या लघु उन्नयन बोर्ड के अध्यक्ष शिलादित्य देव ने कहा असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व में असम निरंतर प्रगति की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने असम भाषिक संख्या लघु उन्नयन द्वारा किए जा रहे विकास मूलक कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। वही एंबुलेंस वितरण समारोह के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आज हमने चार एंबुलेंस प्रदान की है जिसमें से दो एंबुलेंस पूर्वोत्तर प्रदेशीय मायुमं की दो शाखों को व एक-एक एंबुलेंस भारत सेवा आश्रम संघ होजाई व राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाऊंडेशन, होजाई को प्रदान की गई। वहीं, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मायुमं के प्रांतीय अध्यक्ष पंकज जालान ने असम सरकार के साथ-साथ असम भाषिक संख्या लघु उन्नयन बोर्ड के अध्यक्ष शिलादित्य देव को धन्यवाद दिया और कहा कि मायुमं ने सदैव समाज सेवा को प्रथम प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा कि हम प्रयास करेंगे कि हमारी और भी शाखओं के लिए हम एंबुलेंस सेवा हेतु प्रयास करेंगे। उन्होंने सभी शाखों से अनुरोध किया जिनके पास एंबुलेंस सेवा है और जिन्हें अभी प्राप्त हुई है कि वह सुचारू रूप से इस सेवा का निर्वहन करें जिसे जनमानस इसका लाभ उठा सके। इस दौरान कार्यक्रम में प्रांतीय महामंत्री सुभाष सुराना, गौतम गोयनका, मायुमं होजाई शाखा के अध्यक्ष आशीष अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष नवीन अग्रवाल, प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य निखिल कुमार मूंदड़ा, मारवाड़ी युवा मंच के मॉडल एच के उपाध्यक्ष नथमल बोथरा मानकचार शाखा से आयुषी अग्रवाला सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

धेमाजी में लगी आग में 12 दुकानें जलकर राख

धेमाजी (हिंस)। धेमाजी के माछखोवा चौराहे पर लगी भीषण आग में 12 दुकानें जलकर राख हो गई। आग से मनिहारी की दुकानों के साथ ही दवा, बर्तन आदि के दुकान जल गए। अग्निशमन के सूत्रों ने आज बताया है कि स्थानीय लोगों की मदद से आग से कुछ सामानों को बचाने में कामयाबी हासिल हुई। हालांकि, आग में करोड़ों रुपए के सामान जल गए। आग लगने के काफी देर बाद फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची। आग मनिहारी की दुकान में हुई बिजली के शॉर्ट सर्किट के कारण लगने की आशंका जताई जा रही है।

विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रधानाचार्य सम्मेलन का उद्घाटन

गुवाहाटी (हिंस/होजाई)। विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रधानाचार्य सम्मेलन का उद्घाटन गीता आश्रम, होजाई में एक भव्य समारोह के साथ हुआ। समारोह में विद्या भारती के अखिल भारतीय महासचिव अवनीश भटनागर मुख्य वक्ता थे। अखिल भारतीय मंत्री ब्रह्मा राव, क्षेत्रीय संगठन मंत्री डॉ. पवन तिवारी, क्षेत्रीय मंत्री डॉ. जगदींद्र रॉय चौधरी, शिशु शिक्षा समिति, असम के अध्यक्ष कुलेंद्र कुमार भागवती और मातृ भारती की क्षेत्रीय संयोजिका अनिमा शर्मा अतिथि के रूप में मौजूद थीं। उद्घाटन कार्यक्रम की शुरुआत देवी सरस्वती की छवि के सामने दीप प्रज्ज्वलन समारोह और होजाई के शंकरदेव शिशु निकेतन के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए आध्यात्मिक माहौल से हुई। विद्या भारती उत्तर पूर्वी क्षेत्र के सचिव डॉ. जगदींद्र रॉय चौधरी ने तीन दिवसीय सम्मेलन में पूर्वोत्तर के सभी राज्यों से आए प्रधानाचार्यों का स्वागत किया। इस अवसर पर अतिथियों ने पूर्वोत्तर राज्यों में विद्या भारती से जुड़ी प्रांतीय समितियों की ई-पत्रिकाओं का लोकार्पण किया। इस अवसर पर अवनीश भटनागर ने अपने संबोधन में कहा कि विद्या भारती की पत्रिकाएं आत्मप्रशंसा के लिए नहीं, बल्कि शिक्षा में नए प्रयोग, शिक्षा में मूल्यों का समावेश और देशभक्ति के लिए प्रकाशित होती हैं। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने शिक्षा और ज्ञान में समय के साथ आए बदलावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विभिन्न आयोगों के माध्यम से समय-समय पर शिक्षा नीति में बदलाव किए गए हैं। उन्होंने प्रधानाचार्यों से आग्रह किया कि वे समय के साथ इन्हें अपडेट करें और नए बदलावों को खुले मन से स्वीकार करें। सम्मेलन में पूर्वोत्तर के विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में सुधार, नई नीतियों के क्रियान्वयन और भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने पर चर्चा की।

जनजातीय समाज की पढ़ाई, कमाई और दवाई पर सरकार का जोर : प्रधानमंत्री

-प्रधानमंत्री ने बिहार के जमुई से किया 6,640 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास

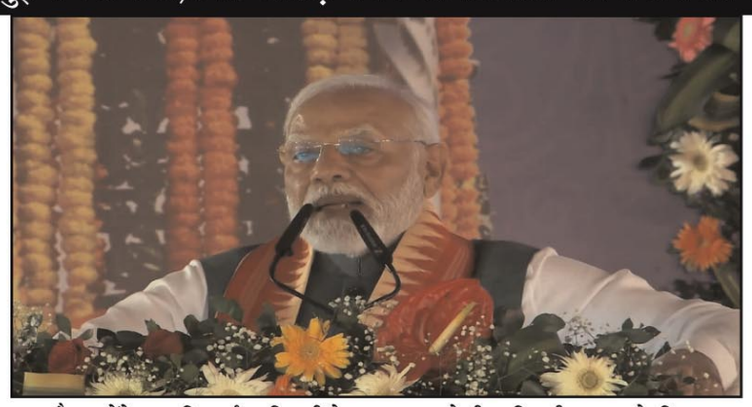

नई दिल्ली, (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को बिहार के जमुई में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती वर्ष समारोह के शुभारंभ के अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस समारोह में कहा कि जनजातीय समाज की पढ़ाई, कमाई और दवाई पर हमारी सरकार का बहुत जोर है। प्रधानमंत्री ने 6,640 करोड़ रुपये की कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया और भगवान बिरसा मुंडा के सम्मान में एक स्मारक सिक्का और डाक टिकट भी जारी किया। उन्होंने पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान (पीएम-जनमन) के तहत आदिवासी परिवारों के लिए बनाए गए 11,000 घरों के 'गृह प्रवेश' में भी वर्चुअली भाग लिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में देश के आदिवासी बहुल जिलों में बिरसा मुंडा जनजातीय गौरव उपवन बनाए जाएंगे। इसमें हजारों पेड़ लगाए जाएंगे। प्रधानमंत्री ने पूर्व की सरकारों पर आदिवासी समुदाय के विकास की अनदेखी करने और आजादी के आंदोलन में उनकी भूमिका को मिटाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों ने आदिवासी लोगों की बेहतरी के लिए कभी काम नहीं किया। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस का नाम लिये बिना कहा कि आजादी के लिए एक ही दल को श्रेय देना गलत है। उन्होंने कहा कि कई आदिवासी नेता थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मोदी ने कहा, ह्लआजादी के बाद के दशकों में आदिवासी इतिहास के अनमोल योगदान को मिटाने की कोशिशें की गईं। इसके पीछे भी स्वार्थ भरी राजनीति थी। राजनीति ये थी कि भारत की आजादी के लिए सिर्फ एक ही दल को श्रेय दिया जाए। लेकिन अगर एक ही दल, एक ही परिवार ने आजादी दिलाई है, तो भगवान बिरसा मुंडा का उलगुलान आंदोलन क्यों हुआ था, संथाल क्रांति क्या थी, कोल क्रांति क्या थी? प्रधानमंत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने ही आदिवासी कल्याण के लिए अलग मंत्रालय बनाया था। 10 साल पहले आदिवासी क्षेत्रों और आदिवासी परिवारों के विकास के लिए बजट 25,000 करोड़ रुपये से भी कम था। हमारी सरकार ने इसे 5 गुना बढ़ाकर 1.25 लाख करोड़ रुपये कर दिया है। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले ही हमने देश के 60,000 से ज्यादा आदिवासी गांवों के विकास के लिए एक विशेष योजना धरती आबा, जनजातीय ग्राम, उत्कर्ष अभियान शुरू की है। इसके तहत आदिवासी गांवों में करीब 80,000 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। इसका उद्देश्य आदिवासी समाज को जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ ही युवाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर पैदा करना है। मोदी ने कहा कि आदिवासी समाज ने राजकुमार राम को भगवान राम बनाया। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज ने भारत की संस्कृति और आजादी की रक्षा के लिए सैकड़ों वर्षों की लड़ाई को नेतृत्व दिया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने आदिवासी विरासत को सहेजने के लिए भी अनेक कदम उठाए हैं। आदिवासी कला-संस्कृति के लिए समर्पित अनेक लोगों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। हमने रांची में भगवान बिरसा मुंडा के नाम पर विशाल संग्रहालय की शुरूआत की। प्रधानमंत्री ने कहा कि आदिवासी समाज का भारत की पुरातन चिकित्सा पद्धति में भी बहुत बड़ा योगदान है। इस धरोहर को भी सुरक्षित किया जा रहा है और भावी पीढ़ी के लिए नए आयाम भी जोड़े जा रहे हैं। आदिवासी समाज के लिए सिकल सेल एनीमिया की बीमारी एक बहुत बड़ी चुनौती रही है। हमारी सरकार ने इससे निपटने के लिए राष्ट्रीय अभियान चलाया है, जिसको शुरू हुए एक साल हो चुका है। इस दौरान करीब 4.5 करोड़ साथियों की स्क्रीनिंग हुई है। आदिवासी परिवारों को अन्य बीमारियों की जांच के लिए ज्यादा दूर न जाना पड़े, इसके लिए बड़ी संख्या में आयुष्मान आरोग्य मंदिर बनाए जा रहे हैं।

अमित शाह ने दिल्ली में भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा का अनावरण किया

नई दिल्ली, (हि.स.)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को दिल्ली में सराय काले खां के पास बांसेरा पार्क में भगवान बिरसा मुंडा की 20 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया। सराय काले खां आईएसबीटी बस स्टैंड के बाहर बड़े चौक को अब भगवान बिरसा मुंडा के नाम से जाना जाएगा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस मौके पर कहा, आज भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती है और इस अवसर पर मैं भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा स्थापित करने के लिए दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना को बधाई देना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2021 में ही आज के दिन को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की थी। बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर यह पूरा वर्ष 'आदिवासी गौरव दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आजादी के महानायकों में से एक भगवान बिरसा मुंडा ने अल्प आयु में ही अपनी पढ़ाई के साथ धर्मांतरण के खिलाफ आवाज उठाने का साहसिक कार्य किया। भगवान बिरसा मुंडा आदिवासियों के लिए अपनी मूल संस्कृति के तो उद्धारक बने ही साथ ही उन्होंने 25 वर्ष की अल्प आयु में देशवासियों को अपने कर्मों के माध्यम से यह बताया कि जीवन कैसा हो, किसके लिए हो और किस ध्येय के लिए समर्पित हो। शाह ने कहा कि जल, जंगल और जमीन ही आदिवासियों के लिए सब कुछ है। इस संस्कार को पुनर्जीवित करने और जनजातीय समाज में जागरूकता लाने का काम बिरसा मुंडा ने किया। भगवान बिरसा मुंडा के स्वतंत्रता और धर्मांतरण के खिलाफ चलाये गए आंदोलनों के लिए यह देश उनका सदैव आभारी रहेगा। उन्होंने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा ने आदिवासी संस्कृति की रक्षा के अपना जीवन समर्पित कर दिया तो दूसरी ओर 25 वर्ष की आयु में उन्होंने मातृभूमि के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। यह देश उनके अद्वितीय त्याग को हमेशा याद करता रहेगा। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने इस मौके पर घोषणा की कि यहां आईएसबीटी बस स्टैंड के बाहर बड़े चौक को भगवान बिरसा मुंडा के नाम से जाना जाएगा। उन्होंने कहा कि इस प्रतिमा और उस चौक का नाम देखकर न केवल दिल्ली के नागरिक बल्कि अंतरराष्ट्रीय बस स्टैंड पर आने वाले लोग भी निश्चित रूप से उनके जीवन से प्रेरित होंगे।

दिल्ली में दूषित हवा का सितम, औसत एक्यूआई 441

नई दिल्ली, हि.स.)। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में शुक्रवार को भी दूषित हवा ने सितम ढाया। सुबह राजधानी घने कोहरे की चादर में लिपटी नजर आई। सुबह 7:00 बजे दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 441 दर्ज किया गया। देश की राजधानी में एक्यूआई 400 से 500 के बीच है। कई इलाकों में एक्यूआई 450 पार चला गया। इससे लोगों को सांस के मरीजों की मुश्किल बढ़ गई।

प्रदूषण के बदतर हालात को देखते हुए आज से ग्रैप का तीसरा चरण लागू किया गया है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक, सुबह 7:00 बजे दिल्ली का औसत एक्यूआई 441 दर्ज किया गया। सुबह 6.30 बजे आईजीआई एयरपोर्ट पर दृश्यता लगभग 500 मीटर रही। आनंद विहार में एक्यूआई 441, नरेला में 429, पंजाबी बाग में 443 और नजफगढ़ में 403 दर्ज किया गया। वहीं, अशोक विहार में 440, आया नगर में 417, बवाना में 455, बुराड़ी में 383, चांदनी चौक में 347, द्वारका सेक्टर-8 में 444, आईजीआई एयरपोर्ट में 446, दिलशाद गार्डन में 369, आईटीओ में 458 और जहांगीरपुरी में एक्यूआई 458 दर्ज किया गया। उल्लेखनीय है कि एक्यूआई जीरो से 50 के बीच है तो 'अच्छा' माना जाता है। 51 से 100 एक्यूआई होने पर 'संतोषजनक' माना जाता है। 101 से 200 के बीच 'मध्यम' माना जाता है। अगर एक्यूआई 201 से 300 के बीच हो तो उसे 'खराब' माना जाता है। यह 301 से 400 के बीच हो तो 'बहुत खराब' और 401 से 500 के बीच होने पर 'गंभीर' श्रेणी में माना जाता है।

सत्य, करुणा एवं समानता के प्रतीक हैं गुरु नानक देव जी : नड्डा

नई दिल्ली, (हि.स.)। गुरु नानक जयंती आज मनाई जा रही है। गुरु नानक देव की जयंती को गुरु पर्व और प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस मौके पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने लोगों को शुभकामनाएं दी है। शुक्रवार को भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि महान संत परंपरा के संवाहक, सिख पंथ के संस्थापक, प्रथम पातशाही श्री गुरु नानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। उन्होंने कहा कि सत्य, करुणा एवं समानता के प्रतीक पूज्य नानक देव जी की शिक्षा सम्पूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक है। उनके जीवनदर्शन शांति, मानवता और समरसता के पथ पर संपूर्ण मानव समाज को सदैव दिशा दिखाते रहेंगे।

फारूक अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर की स्थिति पर जताई चिंता

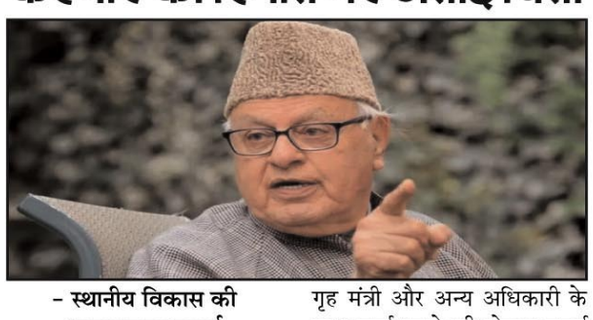

- स्थानीय विकास की आवश्यकता जताई

श्रीनगर (ईएमएस)। नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने हाल ही में जम्मू-कश्मीर में बढ़ रही समस्याओं और विकास के मुद्दों पर चर्चा की। उनका कहना था कि राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में बबार्दी की चिंता है, जिससे अस्पतालों से लेकर स्कूलों तक प्रभावित हो रहा है। उन्होंने उज्जवल किया कि कई संस्थानों में कार्यक्षमता की कमी है और साफ पानी की समस्या भी गंभीर हो गई है, जिसके कारण स्वास्थ्य समस्याएँ दिखाई दे रही हैं। वे एक गांव की उदाहरण में जोंडिस के बढ़ते मामले को उठाते हुए बताए कि साफ पानी की कमी से बीमारी फैल रही है। फारूक अब्दुल्ला ने सरकार से इन मुद्दों का समाधान तेजी से करने की मांग की और राज्य के विकास के लिए कदम उठाने की भी पुनरावृत्ति दी। उन्होंने उमर अब्दुल्ला की संबोधन से उनकी गतिविधियों पर गृह मंत्री और अन्य अधिकारी के साथ चर्चा करने की योजना बताई ताकि जम्मू-कश्मीर में सुधार किया जा सके और स्थानीय लोगों को बेहतर जीने के अवसर मिलें।

उन्होंने स्थानीय मजदूरों को रोजगार के लिए प्रोत्साहित किया और पूछा कि बाहरी ठेकेदारों को क्यों प्राथमिकता दी जाती है जबकि स्थानीय लोग समर्थ हैं। उनका मानना था कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन के माध्यम से ही क्षेत्र में विकास की संभावना है। उन्होंने बटोत को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की भी बात की। बटोत की प्राकृतिक सुंदरता को पर्यटन के लिए उपयोग में लाने की चर्चा की गई और उन्होंने इसे उन्नति देने के लिए प्रेरित किया। इसे एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाने का उद्देश्य रखा गया है ताकि यहाँ के पर्यटक बटोत की सुंदरता का आनंद ले सकें और इस से क्षेत्र में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिल सके।

राष्ट्रपति मुर्मु ने भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर देशवासियों को जनजातीय गौरव दिवस की बधाई दी

नई दिल्ली, (हि.स.)। देश आज 'धरती आबा' भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर मनाए जाने वाले जनजातीय गौरव दिवस पर उन्हें कृतज्ञता के साथ याद कर रहा है। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सभी नागरिकों को बधाई दी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने अपने संदेश में कहा, "मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार! जोहार! सभी देशवासियों को मैं 'जनजातीय गौरव दिवस' की बधाई देती हूं। हम सब, 'धरती आबा' भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के साल भर चलने वाले उत्सव का शुभारंभ कर रहे हैं। सभी देशवासियों की ओर से, मैं भगवान बिरसा मुंडा की पावन स्मृति को सादर नमन करती हूं। जनजातीय गौरव तथा संविधान के आदर्शों के प्रति देश में नई चेतना का संचार हो रहा है तथा इस चेतना को कार्यरूप दिया जा रहा है।" उन्होंने कहा, " यह भावना जनजातीय समाज सहित पूरे देश के उज्ज्वल भविष्य का आधार बनेगी। दो वर्ष पहले, झारखंड राज्य में स्थित भगवान बिरसा मुंडा के गांव उलिहातू में जाकर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने का सौभाग्य मुझे मिला था। पिछले वर्ष 'जनजातीय गौरव दिवस' के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी उलिहातू जाकर भगवान बिरसा मुंडा का आशीर्वाद लिया। किसी प्रधानमंत्री की उलिहातू की वह पहली यात्रा थी। इससे जनजातीय समाज के लोगों को बहुत खुशी हुई। उसी दिन, झारखंड से ही 'पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा-अभियान" का शुभारंभ किया गया।" राष्ट्रपति मुर्मु ने अपने बधाई संदेश में धरती बाबा के पूरे कृतित्व और व्यक्तित्व पर चर्चा करते हुए उनके संपूर्ण संघर्ष को याद करते हुए कहा- धन्यवाद! जय हिन्द! जय भारत!

हाईकोर्ट का अहम फैसला, भंगी, नीच, भिखारी, मंगनी...ये जातिसूचक शब्द नहीं

-आरोपियों के खिलाफ एससी व एसटी अधिनियम के तहत लगे आरोपों को हटाया

जयपुर,(ईएमएस)। राजस्थान हाईकोर्ट ने एक अहम फैसला सुनाते हुए जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल करने के मामले में चार आरोपियों के खिलाफ एससी व एसटी अधिनियम के तहत लगाए गए आरोपों को हटा दिया है। जोधपुर बेंच ने कहा कि भंगी, नीच, भिखारी, और मंगनी जैसे शब्द जातिसूचक नहीं हैं और इन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए आरोपियों ने किसी की जाति को लक्षित नहीं किया था। कोर्ट ने यह भी साफ कर दिया कि कोई भी सबूत नहीं था जो यह साबित करता हो कि आरोपियों को अपनी टिप्पणियों में उनके खिलाफ बयान देने वाले लोक सेवकों की जाति के बारे में जानकारी थी। यह मामला तब सामने आया जब अतिक्रमण हटाने गई टीम के खिलाफ कुछ युवकों ने आरोप लगाया कि उनकी जमीन का माप गलत किया गया है और इस पर गालियां दी गईं। इन गालियों में आरोपियों ने भंगी और नीच जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया था। हालांकि, आरोपियों ने कोर्ट में तर्क दिया कि उनका उद्देश्य इन शब्दों से उनको अपमानित करना नहीं था, बल्कि यह शब्द जमीन के गलत माप के खिलाफ नाराजगी के तौर पर इस्तेमाल किए गए थे। जांच में पुलिस ने पाया कि आरोप सही नहीं थे और न ही कोई स्वतंत्र गवाह था जो आरोपों का समर्थन कर सके। इसके बाद हाईकोर्ट ने इस मामले में कहा कि आरोपियों का इरादा लोक सेवकों को अपमानित करना नहीं था, बल्कि उनकी प्रतिक्रिया गलत माप की प्रक्रिया के खिलाफ थी। कोर्ट ने यह भी उल्लेख किया कि एससी-एसटी एक्ट के तहत आरोपियों पर लगाए गए आरोपों को हटाने का आदेश दिया। सुप्रीम कोर्ट के रमेश चंद्र वैश्य बनाम यूपी राज्य मामले का हवाला देते हुए कोर्ट ने कहा कि इस मामले में भी आरोपियों और आरोपित लोक सेवकों के अलावा कोई स्वतंत्र गवाह मौजूद नहीं था और पुलिस ने जांच के बाद आरोपों को सही नहीं पाया। कोर्ट ने कहा कि इसलिए एससी-एसटी अधिनियम की धारा के तहत अपराध नहीं बनता और आरोपियों को आरोप मुक्त कर दिया गया। हाईकोर्ट का यह फैसला विशेष रूप से काफी अहम है क्योंकि यह इस बात को साफ करता है कि यदि किसी व्यक्ति का इरादा जातिसूचक टिप्पणी करने का नहीं था और यदि आरोपों का समर्थन करने के लिए कोई स्वतंत्र गवाह नहीं है, तो ऐसे मामलों में एससी-एसटी एक्ट के तहत आरोपियों को दोषी नहीं माना जा सकता है।

सीपीडब्ल्यूडी करेगा केजरीवाल के आवास में साज-सज्जा खर्च की जांच

नई दिल्ली, (हि.स.)। केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सरकारी आवास में साज-सज्जा पर खर्च की जांच करेगा। केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) ने शुक्रवार को नेता प्रतिपक्ष विजेन्द्र गुप्ता की शिकायत का संज्ञान लेते हुए अरविंद केजरीवाल के सरकारी आवास 6, फ्लैग स्टाफ रोड में साज-सज्जा पर खर्च किए गए कथित करोड़ों रुपये की जांच करने का आदेश सीपीडब्ल्यूडी के मुख्य सतर्कता अधिकारी (सीवीओ) को दिया है। इस संदर्भ में नेता प्रतिपक्ष ने 21 अक्टूबर को सीवीसी में शिकायत दर्ज कराई थी। इसमें उन्होंने कहा था कि केजरीवाल ने मुख्यमंत्री आवास पर आंतरिक साज-सज्जा और सुविधाओं पर अत्यधिक खर्च किया गया। इसमें उच्च स्तर के भ्रष्टाचार की बू आती है और तत्काल जांच की आवश्यकता है। गुप्ता ने कहा कि केजरीवाल ने अपने घर में 77 लाख के टीवी, 50 लाख का रेशमी कालीन, 42 लाख की पीतल की रेलिंग, 20 लाख का स्पा सेंटर, 18 लाख का हॉट वॉटर जेनरेटर, 12-12 लाख की टॉयलेट सीट पर करोड़ों रुपए बेदर्दी से खर्च कर दिए। उन्होंने कहा कि केजरीवाल के घर पर 50 स्प्लिट एसी, 250 टन का सेंट्रलाइज्ड एसी सिस्टम, 934 लीटर कैपेसिटी वाला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से चलने वाला फ्रिज, बोश कंपनी के 75 स्पीकर, 5 रेकलाइनिंग सोफे, तीन डाइनिंग टेबल, किंग साइज के 8 बेड, 75 आरामदायक कुर्सियां, 76 टेबल, 24 सोफा सेट, एक डाइनिंग रूम, दो ड्राइंग रूम, तीन मीटिंग रूम, 12 टॉयलेट, दो किचन, 8 बेडरूम की सुविधाओं वाले इस 'आम आदमी' के घर के आगे सात सितारा होटल भी पानी भरते हैं। उन्होंने कहा कि केजरीवाल ने अपने शीश महल के सिर्फ बाथरूम पर जनता की खून पसीने की कमाई के 15 करोड़ रुपये खर्च कर दिए, 5.30 करोड़ रुपये के पर्दे लगवा लिए, ऑटोमेटिक खिड़कियों पर 70 लाख रुपये खर्च किए। शिकायती पत्र पर जांच के आदेश होने के बाद विजेंद्र गुप्ता का कहना है कि जांच पूरी होने के बाद जो रिपोर्ट आएगी, वह आम आदमी का मुखौटा पहन कर पिछले 10 साल तक दिल्ली की जनता को धोखा देने वाले केजरीवाल को बेनकाब कर देगी। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के पाप का घड़ा अब भर चुका है और अगले विधानसभा चुनाव में उनके प्रत्याशियों की जमानत जब्त करवा कर दिल्ली की जनता इन्हें सत्ता से बाहर कर देगी।

महाराष्ट्र: संभाजीनगर में 19 करोड़ के सोने व चांदी के गहने जब्त, जांच जारी

मुंबई, (हि.स.)। छत्रपति संभाजीनगर जिले के सिल्लोड में चुनाव आयोग की टीम ने बीती रात नाकाबंदी के दौरान एक कार से 19 करोड़ के सोना-चांदी के जेवरात जब्त किए। आयोग की टीम ने जेवरात और कार सिल्लोड पुलिस स्टेशन लाकर आगे की जांच शुरू कर दी है। सिल्लोड विधानसभा क्षेत्र के चुनाव अधिकारी लतीफ पठान ने बताया कि बीती सिल्लोड़ में निलोद फाटा के पास चेक नाके पर चुनाव निरीक्षण दल की टीम पुलिस के साथ नाकाबंदी कर रही थी। इसी दौरान संभाजीनगर से जलगांव जा रहे संदिग्ध कार को रोका गया। तलाशी लेने पर कार में लगभग 19 करोड़ रुपये के सोने और चांदी के गहने मिले, जिसे जब्त कर लिया गया है। इसी तरह गुरुवार को अमरावती के नागपुरी गेट चौक से दरियापुर की ओर जा रहे एक वाहन से नागपुरी गेट पुलिस ने 5 करोड़ से अधिक के सोने और 17 लाख के चांदी के गहने जब्त किए गए। नागपुरी गेट पुलिस ने जानकारी दी है कि सिक्वल ग्लोबल प्रेशियस लॉजिस्टिक्स की यह गाड़ी दरियापुर से अकोला की ओर जा रही थी। इतनी बड़ी मात्रा में सोना-चांदी आखिर कहां जा रहा था, इस संबंध में नागपुर गेट पुलिस आगे की जांच कर रही है। इसके साथ ही गुरुवार को अमरावती शहर में पुलिस ने दो गाड़ियों से 2.5 करोड़ रुपये की नकदी जब्त की थी। इन मामलों की गहन छानबीन जारी है।

उज्जैन में बैकुंठ चतुर्दशी पर हुआ हरि-हर मिलन, महाकाल ने श्रीहरि को सौंपा सृष्टि का भार

उज्जैन (मध्य प्रदेश), (हि.स.)। 'अब सौंप दिया इस सृष्टि का सब भार तुम्हारे हाथों में... कुछ इसी तरह के भजनों के मध्य ज्योतिर्लिंग भगवान महाकाल की नगरी उज्जैन में हरि-हर मिलन की अद्भुत परंपरा निभाई गई। यहां कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी (बैकुंठ चतुर्दशी) के अवसर पर मध्य रात्रि को हरि (भगवान विष्णु) का हर (भगवान शिव) से मिलन हुआ। अवंतिकानाथ राजा महाकाल ठाठ के साथ सवारी लिए भगवान विष्णु के स्वरूप गोपाल जी से भेंट करने पहुंचे। चातुर्मास समापन पर भगवान महाकाल ने सृष्टि का भार फिर से भगवान श्रीहरि को सौंप दिया। यह दिव्य दृश्य देखने के लिए आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। परम्परा के मुताबिक गुरुवार को महाकालेश्वर मंदिर से रात करीब 11 बजे भगवान महाकाल चांदी की पालकी में सवार होकर हरि-हर मिलन के लिए रवाना हुए। भगवान महाकाल की सवारी निर्धारित मार्ग से होते हुए रात बजे गोपाल मंदिर पहुंची। यहां भगवान महाकाल का जगत के पालन कर्ता भगवान विष्णु से मिलन हुआ। इस अद्भुत मिलन के साक्षी बनने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु सवारी मार्ग के दोनों ओर इकट्ठे हुए। इस दौरान भक्तों ने महाकाल के नारे लगाए। हरि-हर मिलन में भक्तो की भारी भीड़ देखने को मिली। मान्यता के अनुसार, वामन अवतार के समय भगवान विष्णु ने राजा बलि को उनका आतिथ्य स्वीकार करने का वचन दिया था। उसी वचन को निभाने के लिए भगवान विष्णु चातुर्मास के चार माह पाताल लोक में राजा बलि के यहां अतिथि बनकर व्यतित करते हैं। इस दौरान सृष्टि के संचालन का भार भगवान शिव के हाथ में रहता है। देव प्रबोधिनी एकादशी पर चातुर्मास का समापन होता है और भगवान विष्णु पुनः वैकुंठ पधारते हैं। इसके तीन दिन बाद भगवान शिव बैकुंठ चतुर्दशी पर भगवान श्री हरि विष्णु को पुनः सृष्टि का भार सौंपने के लिए गोलोक जाते हैं। हर के हरि से मिलने जाने के इसी धर्म प्रसंग को हरि हर मिलन कहा जाता है। महाकालेश्वर मंदिर के पुजारी पं. महेश गुरु ने बताया सिंधिया देव स्थान ट्रस्ट के श्री द्वारकाधीश गोपाल मंदिर में हरि-हर मिलन की परंपरा 100 साल से पुरानी है। सिंधिया रियासत के समय से ही हर साल यहां मध्य रात्रि 12 बजे हरि हर-मिलन कराया जाता है। इस अद्भुत मिलन के दौरान दोनों देवों को अपने-अपने स्वभाव के विपरीत मालाएं धारण करवाई गईं। इस मिलन में भगवान महाकाल ने प्रभु द्वारकाधीश को बिल्वपत्र की माला धारण करवाई। वहीं प्रभु द्वारकाधीश ने भगवान महाकाल को तुलसी पत्र की माला धारण करवाई। इस मिलन के दौरान भक्तों ने देवों की महाआरती की। विधि-विधान के साथ पूजन-अर्चन किया गया। इस अद्भुत मिलन को देखने के लिए देश भर से हजारों की संख्या में श्रद्धालु उज्जैन पहुंचे। पूजन के बाद भगवान महाकाल अपनी सवारी के साथ देर रात वापस अपने धाम महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग पहुंचे।

मुख्यमंत्री नायब सैनी ने गुरूग्राम अस्पताल का नाम श्री गुरु नानक देव किया

सिरसा में 77 एकड़ भूमि गुरुद्वारे के नाम करने का निर्णय

चंडीगढ़ (हिंस)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि सरकार ने 14 नवम्बर को विधानसभा सत्र में गुरूग्राम में लगभग 1000 करोड़ रुपए की लागत से बन रहे 700 बेड के सरकारी अस्पताल का नामकरण श्री गुरू नानक देव जी के नाम पर करने का फैसला किया है। इसके अलावा आज प्रकाश पर्व पर किसानों को 300 करोड़ रुपए की बोनस की दूसरी किस्त जारी की है। मुख्यमंत्री शुक्रवार को पंचकूला के गुरुद्वारा नाडा साहिब में मत्था टेकने के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार सदैव किसान व समाज हित में कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सिरसा में चिल्ला साहिब गुरुद्वारा की 77 एकड़ भूमि भी गुरूघर के नाम करने का निर्णय लिया है। इस भूमि की लगातार मांग चली आ रही थी। श्री गुरु नानक देव जी इस भूमि पर आए और 40 दिन तक लगातार तपस्या की। इसलिए सरकार ने यह भूमि गुरुद्वारे को सौंप दी। यह हम सब के लिए बड़े गौरव की बात है। मुख्यमंत्री ने कहा कि एचएसवीपी के 7000 प्लाट धारकों की इनहांसमेंट समस्याओं का निवारण करने के लिए आज पोर्टल लांच किया गया है। यह पोर्टल लगातार छह माह तक खुला रहेगा और इनकी समस्याओं का निवारण करेगा। इसके अलावा किसानों को उनकी भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने की जानकारी देने के लिए मृदा कार्ड बनाए जाएगें। हर तीन साल के बाद किसानों की भूमि के मृदा कार्ड बनाए जाते हैं। अब 40 लाख किसानों के मृदा कार्ड बनाकर जारी किए जाएंगे जो किसानों को भूमि की उत्तम स्वास्थ्य की जानकारी देगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज वे गुरुद्वारा नाडा साहिब में प्रदेश के नागरिकों की खुशहाली और समृद्धि की कामना करने के लिए आए है। चंडीगढ़ में विधानसभा भवन बनाने के लिए मिलने वाली भूमि को लेकर पूछे गए एक सवाल के जवाब में मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजाब सरकार किसानों के हित में निर्णय ले तो सही होगा। इसके साथ ही किसानों की फसल खरीदने का कार्य भी करे। पंजाब सरकार अपनी कमियां छुपाने और लोगों का ध्यान भटकाने के लिए ऐसा कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि कांग्रेस सरकार लोगों के हित में निर्णय लेती तो हरियाणा में लोग उन्हें हराने का कार्य नहीं करते। इसी प्रकार पंजाब के लोग आप सरकार के लिए भी ऐसा ही कार्य करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री गुरू नानक देव जी ने सदियों पहले मानवता को *किरत करो, नाम जपो और वंड छको* का पाठ पढ़ाया। बाबा नानक की वाणी और शिक्षा को प्रदेश सरकार ने सर्वोपरि माना है। आध्यात्मिक बोध, सांसारिक समृद्धि और सामाजिक समरसता के लिए श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं को सदा याद किया जाता रहेगा। इस मौके सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हरियाणा के चेयरमैन बलजीत सिंह दादूवाल ने कहा कि हरियाणा सरकार बधाई की पात्र है जिन्होंने किसान हित में अनेक निर्णय लिए है। इसके अलावा श्री गुरु नानक देव जी के नाम पर हॉस्पिटल का नाम और सिरसा गुरुद्वारे की भूमि सौंपने का नेक कार्य किया है।

हरियाणा की 70 प्रतिशत आबादी कैसे हुई गरीब, भाजपा दे जवाब : हुड्डा

चंडीगढ़ (हिंस)। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा है कि दस वर्ष सत्ता में रहने के बावजूद भाजपा के पास बताने के लिए कोई उपलब्धि नहीं है। जबकि कांग्रेस ने प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति निवेश, रोजगार देने और कानून व्यवस्था में हरियाणा को नंबर वन राज्य बनाया था। ऐसे में 10 साल पहले की कांग्रेस सरकार पर बीजेपी आज सवाल उठा रही है। चंडीगढ़ में शुक्रवार को पत्रकारों से बातचीत में हुड्डा ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने हरियाणा को विकास में नंबर वन बनाया था, जबकि भाजपा ने गरीबी में नंबर वन बना दिया है। खुद सरकारी आंकड़े बताते हैं कि आज हरियाणा की 70 प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा से नीचे पहुंच गई है। यह बीजेपी सरकार की नाकामी का स्पष्ट रिपोर्ट कार्ड है। बीजेपी को बताना चाहिए कि उसके विकास के दावों और किसानों की डबल आय के वादों का क्या हुआ। अगर भाजपा कार्यकाल में विकास हुआ है तो फिर इतनी बड़ी आबादी गरीब कैसे हो गई। राज्यपाल के अभिभाषण पर बोलते हुए हुड्डा ने कहा कि उसमें ना किसी तरह का विजन था और न ही भविष्य के लिए कोई रोड मैप था। सरकार ने नई बोतल में पुरानी शराब पेश की है।

गुरु पर्व के मौके दरबार साहिब पहुंचे लाखों श्रद्धालु, पंजाब के मुख्यमंत्री ने दी संगत को बधाई

चंडीगढ़ (हिंस)। पूरे विश्व में शुक्रवार को गुरुपर्व मनाया जा रहा है। गुरु नानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व के मौके पर शुक्रवार को सचखंड हरिमंदिर साहिब दरबार साहिब में लाखों की संख्या में श्रद्धालु नतमस्तक हुए। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, कॉमेडियन कर्मजीत अनमोल के साथ अमृतसर के रंजीत एवेन्यू स्थित छठी पातशाही गुरुद्वारा साहिब में माथा टेकने पहुंचे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) ने आज रात तक दरबार साहिब में तीन लाख श्रद्धालुओं के पहुंचने का अनुमान लगाया है। सीएम भगवंत मान ने गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर सभी को शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि आज उन्होंने अमृतसर में छठी पातशाही गुरुद्वारा साहिब में माथा टेका। दरबार साहिब में संगत को परेशानी न हो, इसलिए वे गोल्डन टेंपल नहीं गए। इस दौरान मीडिया ने उनसे चंडीगढ़ में हरियाणा को जमीन देने की बात पूछी, लेकिन उन्होंने जवाब देने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि आज वे किसी राजनैतिक टिप्पणी नहीं करना चाहते। अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में भव्य सजावट की गई और रात के समय दरबार साहिब में आतिशबाजी होगी। इस बार प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने खास तरह के पटाखे चलाने के इंतजाम किये हैं, जिसमें लाइटें निकलेंगी और धुआं बहुत ही कम होगा। इसके अलावा गोल्डन टेंपल में एक लाख से अधिक घी के दिए भी जलाए जाएंगे।

गुरूनानक देव का 555वां प्रकाश पर्व

सजा दीवान, सत्संग और लंगर में उमड़े श्रद्धालु

जोधपुर (हिंस)। सिख पंथ के संस्थापक गुरुनानक देव महाराज का 555 वां प्रकाश उत्सव आज शहर में हर्षोउल्लास के साथ मनाया जा रहा है। प्रकाश पर्व के अवसर पर दीवान को सजाने के साथ भव्य रात को लंगर का आयोजन रखा गया है। सत्संग कार्यक्रम में आज हजारों की संख्या में भक्तजन पहुंचे। गुरुद्वारा गुरू सिंह सभा के सचिव कुलदीप सिंह सलूजा ने बताया कि सुबह 8 से 9 बजे के बीच गुरुद्वारा गुरू तेग बहादरु साहिब में दूसार दीवान सजाया गया। इसके साथ मुख्य दीवान सुबह 9 बजे अखंड पाठ साहब की समाप्ति के बाद शुरू किया गया। सत्संग में कीर्तन आयोजन में हजारों की संख्या में भक्तजन पहुंचे। आज रात्रि 8.30 बजे से 10 तक चौथा दीवान लगेगा सभी वदीनों के बाद अटूट लंगर की सेवा होगी। इस अवसर पर आज रक्तदान शिविर भी लगाया गया। जिसमें युवाओं के साथ युवतियों ने भी रक्तदान कर देश सेवा का जज्बा दिखाया। रक्तदान शिविर का आयोजन रोटरी क्लब जोधपुर, ब्लू सिटी और गुरुद्वारा गुरू सिंह सभा के संयुक्त तत्वावधान में गुरुद्वारा सिंह सभा में किया गया। गुरुनानक देव महाराज के प्रकाश उत्सव के अवसर पर करीब 10 हजार लोगों के लिये लंगर प्रसादी का आयोजन आज रात रखा गया है। वहीं शहर के शहीद हेमू कालानी सर्कल के पास सरदारपुरा बी रोड स्थित सिंधी गुरू संगत दरबार में भी गुरू नानक देव साहिब का प्रकाश उत्सव मनाया जा रहा है। यहां अरदास के साथ लंगर का आयोजन किया गया।

इंटरनेट पर छोटी सी चूक के इंतजार में बैठे हैं साइबर अपराधी : एसपी डबवाली

सिरसा (हिंस)। आज के इस तकनीकी दौर में मनुष्य ज्यादातर मोबाइल फोन, लैपटॉप व कंप्यूटर आदि पर निर्भर है और यह डिवाइस इंटरनेट से जुड़ी हुई हैं। इनके माध्यम से मनुष्य का जीवन काफी आसान हो गया है। इनके माध्यम से मनुष्य अपने रोजमर्रा के कार्य जैसे - बैंक से संबंधित कार्य, ऑनलाइन ऑफिस कार्य, नेट बैंकिंग, सोशल मीडिया आदि पर अपना कारोबार आदि कार्य घर बैठे ही बड़ी आसानी से कर लेता है। जिसके कारण व्यक्ति कई बार इंटरनेट पर गलती कर बैठता हैं। साइबर अपराधी लोगों की इसी गलती के इंतजार में बैठे रहते हैं। मौका मिलते ही साइबर अपराधी बड़े ही शातिर तरीके से लोगों को मानसिक व आर्थिक तौर पर भारी क्षति पहुंचा देते हैं।

जहाजपुर पथराव प्रकरण : शाहपुरा जिला कल, भीलवाड़ा जिला 18 को और चित्तौड़ प्रांत 19 को बंद

भीलवाड़ा (हिंस)। शाहपुरा जिले के जहाजपुर में जलझूलनी एकादशी के दिन भगवान पीतांबर श्याम की पालकी पर पथराव की घटना के बाद से तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है। हिंदू संगठनों ने आरोपियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग करते हुए, 15 नवंबर से अनिश्चितकालीन बंद का ऐलान किया है। इस विरोध में शुक्रशार को जहाजपुर पूरी तरह से बंद रहा,और आंदोलन धीरे-धीरे अन्य जिलों तक फैलता जा रहा है। पीतांबर श्याम संघर्ष समिति के संयोजक गोकुल खटीक ने कहा कि हिंदू समाज की मांगों को नजरअंदाज किए जाने के कारण यह आंदोलन तेज किया जा रहा है। समिति ने घोषणा की है कि 15 नवंबर को जहाजपुर बंद रहेगा, 16 नवंबर को तहसील मुख्यालय, 17 को शाहपुरा जिला, 18 नवंबर को भीलवाड़ा जिला और 19 नवंबर को चित्तौड़ प्रांत का बंद किया जाएगा। संघर्ष समिति ने यह साफ किया है कि आंदोलन का उद्देश्य प्रशासन और पुलिस पर दबाव बनाना है ताकि पथराव के सभी आरोपियों पर सख्त कार्रवाई की जा सके। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि पुलिस ने केवल आठ लोगों को गिरफ्तार किया है, जबकि घटना में कई अन्य लोग भी शामिल थे। बुधवार को हुई गिरफ्तारियों के बाद, बड़ी संख्या में लोग थाने के बाहर एकत्र हुए और पुलिस की भूमिका पर सवाल उठाते हुए विरोध प्रदर्शन किया। इस गुस्से को देखते हुए इलाके में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। शाहपुरा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश आर्य ने वीडियो संदेश जारी कर लोगों से शांति बनाए रखने और बाजार खुले रखने की अपील की। हालांकि, पीतांबर श्याम संघर्ष समिति की अपील के चलते पुलिस की यह अपील बेअसर रही, और आज जहाजपुर पूरी तरह से बंद रहा। संघर्ष समिति ने शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन को जारी रखने का आह्वान किया है। उनका कहना है कि जब तक उनकी 14 सूत्रीय मांगें पूरी नहीं होतीं, यह आंदोलन जारी रहेगा।

हमारी विरासत राम मंदिर तो सपा की खान मुबारक, अतीक और मुख्तार : सीएम योगी

लखनऊ (हिंस)। प्रदेश की नौ विधान सभा सीटों पर हो रहे उपचुनाव के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को अंबेडकर नगर और मीरजापुर में चुनावी सभाओं को संबोधित किया। मुख्यमंत्री ने अंबेडकरनगर के कटेहरी विधानसभा के प्रत्याशी धर्मराज निषाद और मीरजापुर के मझवां विधानसभा के प्रत्याशी सुचिस्मिता मौर्य के पक्ष में वोट की अपील की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले दस वर्षों से बिना रुके, हटे, डिगे देश की सुरक्षा, गरीब कल्याण, इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट और विरासत का सम्मान हो रहा है, जबकि वर्ष 2014 से पहले इंडी गठबंधन के लोग राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़ और विरासत का अपमान करते थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में विकास के बड़े-बड़े कार्य हो रहे हैं तो विरासत का सम्मान भी हो रहा है। आज अयोध्या में दिव्य, भव्य राम मंदिर में रामलला विराजमान हो गए हैं, जिसे देख हर देशवासी गौरवान्वित महसूस कर रहा है। यह हमारी विरासत है। इस विरासत का सपा के लोगों ने हमेशा अपमान किया है। इनकी वास्तविक विरासत खान मुबारक, अतीक अहमद और मुख्तार अंसारी हैं। अंबेडकरनगर की धरती पर डॉक्टर लोहिया का जन्म हुआ था, लेकिन समाजवादी पार्टी डॉ.लोहिया और आचार्य नरेंद्र देव के मूल्यों और आदर्शों से भटक चुकी है। यही वजह है कि ये महाराजा सुहेलदेव के स्मारक पर नहीं जाते हैं, क्योंकि इन्हें मुस्लिम वोट बैंक खिसकने का भय है। विकास के बड़े-बड़े कार्यों से जुड़ रहा कटेहरी, रच रहा कीर्तिमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कटेहरी में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि एनडीए ने बहराइच में महाराजा सुहेलदेव का भव्य स्मारक बनवाया है। वह भारत के महान योद्धाओं में शामिल थे। श्रृंगवेरपुर में भगवान राम और निषादराज के मैत्री की 56 फिट ऊंची प्रतिमा को स्थापित किया है, जो विरासत के सम्मान को दर्शाता है। वहीं सपा परंपराओं, किसानों और युवाओं का अपमान करने वाली है। उन्होंने कहा कि अयोध्या में सपा के गुंडों ने एक निषाद बेटी के साथ क्या किया, यह किसी से छिपा नहीं है। इसे छिपाने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष दलील दे रहे थे। हमारी सरकार निषाद बेटी और उसके परिवार के साथ मजबूती से खड़ी है। ऐसी घटना को अंजाम देने वाले की यहां कोई जगह नहीं है। उसके लिए केवल जहन्नुम में जगह हो सकती है। इसके लिए सरकार संकल्पित है। योगी ने कहा कि आपने पिछले 2 वर्ष 2 माह में यहां होने वाले विकास कार्यों को आगे बढ़ते हुए देखा होगा। यह निरंतर जारी रहेगा। हमारी सरकार वृद्धावस्था पेंशन, निराश्रित, दिव्यांगजन पेंशन के साथ फ्री में रसोई गैस का सिलेंडर दे रही है। हम सबका साथ सबका विकास के लक्ष्य के साथ काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि योजनाओं का लाभ देने में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जा रहा है। पिछली सरकारों में चेहरा देखकर लाभ दिया जाता था। सरकार ने प्रदेश से गरीबी को खत्म करने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए जीरो पावर्टी योजना लागू की गयी है। इसके सर्वे का काम तेजी से चल रहा है। इसके माध्यम से फ्री में मकान, आयुष्मान कार्ड, राशन कार्ड, पेंशन समेत अन्य सुविधाओं का लाभ दिया जाएगा। सीएम ने अंत में जनता से प्रत्याशी धर्मराज निषाद को आशीर्वाद देने की अपील की। साथ ही भारी बहुमत से विजयी बनाकर विकास को और रफ्तार देने की अपील की। सपा में सिर्फ सैफई परिवार और गुंडों का विकास होता था, आज जनता का हो रहा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मीरजापुर के मझवां विधानसभा में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नया भारत, विकसित भारत बन रहा है। वहीं प्रदेश में डबल इंजन की सरकार बुलेट ट्रेन की स्पीड से चलकर सुरक्षा, समृद्धि और सुशासन का मॉडल खड़ा करने की दिशा में काम कर रही है। इसी के तहत प्रदेश में इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट के कार्य तेजी से हो रहे हैं। यही नहीं आज प्रदेश से माफिया का अंत हुआ है। वहीं सपा कार्यकाल में सिर्फ सैफई परिवार और बड़े-बड़े माफिया के परिवारों का ही विकास हुआ। भाजपा के विधायक कृष्णानंद राय और राजू पाल की हत्या करने वाले दुर्दांत माफिया समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के गले का हार थे। वहीं आज प्रदेश माफिया और भयमुक्त है। पहले प्रदेश की पहचान कर्फ्यू और दंगों से होती थी, आज यूपी में *नो कर्फ्यू, नो दंगा, उत्तर प्रदेश में सब चंगा* से होती है।

दिल्ली में 3 और 4 दिसबंर को होगा बिहार महोत्सव का आयोजन : प्रसाद रत्नेश्वर

पूर्वी चंपारण (हिंस)। दिल्ली के सिविल लाइंस स्थित शाह ऑडिटोरियम में आगामी 3 और 4 दिसबंर को दो दिवसीय बिहार महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। मोतिहारी में शुक्रवार को इसकी जानकारी देते बिहार महोत्सव के प्रणेता एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के इडेडसीसी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के सदस्य प्रसाद रत्नेश्वर ने बताया कि महोत्सव में इस वर्ष बड़ी संख्या बिहारी समाज के लोग जुटेंगे। जिसमे वैसे लोग भी शामिल होगे, जिन्होने अपने गांव - गिरांव से दूर आकर राष्ट्रीय राजधानी में अपनी कामयाबी का परचम लहरा रहे है। इसके साथ ही वे सभी निश्चछल बिहारी श्रमजीवी शख्सियत भी इसमे शिरकत करेगे। जिन्होने अपने कंठ में मां सरस्वती और बाजुओं में भगवान विश्वकर्मा का आशीर्वाद लेकर दिल्ली को गढ़ा है। उन्होंने बताया कि दिल्ली में बिहार महोत्सव की तैयारी जोरों पर है। बीते 41 वर्षों से मोतिहारी,पटना और दिल्ली के रंगमंच पर सक्रिय प्रसाद रत्नेश्वर ने कहा कि दिल्ली में बिहार महोत्सव अपनों के बीच अपनेपन का एक नया अहसास है। उन्होने बताया कि देश की राजधानी में बिहार महोत्सव की शुरुआत उन्होने 21 वर्षों पहले वर्ष 2003 में मोतिहारी से जाकर की थी। उस समय दिल्ली में सरकारी या गैर - सरकारी स्तर पर बिहार महोत्सव का का आयोजन नहीं होता था। 6 - 7 दिसंबर, 2003 को ईस्ट ऑफ कैलाश स्थित इस्कॉन में इसका प्रथम सफल आयोजन किया था। इस बार के आयोजन में भी चार सौ से अधिक लोक कलाकार भाग ले रहे हैं। माहौल बनाने के लिए अभी से बिहार महोत्सव की टीम दिल्ली के अलग- अलग हिस्सों में नुक्कड़ नाटक व लोकगीतों के माध्यम से बिहारियों को अपनी गौरवशाली कला - संस्कृति पर गर्व करने, धरोहरों को सहेजने तथा आपस में एकजुट होने के लिए प्रेरित कर रही है।

सड़क हादसे में कोल्हापुर के चार लोगों की मौत

पाली (हिंस)। सांडेराव थाना क्षेत्र के केनपुरा के पास गुरुवार रात हुए एक सड़क हादसे में चार लोगों की मौत हो गई। हादसे के दौरान कार में छह लोग सवार थे। सभी एक ही परिवार के बताए जा रहे हैं। हादसे में दो लोग घायल हुए हैं। सभी महाराष्ट्र के कोल्हापुर के रहने वाले हैं। पुलिस ने बताया कि कोडोली जिला कोल्हापुर भाता हुपरी तहसील हाथ कलंगडी निवासी (50) बाबूराव, उनकी पत्नी सारिका (38), बेटी साक्षी (19) और बेटे संस्कार (17) की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि हादसे में चिन्मय (29) पुत्र रवि और प्रमोद (40) पुत्र पुरेन्द्र जैन घायल हो गए। सांडेराव थाने के एसएचओ लक्ष्मणसिंह ने बताया कि कोल्हापुर (महाराष्ट्र) का एक बिजनेसमैन परिवार सहित शिवगंज (सिरोही) आया था। यहां अपने परिचित व्यापारी से कार लेकर वह परिवार सहित जोधपुर गए थे।

जनजातीय समुदायों के शौर्य, साहस, पराक्रम व बलिदान के प्रतीक हैं भगवान बिरसा मुंडा : आशीष पटेल

मीरजापुर (हिंस)। अपना दल (एस) के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को सांसद जनसंपर्क कार्यालय पटेल चौक भरुहना में आदिवासी जन चेतना के लोकनायक भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाई। राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष व प्राविधिक शिक्षा उपभोक्ता मामले के मंत्री आशीष पटेल ने भगवान बिरसा मुंडा को पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। कहा कि भगवान बिरसा मुंडा देश के जनजातीय समुदायों के शौर्य, साहस, पराक्रम व बलिदान के प्रतीक हैं। उन्होंने देश के अमर नायकों और बलिदानियों को नमन किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की पहल से भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर हर वर्ष 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस मनाया जाता है। कहा कि भगवान बिरसा मुंडा जननायक थे। उन्होंने आदिवासी समुदाय को जल, जंगल, जमीन के बारे में जागरूक किया और उन्हें अपने हक की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा दी। बिरसा मुंडा ने तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य की नीतियों का विरोध किया और आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक उन्नति के लिए जीवन भर काम किया। उनके क्रांतिकारी विचार और देश प्रेम की भावना आज भी हम सभी को प्रेरित करती है। कहा कि यह जनजातीय के गौरव के लिए सम्मान का दिन है। उन्होंने प्रदेशवासियों को जयंती पर शुभकामनाएं दी। इस दौरान राष्ट्रीय सचिव मेघनाथ पटेल, गोवर्धन पटेल, दुर्गेश पटेल, मुन्नर पटेल, रामवृक्ष बिंद, संतोष विश्वकर्मा, मनोज सिंह, शंकर सिंह चौहान, योगेश पटेल, विजय शंकर केसरी, उमाशंकर सोनी, राजेश मौर्य, मनोज बिंद, विकास मौर्य, हर्षित पटेल, सोनेलाल पटेल, आरिफ अली मंसूरी, प्रशांत शुक्ल आदि अनेक पदाधिकारी मौजूद थे।

कार्तिक पूर्णिमा को लेकर गंगा घाटों पर उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, किया गया दीप दान

भागलपुर (हिंस)। कार्तिक पूर्णिमा को लेकर शुक्रवार को जिले के विभिन्न गंगा घाटों पर स्नान के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। शहरी क्षेत्र के बूढ़ानाथ, एसएम कॉलेज, सीढ़ी घाट, खिरनी घाट, मुसहरी घाट, बरारी घाट, बरारी सीढ़ी घाट और पुल घाट पर अहले सुबह से ही गंगा स्नान करने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। गंगा स्नान करने के बाद श्रद्धालुओं ने दीप दान भी किया। उल्लेखनीय हो कि रानी सती मंदिर में दीपोत्सव मनाया जाएगा साथी गेंदा, गुलाब और रजनीगंधा फूल का भव्य श्रृंगार किया जाएगा। इस दौरान महा आरती भी होगी। सिर्फ भागलपुर के ही लोग नहीं बल्कि बांका, झारखंड, गोड्डा समेत आसपास के जिले के लोग भी भागलपुर गंगा स्नान करने के लिए पहुंचे थे। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए सामाजिक संगठनों के द्वारा गंगा घाट पर व्यवस्था कुछ गई थी। उधर सुलतानगंज के अजगैविनाथ धाम में भी सुबह से शिव भक्तों की भीड गंगा स्नान करने के लिए उमड़ पड़ी। कार्तिक पूर्णिमा के दिन से महिलाएं एक माह तक बिना लहसुन प्याज खाए सूर्य उदय से पहले स्नान कर पूजापाठ करती हैं। आज के दिन गंगा में डुबकी लगाकर फल प्रसाद दीप जलते हुए उत्तरवाहिनी गंगा में दीप प्रज्वलित करती हैं। ऐसा करने से कार्तिक भगवान सबों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। विशेषकर कुंवारी कन्याएं यह पर्व करती हैं। जिससे उन्हें मनपसंद वर की प्राप्ति होती है।

संपादकीय

गंगा फिर भी मैली

राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण की उस टिप्पणी को हमें एक गंभीर चेतावनी के रूप में लेना होगा, जिसमें कहा गया है कि प्रयागराज में गंगा का पानी इतना प्रदूषित हो गया है कि वह आचमन करने लायक भी नहीं रह गया है। एनजीटी का यह खुलासा इसलिये भी चिंता बढ़ाने वाला है क्योंकि कुछ ही माह बाद यानी जनवरी 2025 की पौष पूर्णिमा से प्रयागराज में महाकुंभ की शुरुआत होने वाली है। कुंभ मेले की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और अखाड़ों की सक्रियता बढ़ गई है। महाकुंभ को लेकर देश ही नहीं विदेश में भी खूब चर्चा होती है। यदि गंगाजल की गुणवत्ता को लेकर ऐसे ही सवाल उठते रहे तो देश-दुनिया में अच्छा संदेश नहीं जाएगा। सवाल इस बात को लेकर भी उठेंगे कि विभिन्न सरकारों द्वारा शुरू की गई अनेक महत्वाकांक्षी व भारी-भरकम योजनाओं के बावजूद गंगा को साफ करने में हम सफल क्यों नहीं हो पाए हैं। आखिर कौन है गंगा की यह हालत करने के गुनहगार? विडंबना देखिये कि तमाम सख्ती के बावजूद सैकड़ों खुले नाले गंगा में गंदा पानी गिरा रहे हैं। तमाम उद्योगों का अपशिष्ट पानी अनेक जगह गंगा में गिराया जा रहा है। वर्ष 2014 से गंगा की सफाई का महत्वाकांक्षी अभियान 'नमामि गंगे' शुरू किया गया था। बताया जाता है कि अब तक करीब चालीस हजार करोड़ की लागत से गंगा की सफाई की करीब साढ़े चार सौ से अधिक परियोजनाएं आरंभ भी की गई हैं। इस परियोजना के अंतर्गत गंगा के किनारे स्थित शहरों में सीवर व्यवस्था को दुरुस्त करने, उद्योगों द्वारा बहाये जा रहे अपशिष्ट पदार्थों के निस्तारण के लिये शोधन संयंत्र लगाने, गंगा तटों पर वृक्षारोपण, जैव विविधता को बचाने, गंगा घाटों की सफाई के लिये काफी काम तो हुआ लेकिन अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए हैं। जो हमें बताता है कि जब तक समाज में जागरूकता नहीं आएगी और नागरिक अपनी जिम्मेदारी का अहसास नहीं करेंगे, गंगा मैली ही रह जाएगी। सिर्फ सरकारी प्रयास काफी नहीं हैं। दरअसल, लगातार बढ़ती जनसंख्या का दबाव और गंगा तट पर स्थित शहरों में योजनाबद्ध ढंग से जल निकासी व सीवरेज व्यवस्था को अंजाम न दिये जाने से समस्या विकट हुई है। गंगा को साफ करने के लिये जरूरी है कि स्वच्छता अभियान एक निरंतर प्रक्रिया हो। एक बार की सफाई निष्प्रभावी हो जाएगी यदि हम प्रदूषण के कारकों को जड़ से समाप्त नहीं करते। इसके लिये गंगा के तट वाले राज्यों में पर्याप्त जलशोधन संयंत्र युद्ध स्तर पर लगाए जाने चाहिए। साथ ही गंगा सफाई अभियान की नियमित निगरानी होनी चाहिए। इसमें आधुनिक तकनीक का भी सहारा लिया जाना चाहिए। लोगों को बताया जाना चाहिए कि गंगा सिर्फ नदी नहीं है यह खाद्य शृंखला को संबल देने वाली तथा हमारी आध्यात्मिक यात्रा से भी जुड़ी है। गंगा में अघुलनशील कचरा व अन्य अपशिष्ट डालने से रोकने के लिये जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है। यदि जागरूकता व प्रेरित करने से बात नहीं बनती तो इसके लिये जुर्माने का प्रावधान भी होना चाहिए। साथ ही गंगा में जहरीला कचरा बहाने वाले उद्योगों पर भी आर्थिक दंड लगाना चाहिए। एक बात तो तय है कि सरकार के साथ जब समाज की जिम्मेदारी तय नहीं की जाती, गंगा का साफ होना असंभव जैसा हो जाएगा। गंगा सिर्फ बहती नदी नहीं है हमारे पुरखों की आस्था और विश्वास का प्रतीक है। गंगा मुक्तिकामी भी है। जीवनदायिनी भी है। ऐसे में केंद्र सरकार की नमामि गंगा परियोजना में राज्यों की भागीदारी और जवाबदेही भी तय की जानी चाहिए। साथ ही स्वच्छता परियोजना की निरंतर निगरानी की जानी भी जरूरी है ताकि प्रयासों का स्थायी लाभ गंगा को स्वच्छ बनाने में मिल सके। सही मायनों में आज गंगा के उद्धार के लिये हर भारतीय को भगीरथ जैसा दायित्व निभाना होगा।

प्रयागराज में गंगा का पानी इतना प्रदूषित हो गया है कि वह आचमन करने लायक भी नहीं रह गया है। एनजीटी का यह खुलासा इसलिये भी चिंता बढ़ाने वाला है क्योंकि कुछ ही माह बाद यानी जनवरी 2025 की पौष पूर्णिमा से प्रयागराज में महाकुंभ की शुरुआत होने वाली है। कुंभ मेले की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और अखाड़ों की सक्रियता बढ़ गई है। महाकुंभ को लेकर देश ही नहीं विदेश में भी खूब चर्चा होती है। यदि गंगाजल की गुणवत्ता को लेकर ऐसे ही सवाल उठते रहे तो देश-दुनिया में अच्छा संदेश नहीं जाएगा। सवाल इस बात को लेकर भी उठेंगे कि विभिन्न सरकारों द्वारा शुरू की गई अनेक महत्वाकांक्षी व भारी-भरकम योजनाओं के बावजूद गंगा को साफ करने में हम सफल क्यों नहीं हो पाए हैं। आखिर कौन है गंगा की यह हालत करने के गुनहगार? विडंबना देखिये कि तमाम सख्ती के बावजूद सैकड़ों खुले नाले गंगा में गंदा पानी गिरा रहे हैं। तमाम उद्योगों का अपशिष्ट पानी अनेक जगह गंगा में गिराया जा रहा है।

महाराष्ट्र की राजनीति के वटवृक्ष माने जाने वाले शरद पवार दिन-रात कड़ी मेहनत कर रहे

राजनीतिक पूंजी बचाने और बागियों को सबक सिखाने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे शरद पवार

नीरज कुमार दुबे

शरद पवार के लिए इस बार का चुनाव अपनी जीवन भर की राजनीतिक कमाई को बचाने और धोखा देने वालों को सबक सिखाने का चुनाव भी है। हम आपको याद दिला दें कि भतीजे अजित पवार ने चाचा शरद पवार द्वारा बनाई गयी पार्टी एनसीपी पर कब्जा कर लिया है। इसके अलावा छगन भुजबल, दिलीप वलसे पाटिल और धनंजय मुंडे जैसे कई नेता हैं जिनको संकट के समय शरद पवार ने राजनीतिक सहारा देकर उबारा था लेकिन वह धोखा देकर अजित पवार के साथ चले गये। इसलिए इस चुनाव में शरद पवार हर वो चाल चल रहे हैं जिससे उनको धोखा देने वालों को सबक सिखाया जा सके

राकांपा (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार के लिए इस बार का महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव पहले के चुनावों की तरह सामान्य नहीं है। यह चुनाव शरद पवार के लिए सिर्फ सरकार बनाने का लक्ष्य हासिल करने के लिए भी नहीं है। शरद पवार के लिए इस बार का चुनाव अपनी जीवन भर की राजनीतिक कमाई को बचाने और धोखा देने वालों को सबक सिखाने का चुनाव भी है। हम आपको याद दिला दें कि भतीजे अजित पवार ने चाचा शरद पवार द्वारा बनाई गयी पार्टी एनसीपी पर कब्जा कर लिया है। इसके अलावा छगन भुजबल, दिलीप वलसे पाटिल और धनंजय मुंडे जैसे कई नेता हैं जिनको संकट के समय शरद पवार ने राजनीतिक सहारा देकर उबारा था लेकिन वह धोखा देकर अजित पवार के साथ चले गये। इसलिए इस चुनाव में शरद पवार हर वो चाल चल रहे हैं जिससे उनको धोखा देने वालों को सबक सिखाया जा सके। जहां भावनात्मक कार्ड खेलना है वहां शरद पवार इमोशनल हो जा रहे हैं, जहां राजनीतिक चाल चलनी है वहां वह आक्रामक हो जा रहे हैं। उनको इस बार कितनी बड़ी राजनीतिक कामयाबी मिल पाती है यह तो परिणाम ही बताएंगे लेकिन इतना तो दिख ही रहा है कि महाराष्ट्र की राजनीति के वटवृक्ष माने जाने वाले शरद पवार दिन-रात कड़ी मेहनत कर रहे हैं। बारामती में लोकसभा चुनावों के दौरान शरद पवार का इमोशनल कार्ड लोकसभा चुनावों में भी चला था जब उनकी बेटी सुप्रिया सुले के खिलाफ उनके भतीजे अजित पवार ने अपनी पत्नी को चुनाव में उतार दिया था। अब अजित पवार के खिलाफ उनके भतीजे रोहित पवार को उतार कर जब शरद पवार प्रचार के लिए उतरे तो उन्होंने फिर से भावनात्मक कार्ड खेला और सक्रिय राजनीति से संन्यास के संकेत दिये। एक तरफ उन्होंने बारामती में इमोशनल कार्ड खेला तो दूसरी ओर राजनीतिक कार्ड खेलते हुए अजित पवार को घड़ी चुनाव चिह्न का इस्तेमाल करने से रोकने और अपनी फोटो का उपयोग करने से रोकने के लिए अदालत की शरण भी ली। शरद पवार साथ ही उन सभी विधायकों के निर्वाचन क्षेत्रों में भी जा रहे

हैं जिन्होंने अजित पवार के नेतृत्व में उनको धोखा दिया। उन विधायकों के क्षेत्रों में जाकर वह उनकी कारगुजारियों से जनता को अवगत करा रहे हैं और उन्हें सबक सिखाने के लिए कह रहे हैं। इस क्रम में शरद पवार ने पूर्व सहयोगी दिलीप वलसे पाटिल के खिलाफ मोर्चा खोला। 20 नवंबर को होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले अंबेगांव विधानसभा क्षेत्र में शरद पवार ने कहा कि दिलीप वलसे पाटिल कहते रहे कि साहेब (शरद पवार) मेरे बारे में (कुछ भी नकारात्मक) बात नहीं करेंगे, लेकिन मेरे पास कहने के लिए क्या बचा है? दिलीप वलसे पाटिल ने हमें धोखा दिया, और जिन्होंने हमें धोखा दिया है उन्हें दंडित करने की आवश्यकता है। आपको यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि देवदत्त निकम इस सीट पर भारी अंतर से जीतें।'' शरद पवार ने कहा, ''जिन्हें मैंने पद, शक्ति, अधिकार और प्रतिष्ठा दी है, उनसे मैं कुछ नहीं चाहता। आज कई लोग उनसे परेशान हैं। उनके कैबिनेट में शामिल होने का फैसला लोगों को पसंद नहीं आया। उनका कहना है कि हमारे साथ उनके बहुत अच्छे रिश्ते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है।'' इसके अलावा, शरद पवार ने अपने पूर्व विश्वासपात्र छगन भुजबल के येवला निर्वाचन क्षेत्र में रैली को संबोधित करते हुए 2019 के चुनावों में ₹गलत उम्मीदवार₹ देने के लिए लोगों से माफी मांगी। शरद पवार ने मतदाताओं से ₹विश्वासघातीः को हराने की भावुक अपील की, जो पिछले साल जुलाई में भुजबल के अजित पवार के साथ जाने से उन्हें लगी गहरी चोट को दर्शाता है। शरद पवार ने खुलासा किया कि राकांपा में फूट के बाद भुजबल उनके घर पहुंचे और उनके व अजित पवार के बीच सुलह कराने की पेशकश की, लेकिन वह दोबारा कभी नहीं आए। शरद पवार ने कहा कि भुजबल की कमियों को नजरअंदाज करते हुए उन्हें नेता प्रतिपक्ष से लेकर उपमुख्यमंत्री तक कई अहम पद सौंपे गए, बावजूद इसके उन्होंने राजनीतिक शालीनता की सभी सीमाएं लांघ दीं और उन्हें धोखा दिया। शरद पवार ने कहा कि भुजबल का उन्हें और दिवंगत बालासाहेब ठाकरे समेत अपने राजनीतिक गुरुओं को धोखा देने का इतिहास रहा है। उन्होंने मतदाताओं से इस दलबदलू नेता को सबक सिखाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, "जब उन पर (भुजबल पर) कुछ आरोप लगने के बाद उन्हें जेल जाना पड़ा, तो मैं उनके साथ खड़ा रहा और यहां तक कि उन्हें महा विकास आघाडी (एमवीए) सरकार में एक पद भी दिया।" शरद पवार ने कहा कि अपने आकाओं को धोखा देने वाले भुजबल येवला के लोगों से वोट मांगने आएंगे और यह तय करना आपके ऊपर है कि आप ऐसे व्यक्ति का समर्थन करेंगे या नहीं। इसके अलावा, शरद पवार ने उपमुख्यमंत्री अजित पवार के सहयोगी एवं महाराष्ट्र के मंत्री धनंजय मुंडे पर भी निशाना साधा और कहा कि राकांपा में विभाजन के पीछे जो लोग हैं, उन्हें हराया जाना चाहिए। पवार ने बीड जिले के परली में आरोप लगाया कि लोगों को ''धमकाया'' जा रहा है और इसे रोकना होगा। उन्होंने कहा कि मैं जो कुछ भी दे सकता था, मैंने धनंजय मुंडे को दिया। कुछ लोगों ने हमारी पार्टी को तोड़ने में अहम भूमिका निभाई। उन्हें हराना होगा। पवार ने कहा, ''एक बार पंडित मुंडे अपने बेटे धनंजय के साथ मेरे पास आए और मदद मांगी। जब वह मुसीबत में थे तो उन्हें मेरी तरफ से मदद मिली। मैंने उन्हें (धनंजय मुंडे) एमएलसी (विधान पार्षद), परिषद में एलओपी (नेता प्रतिपक्ष), राज्य मंत्री बनाया। मैं उन्हें बीड में प्रमुख पद देना चाहता था।

दृष्टि कोण

किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता सोशल मीडिया

किशोरों पर सोशल मीडिया के प्रभाव ने वैश्विक स्तर पर गंभीर चिंताएँ पैदा की हैं, इस बात पर बहस चल रही है कि क्या आयु प्रतिबंध इसके संभावित नुकसानों को प्रभावी ढंग से दूर कर सकते हैं या अनपेक्षित परिणामों को जन्म दे सकते हैं। साथियों के साथ बातचीत और समुदाय निर्माण की सुविधा देता है, सामाजिक कौशल विकास में सहायता करता है। प्यू रिसर्च (2023) ने पाया कि 71% किशोर सोशल मीडिया के माध्यम से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं। युवाओं को पहचान तलाशने और ख़ुद को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। सोशल मीडिया इंटरनेट साइट्स और ऐप्स के लिए एक शब्द है जिसका उपयोग आप अपने द्वारा बनाई गई सामग्री को साझा करने के लिए कर सकते हैं। सोशल मीडिया आपको दूसरों द्वारा पोस्ट की गई सामग्री पर प्रतिक्रिया देने की सुविधा भी देता है। इसमें दूसरों द्वारा पोस्ट की गई तस्वीरें, टेक्स्ट, प्रतिक्रियाएँ या टिप्पणियाँ और जानकारी के लिंक शामिल हो सकते हैं। सोशल मीडिया साइट्स के भीतर ऑनलाइन शेयरिंग कई लोगों को दोस्तों के संपर्क में रहने या नए लोगों से जुड़ने में मदद करती है और यह अन्य आयु समूहों की तुलना में किशोरों के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण हो सकता है। दोस्ती किशोरों को समर्थित महसूस करने में मदद करती है और उनकी पहचान बनाने में भूमिका निभाती है। इसलिए, यह सोचना स्वाभाविक है कि सोशल मीडिया का उपयोग किशोरों को कैसे प्रभावित कर सकता है। सोशल मीडिया बहुत से किशोरों के दैनिक जीवन का एक बड़ा हिस्सा है। कितना बड़ा? 13 से 17 साल के बच्चों पर 2024 में किए गए एक सर्वेक्षण से इसका सुराग मिलता है। लगभग 1, 300 प्रतिक्रियाओं के आधार पर, सर्वेक्षण में पाया गया कि 35% किशोर दिन में कई बार से ज़्यादा पाँच सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म में से कम से कम एक का इस्तेमाल करते हैं। पाँच सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म हैं: यूट्यूब, टिकटोक, फेसबुक, इंस्टाग्राम और स्नैपचैट। सोशल मीडिया सभी किशोरों को एक जैसा प्रभावित नहीं करता है। सोशल मीडिया का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर स्वस्थ और अस्वस्थ प्रभावों से जुड़ा हुआ है। ये प्रभाव एक किशोर से दूसरे किशोर में अलग-अलग होते हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया का प्रभाव चीज़ों पर निर्भर करता है। यूनिसेफ की रिपोर्ट (2022) से पता चलता है कि सोशल मीडिया 62% किशोरों में आत्म-पहचान को बढ़ावा देता है। विशाल शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच सक्षम करता है, डिजिटल साक्षरता और कौशल को बढ़ाता है। लिंक्डइन और फ़ेसबुक युवाओं के लिए डिजिटल कौशल पर कार्यशालाएँ प्रदान करते हैं। हाशिए के समूहों के लिए समर्थन और समझ पाने के लिए सुरक्षित स्थान बनाता है WHO (2022) ने सीमित सोशल मीडिया एक्सपोजर वाले युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य जोखिमों में 20% की कमी की रिपोर्ट की है। अनुचित या खतरनाक सामग्री के संपर्क को सीमित करता है, जिससे नकारात्मक प्रभावों के जोखिम कम होते हैं। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (2023) ने पाया कि सोशल मीडिया का उपयोग साइबरबुलिंग के जोखिम को 30% तक बढ़ाता है। युवा उपयोगकर्ताओं को लक्षित करने वाले शिकारी व्यवहार और शोषण के जोखिमों को कम करने में मदद करता है। नेशनल सेंटर फॉर मिसिंग एंड एक्सप्लॉइटेड चिल्ड्रन की 2023 की रिपोर्ट में युवाओं से जुड़े ऑनलाइन शोषण के मामलों में 15% की वृद्धि पर प्रकाश डाला गया है। अत्यधिक स्क्रीन समय को नियंत्रित करता है, बेहतर स्वास्थ्य और ऑफ़लाइन जुड़ाव का समर्थन करता है। डिजिटल मीडिया पर दक्षिण कोरिया के नियम (2021) नाबालिगों में स्क्रीन की लत को सीमित करते हैं। आयु सत्यापन प्रणाली जैसे आयु प्रतिबंधों के अनपेक्षित परिणाम अक्सर दरकिनार कर दिए जाते हैं, जिससे प्रतिबंधों को लागू करना मुश्किल हो जाता है। यू.के. के अध्ययन (2022) से पता चलता है कि 30% किशोर न्यूनतम प्रयास से आयु जाँच को दरकिनार कर देते हैं। आयु प्रतिबंध डिजिटल शिक्षा को सीमित कर सकते हैं, जिससे युवा ज़िम्मेदार ऑनलाइन बातचीत के लिए तैयार नहीं हो पाते। पहुँच को प्रतिबंधित करने से किशोर अलग-थलग पड़ सकते हैं, जिससे वे महत्त्वपूर्ण सामाजिक संवादों में शामिल नहीं हो पाते। यूनिसेफ (2023) ने पाया कि सोशल मीडिया समावेशिता में मदद करता है, खासकर हाशिए पर पड़े समूहों के लिए। प्रमुख प्लेटफ़ॉर्म पर प्रतिबंध युवाओं को कम विनियमित, संभावित रूप से अधिक हानिकारक साइटों की ओर धकेल सकते हैं। प्रतिबंध वाले देशों में, किशोर कम सुरक्षा नियंत्रण वाले आला प्लेटफ़ॉर्म की ओर मुड़ गए हैं, जिससे जोखिम बढ़ गया है। डिजिटल साक्षरता और जागरूकता को बढ़ावा दें युवाओं को सुरक्षित ऑनलाइन प्रथाओं के बारे में शिक्षित करने के लिए स्कूलों में व्यापक डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम शुरू करें। फ़िनलैंड का मीडिया साक्षरता सप्ताह छात्रों को डिजिटल सुरक्षा और आलोचनात्मक सोच में प्रशिक्षित करता है। माता-पिता को अपने बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग की निगरानी और मार्गदर्शन करने में मदद करने के लिए संसाधन प्रदान करें।

कुछ अलग

मारक महंगाई

केंद्रीय बैंक व सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद, देश में खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतों के चलते खुदरा मुद्रास्फीति पिछले चौदह महीनों की ऊंचाई पर जा पहुंची हैं। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय यानी एनएसओ की ओर से मंगलवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार खुदरा महंगाई दर भारतीय रिजर्व बैंक के छह फीसदी के संतोषजनक स्तर से ऊपर निकल गई है। आंकड़ों के अनुसार अक्तूबर में खुदरा मुद्रास्फीति 6.21 प्रतिशत रही। ऐसे में खुदरा महंगाई के आरबीआई द्वारा निर्धारित संतोषजनक स्तर से ऊपर निकल जाने से इस साल दिसंबर में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदें कमोबेश धाराशाई हो गई हैं। दरअसल, खुदरा महंगाई में यह वृद्धि सब्जियों,फलों, वसायुक्त वस्तुओं व तेलों की कीमतों में तेजी की वजह से हुई है। जो कि भारत की खाद्य आपूर्ति शृंखला में व्याप्त गहरी संरचनात्मक चुनौतियों का खुलासा करती है। साथ ही स्थिति में सुधार के लिये अविलंब सरकारी हस्तक्षेप की जरूरत को बताती है। निश्चित रूप से अक्तबूर की खाद्य मुद्रास्फीति दर का इस साल सबसे अधिक 10.87 फीसदी होना नीति-नियंताओं के लिये चिंता का विषय होना चाहिए। वहीं दूसरी ओर यह बढ़ती महंगाई एक महत्वपूर्ण संकेत भी देती है कि अस्थिर खाद्य कीमतें देश की संपूर्ण आर्थिक स्थिरता को कैसे बाधित कर सकती है। विशेष रूप से टमाटर और तेल जैसी वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी, कुछ प्रमुख वस्तुओं और आयात की जाने वाली चीजों पर देश की निर्भरता हमारी कमजोरी को ही दर्शाती हैं। इसमें दो राय नहीं कि हर साल वर्षा ऋतु में सब्जी उत्पादक राज्यों में अतिवृष्टि, बाढ़ आदि के कारण उत्पादन व आपूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाती है। वहीं अनियमित और ज्यादा बारिश से सब्जी व फलों को होने वाले नुकसान ने बता दिया है कि जलवायु परिवर्तन के घातक प्रभावों ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दे दी है। जिसकी आशंका हम कई वर्षों से जताते भी रहे हैं। अब इस चुनौती का युद्ध स्तर पर मुकाबला करने की जरूरत है। बहरहाल, हमें गंभीरता से विचार करना होगा कि ग्लोबल वार्मिंग प्रभावों से सब्जियों के उत्पादन व आपूर्ति को कैसे सुरक्षित करें। ऐसे वक्त में जब कृषि उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन का सीधा प्रभाव नजर आया है, हमें मौसम के चरम में बेहतर उत्पादन देने वाली सब्जियों व अन्य फसलों की उन्नत किस्में तैयार करनी होंगी। साथ ही बेहतर भंडारण सुविधाएं जुटानी होंगी। जिससे बिचौलियों की मुनाफाखोरी पर अंकुश लगाकर कृत्रिम महंगाई को रोका जा सकेगा। हम व्यावहारिक आयात रणनीति को अपनाते हुए सब्जियों व फलों के आपूर्ति पक्ष को मजबूत करें। कालांतर ये प्रयास खाद्य मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने में मददगार होंगे। हमें औद्योगिक उत्पादन में भी तेजी लाने की जरूरत है ताकि लोगों की आय बढ़ने से क्रय शक्ति में इजाफा हो। हालांकि, सितंबर में औद्योगिक उत्पादन में तीन फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है, लेकिन यह आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं है। दरअसल, कम वृद्धि उच्च मुद्रास्फीति के कारण उत्पन्न होने वाले आर्थिक दबाव को कम करने में सहायक नहीं हो सकती है। वहीं औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में यह मामूली वृद्धि हमारी अर्थव्यवस्था में सुस्ती को बताती है। निस्संदेह, मुद्रास्फीति में कमी किए बिना सुधार की गति को बनाये रखने में मुश्किल है। ऐसे में केंद्रीय बैंक द्वारा ब्याज दरों में कटौती की संभावना कम होने से उपभोक्ता मांग कम हो सकती है।

देश दुनीया से

दिखावे वाले हाथी दांत सरीखे स्मॉग टॉवर्स

बीते साल उच्चतम न्यायालय ने यह जानकारी मिलने पर कि दिल्ली के कनाट प्लेस में स्थित स्मॉग टॉवर बंद पड़ा है, तत्काल उसे चालू करने का आदेश दिया। अदालत ने पूछा कि गंभीर प्रदूषण की स्थिति में स्मॉग टॉवर को असफल बताकर कैसे बंद किया जा सकता है। इसके बाद, डीपीसीसी के चेयरमैन को रियल टाइम आंकड़ों के साथ न्यायालय में उपस्थित होने का निर्देश दिया गया। इस दौरान यह भी सामने आया कि आनंद विहार का स्मॉग टॉवर भी बंद था, जो प्रदूषण से प्रभावित एक प्रमुख क्षेत्र है। अक्तूबर, 2024 में दिल्ली में प्रदूषण की स्थिति और भी गंभीर हो गई है, लेकिन तात्कालिक कार्रवाई न तो न्यायालयों में हो रही है और न ही सरकारों में। दिवाली से पहले ही दिल्ली भारत का सबसे प्रदूषित शहर बन चुका है, और स्मॉग टॉवर्स महीनों से बंद हैं, जिनका मुख्य कारण संचालन और कर्मचारियों के वेतन के लिए धन की कमी है। कनाट प्लेस में खुले में रोजगार करते श्रमिकों का कहना है कि ठंड में बढ़ते प्रदूषण के बीच बंद स्मॉग टॉवरों को फिर से चालू किया जाना चाहिए, क्योंकि पिछले साल इससे उन्हें साफ हवा मिली थी। इसी तरह, आनंद विहार में लगे केंद्र सरकार द्वारा संचालित स्मॉग टॉवर का हाल भी अच्छा नहीं है, जहां एक्यूआई 400 तक पहुंचता रहता है। दिल्ली सरकार के विंटर एक्शन प्लान्स में 2021 में स्मॉग टावर्स लगाने के बाद से 2022, 2023 और 2024 में इन टॉवर्स पर चुप्पी रही है, जो स्वाभाविक ही था। उच्चतम न्यायालय के आदेश पर 2021 में कनाट प्लेस और आनंद विहार में स्मॉग टॉवर्स का उद्घाटन किया गया था, और यह दो साल का पायलट प्रोजेक्ट था। चूंकि मामला अभी भी उच्चतम न्यायालय में लंबित है, इस पर अंतिम निर्देश मिलने के बाद ही यह तय होगा कि दिल्ली में अन्य स्थानों पर भी स्मॉग टॉवर्स लगाए जाएंगे या नहीं। उच्चतम न्यायालय के आदेश पर आईआईटी मुंबई ने सीपीसीबी को स्मॉग टॉवर्स पर प्रस्ताव सौंपा था। जब यह खबर सामने आई कि आईआईटी मुंबई इस परियोजना से पीछे हटने जा रहा है, तो जस्टिस अरुण मिश्रा की बेंच ने जुलाई 2020 में भारत के सॉलिसीटर जनरल तुषार मेहता के माध्यम से उसे चेतावनी दी कि यह कार्रवाई उच्चतम न्यायालय के आदेश की अवहेलना मानी जाएगी, और इसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इसके बाद, आईआईटी मुंबई ने परियोजना पर काम जारी रखा। 2023 में स्मॉग टावर्स के दो साल पूरे होने पर, आईआईटी मुंबई ने 30 सितंबर, 2023 को एक रिपोर्ट तैयार की, और पर्यावरण मंत्री के निर्देश पर यह फाइनल रिपोर्ट उच्चतम न्यायालय में प्रस्तुत की गई। सात नवम्बर, 2023 को उच्चतम न्यायालय ने सवाल उठाया कि स्मॉग टॉवर को असफल कैसे माना जा सकता है, जबकि दो साल के पायलट प्रोजेक्ट की रिपोर्ट में आठ महीने तक ये टॉवर बंद थे। इसके अलावा, कनाट प्लेस का स्मॉग टॉवर एक नई तकनीक पर आधारित था, जिससे अनुभव का अभाव था, और अक्तूबर 2022 तक इसके संचालन के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश और प्रोटोकॉल भी तैयार नहीं हो पाए थे। इसी संदर्भ में, 13 नवम्बर 2021 को सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने दिल्ली सरकार से यह सवाल पूछा था कि जब दिल्ली में गैस चेम्बर जैसी स्थिति है, तो क्या स्मॉग टावर वास्तव में काम कर रहे हैं, जैसा कि सरकार दावा करती है। सुप्रीम कोर्ट ने यह माना है कि स्मॉग टावरों से दिल्ली में गैस चेम्बर जैसी खतरनाक स्थितियों में आम लोगों को राहत मिलती है। कोर्ट ने यह भी बार-बार कहा है कि साफ हवा में सांस लेना नागरिकों का मौलिक अधिकार है। स्मॉग टॉवर से छनी हुई हवा में पीएम 2.5 और पीएम 10 जैसे प्रदूषक कणों की कमी के कारण स्मॉग की घातकता कम होती है, जिससे खुली हवा में व्यायाम और सैर के दौरान जोखिम घटता है, और सांस की बीमारियों से पीड़ित लोग भी राहत महसूस कर सकते हैं। फिलहाल, स्मॉग टॉवरों का निर्माण और संचालन इतना महंगा है कि दिल्ली सरकार इन्हें अपने खर्चे पर चलाने से बच रही है। एक साल में इनका रखरखाव ही ढाई करोड़ रुपये तक हो सकता है। कनाट प्लेस का स्मॉग टावर 22.9 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित हुआ था, और इसके रखरखाव पर पर्यावरण विभाग ने लगभग 2.6 करोड़ रुपये खर्च किए। डीपीसीसी के अध्यक्ष ने नवंबर 2023 में यह स्वीकार किया कि स्मॉग टॉवरों से लाभ उठाने के लिए उनके बहुत पास रहना होगा, और दिल्ली में साफ हवा की आपूर्ति के लिए हजारों टॉवर लगाने होंगे। 4 नवंबर, 2023 को पर्यावरण मंत्री ने कनाट प्लेस स्मॉग टॉवर को आठ महीने से बंद रखने के लिए डीपीसीसी को जिम्मेदार ठहराया। इसी दौरान आनंद विहार का टॉवर भी बंद था। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर लगे स्मॉग टॉवरों का भविष्य क्या होगा, यह सवाल उठ रहा है। इसके अलावा, फिल्टरों की सफाई करते समय प्रदूषित हवा को बाहर छोड़ा जाता है, जिससे नए प्रदूषण के क्षेत्र उत्पन्न हो सकते हैं।

आप का नजरीया

प्रदूषकों को दंड

ऐसे वक्त में जब केंद्र सरकार जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने तथा स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहन देने के लिये प्रतिबद्ध है, तो देश के विभिन्न संस्थानों व विभागों को भी पहल करनी चाहिए। सरकार के प्रयासों के बीच राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण यानी एनजीटी द्वारा वायु व मिट्टी प्रदूषण फैलाने के लिये पानीपत थर्मल पावर स्टेशन पर 6.93 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाना, तमाम प्रदूषक उद्योगों के लिये सबक है। ट्रिब्यूनल की कार्रवाई कानूनों का उल्लंघन करके पर्यावरण व जन-स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वालों के लिये संदेश है कि लक्ष्मण रेखा पार की तो बख्शे नहीं जाएंगे। पर्यावरण को क्षति पहुंचाने पर भारी मुआवजा देना होगा। दरअसल, इस थर्मल प्लांट से निकलने वाली राख आस-पास के ग्रामीणों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रही है। जिससे श्वसन समेत कई तरह के रोग बढ़ रहे हैं। इतना ही नहीं सड़कों पर प्रदूषण के चलते दृश्यता कम होने से दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है। वहीं दूसरी ओर एनजीटी ने थर्मल प्लांट के प्रबंधकों द्वारा पर्यावरण की क्षतिपूर्ति के लिये पेड़ों को लगाने में की गई खानापूर्ति को आड़े हाथ लिया। ट्रिब्यूनल ने कहा कि आप ने पौधे लगाने का दावा तो किया है लेकिन क्या सुनिश्चित किया है कि उन पौधों में से कितने पेड़ बन पाए। हरित न्यायाधिकरण का कहना था कि पौधरोपण से ज्यादा महत्वपूर्ण पेड़ों की उत्तरजीविता सुनिश्चित करना है। यह उपाय पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले प्रदूषकों के निवारण के आधे-अधूरे प्रयासों को ही उजागर करता है। निश्चित रूप से एनजीटी की जुर्माना लगाने की यह कार्रवाई प्रदूषण फैलाने वाली औद्योगिक इकाइयों को अपने तौर-तरीके बदलने को बाध्य करेगी। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने पिछले एक दशक में तेल व गैस क्षेत्र में राजकोषीय सब्सिडी कम करने की दिशा में सार्थक पहल की है। लेकिन अभी भी स्वच्छ ऊर्जा से बिजली क्षमता का आधा हासिल करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य प्राप्त करने हेतु बड़े प्रयासों की जरूरत है। तभी भारत वर्ष 2030 तक गैर जीवाश्म ईंधन स्रोतों से ऊर्जा हासिल करने के लक्ष्य को हासिल कर पाएगा। जलवायु परिवर्तन सम्मेलन तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन लगातार जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता व सब्सिडी कम करने पर बल देते रहे हैं। निस्संदेह, स्वच्छ ऊर्जा के स्थायी विकल्पों में निवेश करने से प्रदूषण से पैदा होने वाली बीमारियों पर अंकुश लग सकेगा। इसके साथ ही हम लक्षित कार्बन उत्सर्जन में भी कटौती कर सकते हैं। जलवायु परिवर्तन का दंश झेल रही दुनिया में जन स्वास्थ्य हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिये जरूरी है कि प्रदूषण के कारकों की नियमित निगरानी हो व कानून के क्रियान्वयन में सख्ती से उद्योगों की जवाबदेही तय की जा सकेगी। जिससे हम प्रकृति के अनमोल संसाधनों हवा, पानी और मिट्टी को जहरीला बनने से रोक पाएंगे। इसमें दो राय नहीं कि पर्यावरण तथा स्वास्थ्य के आपातकाल से बचने के लिये शून्य सहिष्णुता का दृष्टिकोण नितांत जरूरी है। हाल में पराली जलाने पर जुर्माना दुगना करने की नीति को इसी आलोक में देखना चाहिए।

नेपाल के प्रधानमंत्री का बयान, मेरे चीन भ्रमण से भारत के साथ रिश्तों पर कोई असर नहीं

काठमांडू

नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने अपने चीन भ्रमण के बारे में कहा है कि उनके इस दौरे से भारत के साथ संबंधों पर कोई असर नहीं पड़ेगा। ओली ने कहा कि भारत के साथ नेपाल के अच्छे संबंध हैं, जो खराब नहीं हो सकते।

काठमांडू में आयोजित कांतिपुर कॉन्क्लेव के समापन समारोह में गुरुवार को प्रधानमंत्री ओली ने कहा कि नेपाल एक सार्वभौम देश है और उसके प्रधानमंत्री का यह अधिकार है कि वह सुनिश्चित करे कि उसे किस देश का भ्रमण पहले करना है।

उन्होंने कहा कि मेरे चीन भ्रमण से भारत को कोई समस्या होगी, यह मुझे नहीं लगता है। ओली ने दावा किया कि नेपाल अपने दोनों पड़ोसी देशों के साथ संतुलित संबंध रखने को प्राथमिकता देता है।

इस कॉन्क्लेव में पूछे गए सवालों का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री ओली ने भारत के बजाय पहले चीन दौरे पर जाने की बात पर ओली ने कहा कि जहां से पहले निमंत्रण आया, वहीं तो जाएगा। जहां से निमंत्रण ही नहीं आया तो वहां कैसे जाया जा सकता है। ओली ने कहा कि दिल्ली से जब बुलावा आएगा तो वो जाने के लिए तैयार हैं।

अपनी सरकार के गिरने को लेकर राजनीतिक गलियारों में चल रही चर्चा पर प्रधानमंत्री ओली ने कहा कि जिस दिन से मैंने सत्ता संभाली है, उसी दिन से विरोधी सरकार गिरने की अफवाह फैला रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजनीतिक स्थिरता के लिए दो बड़े दलों की सरकार बनी है। ओली ने कहा कि दो बड़े दलों के मिलने से छोटी-छोटी पार्टियों का बार्गेनिंग पावर खत्म हो गया है, इसलिए बार-बार सरकार गिरने की झूठी अफवाह फैलाई जा रही है।

न्यूज ब्रीफ

लेबनान के गांव पर इजरायली हवाई हमले में 12 पैरामेडिक्स की मौत

बेरूत। पूर्वी लेबनान के बालेबेक इलाके के गांव ड्यूरिस में हुई इजरायली हवाई हमले में नागरिक रक्षा दल के 12 पैरामेडिक्स की मौत हो गई है। लेबनान के गवर्नर बशीर खोदोर ने खुद इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना की पुष्टि की और बताया कि मलबेने से 12 बचावकर्मियों के शव निकाले गए हैं। जिसे लोग हृदयविदारक घटना के रूप में याद करेंगे। इस हमले के बाद क्षेत्र में गहरा दुख छाया हुआ है और सेना द्वारा शुरू की गई संघर्ष की स्थिति भी नाजुक हो गई है। इजरायली सेना ने लेबनान पर हवाई हमले और जमीनी ऑपरेशन की शुरुआत की है, जिसके परिणामस्वरूप कई लोगों की मौत हुई है और अनेकों को घायल किया गया है। इस संघर्ष में ईरान और इजरायल के बीच टकराव भी देखा जा रहा है। इरान के एक शीर्ष सैन्य कमांडर ने इजरायल के द्वारा किए गए हमलों का जवाब देने का दावा किया है, जिससे संघर्ष की गंभीरता और उनके बीच के तनाव का दर्शन मिलता है। इस स्थिति में पूरी क्षमता के साथ संभावनाओं की चर्चा जरूरी है ताकि दूरदर्शिता और कुशल नीति के माध्यम से इस क्रियाशील संघर्ष को शांति और सुरक्षा में परिणामित किया जा सके। यह एक महत्वपूर्ण समाचार है जो हमें इस खतरनाक स्थिति की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इस त्रासदी के पीड़ितों के परिवारों के प्रति हमारी संवेदनाएं हैं और हमें सामाजिक सद्भाव के साथ उनका समर्थन करना चाहिए। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को एक सख्त संदेश के रूप में और संघर्ष के संदेश में देखा जा सकता है, इसलिए हमें सभी को एकसाथ मिलकर एक और उजागर बुद्धिमानी से संघर्ष का सामना करना होगा।

एलन मस्क की नई राजनीति : ट्रंप के साथ अमेरिका-ईरान संबंध सुधारने की पहल

वाशिंगटन। टेक्नोलॉजी और स्पेस इंडस्ट्री में बदलाव लाने वाले एलन मस्क अब राजनीतिक क्षेत्र में कदम रखते दिखाई दे रहे हैं। हाल ही में मस्क ने ईरान-अमेरिका के बीच तनाव को कम करने की कोशिश के तहत संयुक्त राष्ट्र में ईरानी राजदूत से मुलाकात की। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार यह मुलाकात गुप्त स्थान पर हुई, जिसमें दोनों के बीच करीब एक घंटे तक चर्चा चली। मस्क की यह पहल ऐसे समय में आई है जब अमेरिका के आगामी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप के समर्थक के रूप में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई है। ट्रंप ने भारतीय मूल के विवेक रामास्वामी के साथ मिलकर मस्क को डिपार्टमेंट ऑफ एफिशिएंसी का कार्यभार सौंपा है, जिसमें मस्क का मुख्य उद्देश्य नौकरशाही कम करना और सरकारी खर्चों में कटौती करना है। ट्रंप के पिछले कार्यकाल में ईरान-अमेरिका संबंधों में आई तल्खी के मद्देनजर, मस्क का यह कदम इन तनावों को कम करने की दिशा में एक कोशिश माना जा रहा है। ट्रंप के पहले कार्यकाल में ईरान के साथ परमाणु समझौते को तोड़ने और जनरल कासिम सुलेमानी की हत्या के बाद दोनों देशों में तनावपूर्ण हालात पैदा हो गए थे। इन घटनाओं के बाद ईरान पर लगाए गए अमेरिकी प्रतिबंधों ने भारत के लिए भी समस्याएं खड़ी कीं, क्योंकि इन प्रतिबंधों ने भारत को ईरान से तेल आयात और चाबहार पोर्ट परियोजना में निवेश में रुकावटें पैदा कीं। भारत के लिए साबित होगा लाभदायक भारत के लिए अमेरिका-ईरान संबंधों में सुधार रणनीतिक रूप से लाभदायक साबित हो सकता है।

श्रीलंका के संसदीय चुनाव में राष्ट्रपति दिसानायके की पार्टी दो-तिहाई बहुमत के करीब

कोलंबो। श्रीलंका के गुरुवार को हुए संसदीय चुनाव में राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके के नेतृत्व

वाली नेशनल पीपुल्स पावर (एनपीपी) को अब तक जीती गई सीटों की संख्या के आधार पर संसद में दो-तिहाई बहुमत मिलने का अनुमान है। यह पहली बार है कि किसी एक पार्टी ने आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के तहत यह उपलब्धि हासिल की। यहां के समाचार ने अब से कुछ देर पहले अपनी वेबसाइट पर अपडेट किए गए मतगणना के आंकड़ों से यह अनुमान जताया है। इसमें कहा गया है कि एनपीपी ने कैंडी जिले में नौ सीटें हासिल की हैं। समागी जन बालवेगया (एसजेबी) को दो और न्यू डेमोक्रेटिक फ्रंट (एनडीएफ) को एक सीट हासिल हुई है। इसके अलावा एनपीपी ने जाफना जिले में तीन सीटें हासिल कीं, जबकि इलंकाई तमिल अरासु कच्ची (आईटीएके), ऑल सीलोन तमिल कांग्रेस (एसीटीसी) और इंडिपेंडेंट ग्रुप 17 ने एक-एक सीट हासिल की है। एनपीपी ने रत्नापुरा जिले में भी 8 सीटें हासिल की हैं, जबकि समागी जन बालवेगया (एसजेबी) को तीन सीटें मिली हैं।

ट्रंप के एक बयान से महिलाओं में भय व्याप्त, गर्भनिरोधक साधनों की बढ़ रही है मांग

वाशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रम्प की जीत के बाद महिलाओं में बर्थ कंट्रोल पिल यानी गर्भनिरोधक दवाओं की मांग बढ़ी हैं। इसके अलावा इमरजेंसी कॉन्ट्रासेप्शन (आपातकालीन गर्भनिरोधक) दवाओं की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। वजह ये है कि साल 2022 में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने अबोर्शन राइट्स को खत्म कर दिया था। उस समय ट्रम्प ने इस फैसले का समर्थन किया था। अब महिलाओं को इस बात का डर है कि ट्रम्प सरकार के आने से उनके अबॉर्शन राइट्स पर असर पड़ सकता है। यही वजह है कि अचानक 600 प्रतिशत गर्भनिरोधक दवाओं की मांग बढ़ गई है।

हालांकि बाद में सोशल मीडिया पर ट्रंप ने स्पष्ट किया था कि उनका कभी भी अबोर्शन राइट्स और अन्य गर्भ निरोधकों को प्रतिबंधित करने का इरादा नहीं रहा। लेकिन यह अभी स्पष्ट नहीं है कि ट्रंप के इस कार्यकाल में गर्भनिरोधक उपायों को लेकर किस प्रकार के नियम बनाए जाएंगे, लेकिन महिलाओं में आशंका बनी हुई है। चुनाव के बाद एक सर्वे में यह पाया गया कि 50 प्रतिशत से अधिक महिलाएं इस बात को लेकर चिंतित हैं कि उन्हें सुरक्षित गर्भपात और उससे जुड़ी स्वास्थ्य सेवाएं नहीं मिलेंगी। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाएं उन राज्यों में जाने पर विचार कर रही है जहां अबॉर्शन से जुड़े कानून आसान है। इसके तहत उन्हें आसानी से अबॉर्शन से जुड़ी सेवाएं मिल सकती हैं। ड्यूक विश्वविद्यालय के ओबी-जीवाईएन डॉ. क्लेटन अल्फोंसो ने बताया कि चुनाव के तुरंत बाद, उन्होंने अपने दो रोगियों से आईयूडी (गर्भ निरोधक उपकरण) बदलने के अनुरोध प्राप्त किए और कुछ महिलाओं ने अपनी ट्यूब बंधवाने के लिए भी पूछताछ की। चुनाव के बाद गर्भ निरोधक साधनों की मांग बढ़ गई है। एक आपातकालीन गर्भनिरोधक कंपनी ने बताया कि ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के 60 घंटों के भीतर उनकी बिक्री में 966 प्रतिशत की वृद्धि हुई। महिलाओं की बढ़ती चिंताओं का एक कारण यह है कि ट्रंप पर गर्भपात विरोधी समर्थक गर्भनिरोधक विकल्पों पर प्रतिबंध लगाने का दबाव डाल रहे हैं।

डोनाल्ड ट्रंप ने टॉड ब्लैंच को बनाया डिप्टी अटॉर्नी जनरल

वाशिंगटन। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के न्याय विभाग में वकील टॉड ब्लैंच भी नजर आएंगे। नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रंप ने टॉड ब्लैंच को उप अटॉर्नी जनरल के रूप में चुना है। मैनहट्टन में पूर्व पर्यवेक्षण संघीय अभियोजक ब्लैंच ने कई अभियोगों में ट्रंप का कानूनी बचाव किया है। नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप ने गुरुवार को कहा कि न्याय विभाग में ब्लैंच डिप्टी अटॉर्नी जनरल होंगे। उल्लेखनीय है कि एक दिन पहले ट्रंप ने मैट गेट्ज़ का चयन न्याय विभाग के अटॉर्नी जनरल के रूप में किया है। ट्रंप ने ब्लैंच के चयन की घोषणा न्यूयॉर्क के दक्षिणी जिले में की। उन्होंने कहा कि टॉड उत्कृष्ट वकील हैं। वह न्याय विभाग में महत्वपूर्ण अधिकारी होंगे। वह लंबे समय से चरमराई न्याय प्रणाली को दुरुस्त करेंगे। उल्लेखनीय है कि ब्लैंच वॉल स्ट्रीट पर एक प्रतिष्ठित लॉ फर्म में भागीदार रहे हैं।

स्वीडन के वैज्ञानिकों ने विकसित किया नया एआई टूल

स्टॉकहोम

स्वीडन की लुंड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने एक नया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल विकसित किया है। यह टूल बगैर जीपीएस के स्तेमाल किए व्यक्ति की लोकेशन का पता लगा सकता है। यह नई तकनीक मानव शरीर पर मौजूद सूक्ष्म जीवों (जैसे बैक्टीरिया और कवक) की संरचना का विश्लेषण करके स्थान की जानकारी देती है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि इस नई प्रणाली का उपयोग, जो माइक्रोबायोम-जियोग्राफिकल पॉपुलेशन स्ट्रक्चर (एम-जीपीएस) के नाम से जानी जा रही है, पारंपरिक जीपीएस सिस्टम की तुलना में एक क्रांतिकारी विकल्प हो सकता है। शोधकर्ताओं ने इस तकनीक को विशेष रूप से उन परिस्थितियों में काम करने के लिए डिज़ाइन किया है, जहां जीपीएस सिग्नल उपलब्ध नहीं होते, जैसे बंद इमारतों या भूमिगत स्थानों पर। शोध के प्रमुख वैज्ञानिक एरन एल्हाइक के अनुसार, मानव शरीर पर सूक्ष्म जीव, जिनकी संरचना और प्रकार वातावरण के हिसाब से बदलते रहते हैं, उस व्यक्ति की भौगोलिक स्थिति का सटीक अनुमान लगाने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, समुद्र तट पर मौजूद व्यक्ति के शरीर पर रहने वाले जीव रेलवे स्टेशन या किसी अन्य जगह पर पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवों से भिन्न होते हैं। इस एआई तकनीक का इस्तेमाल करने के लिए विशेष प्रकार के गैजेट की आवश्यकता होगी।

इस गैजेट को उस स्थान की माइक्रोबियल संरचना के आधार पर डेटा एकत्रित करने और विश्लेषण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे यह व्यक्ति के स्थान की सटीक जानकारी दे सकता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि निकट भविष्य में इसे मोबाइल में भी एकीकृत किया जा सकेगा, जिससे स्मार्टफोन पर ही सूक्ष्म जीवों का विश्लेषण करके लोकेशन का पता लगाना संभव होगा। मोबाइल स्क्रीन को इस तरह डिज़ाइन किया जाएगा कि वह उंगलियों पर मौजूद जीवों को स्कैन कर सके, जिससे बिना जीपीएस की आवश्यकता के व्यक्ति की स्थिति का पता लगाया जा सकेगा।

अमेरिका में नागरिकों का देश छोड़ने का बढ़ गया चलन

कैलिफोर्निया

हाल ही में अमेरिका के नागरिकों के बीच अपने देश को छोड़कर अन्य देशों में बसने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है, और इसके पीछे एक प्रमुख कारण है डोनाल्ड ट्रंप की वापसी। ट्रंप की राष्ट्रपति पद पर वापसी के बाद अमेरिका में नागरिकों का देश छोड़ने का चलन बढ़ गया है। इसके कारणों में सबसे महत्वपूर्ण ट्रंप की कुछ नीतियाँ मानी जा रही हैं।

उनका कड़ा आप्रवासन रुख, महिलाओं के अधिकारों पर उनकी नीतियां, और अबॉर्शन जैसे संवेदनशील मुद्दों पर उनके फैसले ने देश में एक बड़े वर्ग को असहज कर दिया है। इस असहमति के चलते लोग अब अन्य देशों में बेहतर जीवन की तलाश करने लगे हैं। खासकर, अमेरिका का लिबरल वर्ग जो खुद को ट्रंप की नीतियों के खिलाफ पाता है, वह अपने देश छोड़ने के लिए तैयार हो गया है। दरअसल, अमेरिका में एक विशेष प्रकार का वीजा प्रणाली है, जिससे अमेरिकी नागरिकों को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में काम करने की अनुमति मिलती है। ट्रंप के सत्ता में आने के बाद इस वीजा के लिए आवेदन करने की संख्या में वृद्धि हुई है।

इंसानों और चूहों के जीन की संरचना काफी हद तक समान

लंदन

अमेरिका की फाउंडेशन फॉर बायोमेडिकल रिसर्च (एफबीआर) के अनुसार, इंसानों और लैब में इस्तेमाल होने वाले चूहों के बीच जीन की संरचना काफी हद तक मिलती है, जो लगभग 95 प्रतिशत तक समान है। यही कारण है कि प्रयोगशालाओं में अधिकतर चिकित्सा शोधों के लिए चूहों का ही चयन किया जाता है।

एफबीआर की रिपोर्ट के मुताबिक, 95 प्रतिशत से अधिक प्रयोगशाला के जानवर, विशेष रूप से चूहों को, विशेष रूप से शोध कार्य के लिए ही पाला और तैयार किया जाता है। इन चूहों का चयन इस आधार पर किया जाता है कि इनके जेनेटिक, बायोलॉजिकल, और व्यवहारगत गुण इंसानों से मेल खाते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि चूहों में इंसानी स्थितियों के कई लक्षण देखे जा सकते हैं, जिससे चिकित्सा परीक्षणों के परिणामों की भविष्यवाणी करना सरल हो जाता है। इस प्रक्रिया में उपयोग होने वाले चूहों को विशेष रूप से इनब्रेड किया जाता है, ताकि सभी चूहों में जैविक समानता बनी रहे और परिणाम एक जैसे हों। यही नहीं, चूहों के छोटे आकार और कम देखभाल की आवश्यकता उन्हें प्रयोगशालाओं के लिए आदर्श बना देती है। इनके ऊपर किए गए प्रयोगों का असर भी जल्द देखने को मिलता है, जो शोध प्रक्रिया को तेज और कुशल बनाता है। हालांकि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ कई वैकल्पिक शोध पद्धतियाँ भी विकसित हो चुकी हैं। कंप्यूटर मॉडल, सेल कल्चर, और अन्य तकनीकों के जरिए शोध में जानवरों के उपयोग को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन एफबीआर के अनुसार, इन तकनीकों से पूरी तरह से प्रयोगशाला में जानवरों की जगह लेना अभी संभव नहीं हो पाया है। इस विषय पर वैज्ञानिकों का मानना है कि जब तक कोई और विकल्प पूरी तरह से प्रभावी नहीं हो जाता, चूहों और अन्य जानवरों का उपयोग चिकित्सा अनुसंधान में आवश्यक रहेगा। उनकी जैविक संरचना और इंसानों से मेल खाते गुणों के कारण वे शोध में महत्वपूर्ण बने हुए हैं, जिससे नई चिकित्सा पद्धतियों और दवाओं का विकास तेज और सुरक्षित तरीके से हो सकता है। बता दें कि इंसानों पर किए जाने वाले वैज्ञानिक शोधों और चिकित्सा परीक्षणों के पहले, चूहों पर शोध का इस्तेमाल एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में किया जाता है। दिखने में और कई जैविक पहलुओं में भिन्न होते हुए भी, चूहे और इंसान अपने डीएनए में खासा समानता रखते हैं।

यूरेनियम का विशाल भंडार कनाडा को बना देगा दुनिया का सबसे धनवान देश

ओटावा

जलवायु संकट से निपटने के प्रयासों के बीच, परमाणु ऊर्जा पर बढ़ता वैश्विक जोर कनाडा को न्यूक्लियर एनर्जी सुपरपावर के रुप में उभरने का मौका दे रहा है। कनाडा में विशाल यूरेनियम भंडार, विशेषकर उत्तरी सस्केचेवान के अथाबास्का बेसिन में, इस संभावना को वास्तविकता में बदला जा सकता है। यूरेनियम खनन क्षेत्र में वर्षों से कार्यरत कारोबारी के अनुसार, दुनिया के दृष्टिकोण में हाल के वर्षों में बड़ा बदलाव आया है, जिसके चलते इस साल यूरेनियम की वैश्विक कीमत में 200 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि देखी गई है।

लेह क्यूरीर नेक्सजेन नामक कंपनी प्रमुख हैं, जो अथाबास्का बेसिन में यूरेनियम खनन के एक बड़े प्रोजेक्ट का नेतृत्व कर रहे हैं। परियोजना की लागत करीब चार अरब डॉलर है, और यह 2028 तक चालू हो सकती है। अगर नियामकों से इसकी मंजूरी मिलती है, तब

यह परियोजना कनाडा को यूरेनियम उत्पादन में दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक बना सकती है। नेक्सजेन के अलावा, कई अन्य कंपनियां भी इस क्षेत्र में सक्रिय हैं और कई पुरानी खदानों को फिर से खोल रही हैं।

परमाणु ऊर्जा को कम कार्बन उत्सर्जन के कारण प्राकृतिक गैस और कोयले जैसे अन्य ईंधनों की तुलना में पर्यावरण के लिए ठीक मानी गई है। विश्व परमाणु संघ के अनुसार, दुनिया की कुल बिजली का लगभग 10 प्रतिशत परमाणु स्रोतों से आता है, जबकि 50 प्रतिशत से अधिक उत्पादन कोयले और गैस से होता है। कोप28 जलवायु सम्मेलन में दो दर्जन देशों ने 2050 तक अपने परमाणु ऊर्जा उत्पादन को तीन गुना बढ़ाने का संकल्प लिया है। इसके बाद परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में कनाडा का योगदान आने वाले समय में और अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

कनाडा के यूरेनियम की गुणवत्ता

रिपोर्ट के अनुसार, कनाडा के यूरेनियम का गुणवत्ता स्तर बहुत ऊंचा है। कनाडा की सरकार ने इस यूरेनियम का निर्यात केवल परमाणु ऊर्जा उत्पादन के लिए किया है, जिससे इसका उपयोग केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए सुनिश्चित होता है। यह देश न केवल खनन बल्कि यूरेनियम के विनिर्माण चरण तक के लिए सभी संसाधनों से संपन्न है, जिसके कारण इसे टियर-वन परमाणु राष्ट्र भी कहा जाता है। विश्व परमाणु संघ के मुताबिक, कनाडा वर्तमान में वैश्विक यूरेनियम उत्पादन में करीब 13 प्रतिशत का योगदान देता है और यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा यूरेनियम उत्पादक है। नेक्सजेन के प्रोजेक्ट से यह योगदान 25 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना है, जिससे कनाडा वैश्विक यूरेनियम उत्पादन में एक महत्वपूर्ण शक्ति बन सकता है।

गुरु नानक देव के उच्च आदर्शों से प्रेरणा लेकर देश व धर्म के लिए कार्य करें: योगी आदित्यनाथ

लखनऊ, (हि.स.)। गुरु नानकदेव जी के 555 वें प्रकाशपर्व पर खालसा चौक, आलमबाग गुरुद्वारा में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गुरु नानक देव के उच्च आदर्शों से प्रेरणा लेकर देश व धर्म के लिए निरन्तर कार्य करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को प्रकाश पर्व की बधाई देते हुए कहा कि 1947 में अगर तत्कालीन सरकार चाहती तो ननकाना साहिब भारत का हिस्सा होता।

गुरु नानक के प्रति जो श्रद्धा है जो आस्था है उसके प्रति व्यवधान पाकिस्तान सरकार उत्पन्न करती है। वह कठिनाई नहीं उठानी पड़ती। योगी ने कहा कि एक ओर गुरुनानक ने बाबर के हमलों का विरोध किया वहीं समाज को एकजुट होकर ईश्वर की आराधना के प्रति नाम जप के लिए प्रेरित किया। आगे चलकर गुरु परम्परा आगे बढ़ी। भक्ति के साथ शक्ति के तेज पुंज के रूप में आगे बढ़कर गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविन्द सिंह और उनके चार-चार साहबजादों के त्याग व बलिदान के प्रति पूरा भारत कृतज्ञता के साथ जुड़ा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 26 नवंबर की तिथि को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीर बाल दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है। उससे आज की युवा पीढ़ी को देश व धर्म के प्रति प्रेरणा मिल रही है। इन महान परम्पराओं का देश व समाज के लिए जो योगदान है, कृतज्ञ राष्ट्र को कभी विस्मृत नहीं करना चाहिए। अपनी विरासत से प्रेरणा लेने वाला समाज कभी गुलाम नहीं बन सकता। इस मौके पर महापौर सुषमा खर्कवाल, सरदार परविंदर, भाजपा के महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

कालिंजर दुर्ग में उमड़ी लाखों श्रद्धालुओं की भीड़, भगवान नीलकंठेश्वर का हुआ पूजन

बांदा, (हि.स.)। जिले में स्थित ऐतिहासिक कालिंजर दुर्ग में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लाखों श्रद्धालु भगवान नीलकंठ शिवलिंग के दर्शन और पूजन के लिए पहुंचे। दुर्ग में स्थित नीलकंठेश्वर मंदिर का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व है। मान्यता है कि सागर मंथन से निकले विष को पीने के बाद भगवान शिव ने यहीं तपस्या कर उसकी ज्वाला शांत की थी। इस प्राचीन स्थल पर भगवान शिव के साथ मां पार्वती और उनके पुत्र कार्तिकेय भी विराजमान हैं। हालांकि, पुरातत्व विभाग ने शिवलिंग के क्षरण का हवाला देते हुए जलाभिषेक पर रोक लगा रखी है। इससे श्रद्धालुओं को निराशा हुई, लेकिन उनकी आस्था में कोई कमी नहीं आई। भक्तों ने दूर से ही भगवान के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। कार्तिक पूर्णिमा पर हर साल यहां विशेष मेला आयोजित होता है। इस वर्ष भी मेले में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। गुरुवार की रात से ही भक्त कोटितीर्थ और बुड्ढा-बुड्ढी तालाब में स्नान कर रोगों और संकटों से मुक्ति की प्रार्थना करते दिखे। स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने भगवान नीलकंठेश्वर की पूजा-अर्चना कर पुण्यलाभ कमाया। दुर्ग के भीतर जय भोले के जयकारों से वातावरण गूंज उठा। मेला क्षेत्र में दो दिन पहले से ही दूर-दराज से आए दुकानदारों ने दुकानें सजाई हुई थीं। श्रद्धालु दर्शन और पूजन के बाद मेले में खरीदारी कर कालिंजर दुर्ग का भ्रमण भी करते रहे। इस मेले में देश-प्रदेश ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी श्रद्धालु शामिल हुए। ऐतिहासिक कालिंजर दुर्ग को अपराजेय दुर्गों में गिना जाता है और यह भारत के प्रमुख धार्मिक और पर्यटन स्थलों में से एक है। मान्यता है कि यह स्थल पहले मां काली का शक्तिपीठ था, लेकिन भगवान शिव के आगमन के बाद मां काली कोलकाता चली गईं। इसके बाद भगवान शिव यहां नीलकंठ के रूप में प्रसिद्ध हुए। आजादी के बाद से इस मेले की व्यवस्था प्रशासनिक समिति संभालती आ रही है। इस बार भी मेले के सफल आयोजन ने श्रद्धालुओं की धार्मिक भावनाओं को प्रोत्साहित किया। भक्तों ने न केवल धार्मिक आस्था को मजबूती दी, बल्कि कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत को नमन भी किया।

पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर दो स्थानों पर मेटेनेंस कार्य पूर्ण

लखनऊ, (हि.स.)। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी के हैदरगढ़ और अमेठी के जगदीशपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर दो स्थानों पर मेटेनेंस कार्य पूर्ण हो गये है। बीते दिनों पूर्वांचल एक्सप्रेस वे बनाने वाली कम्पनियों ने अपने कार्य क्षेत्र में दरार दिखने की शिकायत मिलने पर मेटेनेंस कार्य पूर्ण किया है। गौरतलब है कि पूर्वांचल एक्सप्रेस वे बनते वक्त तमाम कम्पनियों ने कार्य पाया था। प्रत्येक कम्पनी को कुछ किलोमीटर तक का कार्य मिला था। एक्सप्रेस वे बनाने में कम्पनियों ने उत्तम से उत्तम मैटेरियल का उपयोग किया था।

इससे पहले कम्पनियों से उत्तर प्रदेश एक्सप्रेस वे इण्डस्ट्रीयल डेवलपमेंट अथारटी (यूपीईडा) के अधिकारियों ने पांच वर्षो का अनुबंध कराया था। अनुबंध के अनुसार पूर्वांचल एक्सप्रेस वे के निर्माण में कम्पनी ने जितने किलोमीटर का निर्माण कार्य किया है, उसका मेटेनेंस भी आगे वही कम्पनी देखेगी। यह शर्त रखी गई है। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर निर्माण कार्य कराने वाली एक कम्पनी के अधिकारी रोहित ने कहा कि पूर्वांचल एक्सप्रेस वे भारी भरकम वाहनों का आवागमन होता है।

जिसके कारण कई बार रोड पर डैमेज होता है। रोड बराबर नहीं दिखती है, कुछ ऊपर नीचे दिखायी पड़ती हैं। कई बार दरार भी दिखती है। जिसका समय रहते ही मेटेनेंस कराया जाता है। अभी ऐसे ही मेटेनेंस के कार्य को पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर किया गया है।

समय और वाहन तेल दोनों बचाता है पूर्वांचल एक्सप्रेस वे - लखनऊ से जगदीशपुर, अम्बेडकर नगर, सुलतानपुर, गाजीपुर, बलिया जैसे स्थानों तक यात्रा करने वाले लोगों को पूर्वांचल एक्सप्रेस वे बेहद पसंद है। लोगों का मानना है कि पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से यात्रा करने पर उनका समय भी बचता है और वाहन का तेल भी।

सीईओ, एसीईओ जैसे अधिकारियों की देखरेख में एक्सप्रेस वे - उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार में बनकर तैयार हुए पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर यूपीईडा के सीईओ एवं मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह और एसीईओ श्रीहरि प्रताप शाही जैसे अधिकारियों की देखरेख रहती है। एसीईओ श्रीहरि प्रताप माह के अंत तक प्रदेश के सभी एक्सप्रेस वे की स्थितियों की जानकारी करते हैं। जिसमें पूर्वांचल एक्सप्रेस वे को पहली वरीयता दी जाती है।

पीसीएस प्री परीक्षा 22 दिसम्बर को दो पालियों में होगी

-लोक सेवा आयोग ने पीसीएस परीक्षा की नई तिथि घोषित की

प्रयागराज, (हि.स.)। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) द्वारा सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा (प्री) परीक्षा 2024 जो दो दिन 7 व 8 दिसम्बर को होने वाली थी। अब 22 दिसम्बर को दो सत्रों में आयोजित होगी। आयोग के अनुसचिव ओंकार नाथ सिंह ने बताया है कि प्रतियोगी छात्रों की मांगों को ध्यान में रखते हुए पीसीएस प्रारम्भिक परीक्षा 2024 की तिथि को बदलते हुए नई तिथि 22 दिसम्बर घोषित की है। यह फैसला मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा प्रतियोगी छात्रों की मांग को ध्यान में रखते हुए की गई पहल के बाद लिया गया है। प्रयागराज में प्रदर्शन कर रहे छात्रों के अनुरोध को ध्यान में रखते हुए, अब यह परीक्षा एक ही दिन में सम्पन्न कराई जाएगी। पहले यह परीक्षा 7 व 8 दिसम्बर को दो दिनों में आयोजित होने वाली थी, लेकिन अब इसे एक ही दिन में दो पालियों में आयोजित किया जाएगा।

दो पालियों में आयोजित होगी परीक्षा - इस संशोधन के बाद पीसीएस प्रारम्भिक परीक्षा 22 दिसम्बर को सुबह 9:30 बजे से 11:30 बजे और दोपहर 2:30 बजे से 4:30 बजे तक दो पालियों में आयोजित की जाएगी। इस निर्णय से प्रतियोगी छात्रों को अब

एक ही दिन में परीक्षा देनी होगी, जिससे उनके यात्रा और समय की समस्या को हल किया जा सकेगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रतियोगी छात्रों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आयोग को इस सम्बंध में उचित कदम उठाने के लिए कहा था। सीएम योगी की पहल के बाद आयोग ने छात्रों की मांगों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए परीक्षा की तिथि में बदलाव किया है।

सुरक्षित महाकुम्भ : कुम्भ मेला को फायर फ्री जोन बनाने की योजना

प्रयागराज, (हि.स.)। महाकुम्भ में श्रद्धालुओं हेतु सुरक्षित किए जाने को लेकर योगी सरकार ने व्यापक तैयारियां की हैं। महाकुम्भ के दौरान आग की घटनाओं पर काबू पाने के लिए मैनपावर और स्पेशल फायर व्हीकल्स की संख्या में भारी वृद्धि की गई है। वहीं, अत्याधुनिक डिवाइसेज को भी तैनात किए जाने की योजना है। प्रत्येक सेक्टर में दमकल कर्मियों की ड्यूटी लगाई जा रही है। आग की घटनाओं की मॉनीटरिंग के लिए एआई से लैस फायर डिटेक्शन कैमरों को इंस्टॉल किया गया है। वहीं, रिस्पॉन्स टाइम को भी महज दो मिनट का रखा गया है, ताकि किसी तरह की घटना पर मिनटों में काबू पाया जा सके। सरकार का पूरा प्रयास यही है कि इस बार का महाकुम्भ पूरी तरह जीरो फायर इंसिडेंट के रूप में सम्पन्न हो और अग्निशमन विभाग की ओर से इसी दिशा में काम किया जा रहा है।

अखाड़ों में भी लगेंगे 5 हजार एक्सटींगुशर - प्रयागराज के मुख्य अग्निशमन अधिकारी और महाकुम्भ के नोडल अधिकारी प्रमोद शर्मा ने बताया कि इस बार महाकुम्भ को जीरो फायर इंसिडेंट बनाने का पूरा प्रयास होगा। इसके लिए व्यापक तैयारी की गई है। इसके लिए एडवांस रेस्क्यू टेंडर तैनात किए जा रहे हैं। 200 स्पेशल ट्रेन्ड रेस्क्यू ग्रुप को तैनात किया जा रहा है। वहीं, अखाड़ों में आग की घटनाओं को काबू करने के लिए 5000 स्पेशल फायर एक्स्टींगुशर प्रदान किए जा रहे हैं। यही नहीं, मेले में बड़ी संख्या में एआई लाइसेंस वाले फायर डिटेक्शन कैमरों को भी इंस्टॉल किया जा रहा है। ये कैमरे भी पहली बार उपयोग में लाए जा रहे हैं जो आग की घटनाओं पर नजर रखेंगे और कहीं इस तरह की घटना होती है तो तत्काल कंट्रोल रूम के माध्यम से चंद सेकेंड्स में फायर स्टेशन को सूचना मिल सकेगी। सूचना मिलते ही दो मिनट के अंदर दमकल की गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंचेंगी और आग पर काबू पाने का प्रयास करेंगी।

हर सेक्टर में तैनात होंगे दमकलकर्मी - उन्होंने बताया कि 2019 कुम्भ की तुलना में इस बार अधिक मैनपावर और व्हीकल्स को डेप्लॉय किया जा रहा है। 2019 में जहां 43 टेंपरेरी फायर स्टेशन बनाए गए थे, वहीं इस बार 50 टेंपरेरी फायर स्टेशन बनाए जा रहे हैं। इसी तरह 20 टेंपरेरी फायर पोस्ट बनाई जा रही हैं। 43 फायर वॉच टॉवर की तुलना में इस बार 50 फायर वॉच टॉवर होंगे, जबकि 4200 की जगह 7000 से अधिक फायर हाइड्रेंट्स लगाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त 75 की जगह इस बार 150 से ज्यादा फायर रिजर्व वाटर टैंक्स को उपयोग किया जाएगा। मैनपावर की बात करें तो 2019 में 1551 कर्मियों की जगह इस बार यह संख्या बढ़कर 2071 कर दी गई है। इसी तरह 2019 में कुल 166 व्हीकल्स का डेप्लॉयमेंट था तो इस बार यह संख्या लगभग दोगुनी बढ़कर 351 हो गई है।

भगवान बिरसा का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है : राज्यपाल

रांची, (हि. स.)। झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने शुक्रवार को धरती आबा भगवान बिरसा मुण्डा की जयंती के अवसर पर कोकर स्थित उनके समाधि स्थल पर जाकर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। राज्यपाल श्री गंगवार ने इस अवसर पर भगवान बिरसा मुण्डा के योगदान को नमन करते हुए कहा कि उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उनका साहस, संघर्ष और मातृभूमि के प्रति समर्पण हमें अपने कर्तव्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित होने की प्रेरणा देता है। राज्यपाल संतोष गंगवार ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर बिरसा चौक जाकर वहां स्थित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इसके पहले राज्यपाल ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर राजभवन में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भगवान बिरसा मुंडा को दी श्रद्धांजलि

रांची, (हि.स.)। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शुक्रवार को कोकर स्थित भगवान बिरसा मुंडा के समाधि स्थल पर जाकर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद मुख्यमंत्री बिरसा चौक पर पहुंचकर भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती और झारखंड राज्य स्थापना दिवस के इस खास मौके पर वे सभी को बधाई और शुभकामनाएं देते हैं। मुख्यमंत्री ने गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर समाज में समरसता और मानवता का संदेश देते हुए राज्यवासियों को अनेक-अनेक बधाई और शुभकामनाएं दीं। साथ ही उन्होंने कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर भी सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए राज्य की खुशहाली के लिए मिलकर काम करने की अपील की। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अपने संकल्प को दोहराते हुए कहा कि अमर वीर शहीदों और आंदोलनकारियों के सपनों का झारखंड बनाना ही उनका लक्ष्य है और इसे साकार करने के लिए राज्य के सभी लोगों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है।

झारखंड की जिस पवित्र माटी को बचाने के लिए भगवान मुंडा ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया, वह आज फिर संकट में है : शिवराज

देवघर, (हि.स.)। केन्द्रीय कृषि मंत्री एवं भाजपा के प्रदेश चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने देवघर में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंड की जिस पवित्र माटी को बचाने के लिए भगवान बिरसा मुंडा ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया, आज वह फिर संकट में है। जिस माटी, बेटी और रोटी के लिए भगवान बिरसा मुंडा ने 'उलगुलान' क्रांति का आह्वान किया था आज उस माटी, बेटी और रोटी पर घुसपैठिए कब्जा कर रहे हैं। शिवराज चौहान ने कांग्रेस के झारखंड प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर के घुसपैठियों को गैस सिलेंडर देने वाले बयान पर कांग्रेस आलाकमान को घेरते हुए कहा कि सोनिया गांधी, राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे जवाब दें कि क्या वो अपने नेता गुलाम अहमद मीर के घपुसपैठियों को सिलेंडर देने वाले बयान से सहमत हैं? उन्होंने कहा कि गुलाम अहमद मीर कह रहे हैं कि कांग्रेस की सरकार अगर बनी तो घुसपैठियों को 450 रुपये में गैस सिलेंडर देंगे। इस बयान से दो बातें स्पष्ट हो गई हैं, पहली झारखंड में घुसपैठिए हैं और दूसरी घुसपैठिए इनके वोट बैंक हैं। शिवराज ने कहा कि क्या अवैध घुसपैठियों का पालन-पोषण कांग्रेस का एजेंडा है? क्या झारखंड के संसाधनों पर घुसपैठियों का अधिकार है? क्या आदिवासियों की जमीनें छीनने वाले, उनकी माताओं-बहनों और बेटियों की अस्मिता से खिलवाड़ करने वाले घुसपैठियों के साथ कांग्रेस-जेएमएम का गठबंधन है? क्या कांग्रेस और इंडी गठबंधन ने वोट के बदले, अवैध घुसपैठियों के साथ कोई सौदेबाजी की है? जेएमएम और कांग्रेस इसका जवाब दे, झारखंड की जनता इसका जवाब चाहती है।

भाजपा नेता के शिक्षण संस्थानों पर रांची पुलिस की छापेमारी

रांची, (हि.स.)। विधानसभा चुनाव को प्रभावित करने के लिए अवैध रुपये रखे जाने की सूचना पर रांची पुलिस ने शुक्रवार को टाटीसिल्वे थाना क्षेत्र स्थित दो शैक्षणिक संस्थानों में छापेमारी कर रही है। विधानसभा चुनाव के दौरान यह तीसरा मौका है जब रांची पुलिस किसी शैक्षणिक संस्थान में अवैध रुपये को लेकर छापेमारी कर रही है। पुलिस सूत्रों की मानें तो सरला बिरला स्कूल, उषा मार्टिन यूनिवर्सिटी, अनगड़ा रिसोर्ट और एक भाजपा नेता के यहां छापेमारी की जा रही है। रांची पुलिस के डीएसपी, इंस्पेक्टर सहित भारी संख्या में पुलिस फोर्स शिक्षण संस्थान के एक-एक कमरों की जांच कर रहे हैं। पूरे कैंपस को पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया गया है।

त्रिवेणी संगम में स्नान करने जा रहे श्रद्धालुओ से भरी टेंपो ट्रैक्टर से टकरायी, 9 घायल

पूर्वी चंपारण,(हि.स.)। जिले के हरसिद्धि थानाक्षेत्र के दुदही गांव से त्रिवेणी संगम में स्नान करने जा रहे श्रद्धालुओं से भरी ऑटो ट्रैक्टर से टकरा गई। ऑटो में एक पुरूष व 11 महिला समेत कुल 12 लोग सवार थे। जिसमे 9 लोग बुरी तरह जख्मी बताये जा रहे है। घटना वाल्मीकि नगर रोड स्टेशन और गोबरहिया के बीच हुई है। जहां ऑटो की टक्कर ट्रैक्टर से हो गई। घटना के संदर्भ में मिली जानकारी के अनुसार सभी श्रद्धालु एक ही परिवार के है। जो कार्तिक पूर्णिमा पर ऑटो पर सवार होकर त्रिवेणी संगम में स्नान के लिए जा रहे थे। जैसे ही टैंपो वाल्मीकिनगर रोड स्टेशन पार किया, अचानक एक तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने उसे टक्कर मार दी। हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने तत्परता दिखाते हुए सभी घायलों को अनुमंडलीय अस्पताल पहुंचाया, जहां सबका इलाज चल रहा है। डॉक्टर के अनुसार सभी घायल खतरे से बाहर हैं। उन्हें आवश्यक चिकित्सा प्रदान की जा रही है। घायलों में बुआ देवी, टेंपो चालक सुभाष कुमार, चिंता देवी. राजनती देवी, सुधा देवी, बबिता देवी, किरन देवी और बिहारी सहनी शामिल हैं। सभी हरसिद्धि के दुदही गांव के एक ही परिवार के सदस्य है।

बिहार के डिप्टी सीएम विजय सिन्हा ने धोए सफाईकर्मियों के पैर?

-कहा- समाज और मन के अंदर की गंदगी से मुक्ति पाना ही सच्ची स्वच्छता

जमुई,(ईएमएस)। बिहार के उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने अनोखे अंदाज में सफाईकर्मियों को सम्मानित किया है। उन्होंने और राजस्व मंत्री दिलीप जायसवाल ने सफाईकर्मियों के पैर धोकर उनका सम्मान किया, जो न सिर्फ एक प्रतीकात्मक था, बल्कि सफाईकर्मियों के योगदान को समाज में मान्यता देने का भी अहम कदम था। दरअसल यह सम्मान पीएम नरेंद्र मोदी के आगमन से पहले जमुई में एक विशेष स्वच्छता अभियान के तहत किया गया।

इस अभियान में जिला मुख्यालय स्थित श्रीकृष्ण सिंह मेमोरियल स्टेडियम परिसर में सफाई अभियान चलाया गया। इस दौरान उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने सफाईकर्मियों के पैर धोकर उनका सत्कार किया और उनकी तारीफ की। स्वच्छता अभियान के उद्घाटन के दौरान विजय सिन्हा ने कहा कि स्वच्छता हमारे जीवन का अनमोल धरोहर है, जो हमें स्वस्थ रखती है। उन्होंने आगे कहा कि पीएम मोदी के स्वच्छता संकल्प को पूरा करने की दिशा में महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे महान नेताओं ने स्वच्छता को उच्च मान्यता दी थी। उनका मानना था कि समाज और मन के अंदर की गंदगी से मुक्ति पाना ही सच्ची स्वच्छता है।

इस अवसर पर राजस्व मंत्री दिलीप जायसवाल ने भी सफाईकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि हमारे शहरों, गांवों, गलियों और घरों की सफाई की जिम्मेदारी उठाने वाले सफाईकर्मियों को समाज में उचित सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा की सफाई की और उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया। यह स्वच्छता अभियान पीएम मोदी के स्वच्छता मिशन के अंतर्गत किया गया था, और इसके जरिए से एक महत्वपूर्ण संदेश दिया कि सफाई कर्मियों का समाज में सम्मान होना चाहिए, क्योंकि वे हमारी जिंदगी को स्वच्छ और स्वस्थ रखने में अहम भूमिका निभाते हैं।

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती जन जातीय गौरव दिवस के रूप में मनी

अररिया (हि.स.)। फारबिसगंज के प्लस टू स्तरीय ली अकादमी उच्च विद्यालय में शुक्रवार को भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती नेहरू युवा केन्द्र संगठन द्वारा जन जातीय गौरव दिवस के रूप में समारोहपूर्वक मनी,जिसमे भाजपा विधानसभा प्रभारी सह एनवाईकेएस चयन समिति सदस्य प्रवीण कुमार, मुख्य पार्षद वीणा देवी और ली अकादमी उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक तेज बहादुर सिंह ने भाग लिया और संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मौके पर एनवाईकेएस चयन समिति सदस्य प्रवीण कुमार,मुख्य पार्षद वीणा देवी और ली अकादमी उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक तेज बहादुर सिंह ने भगवान बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी संघर्ष गाथा और जीवनी के बारे में बच्चों को जानकारी दी। वक्ताओं ने कहा कि बिरसा मुंडा राष्ट्र नायक थे, जिन्होंने महज 25 वर्षों के जीवन काल मे न सिर्फ इतिहास रच दिया, बल्कि जल,जंगल और जमीन की रक्षा के लिए उनके संघर्ष, समर्पण और उनके मूल्य सर्वसमाज के अधिकार और सम्मान के प्रति संवेदनशील बनने के लिए हरेक भारतीय को प्रेरित करता रहेगा। मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। जिसमें सफल पांच छात्राओं यथा काजल, स्नेहा, गरिमा, नजराना एवं शिफा को मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन एनवाईकेएस यूथ क्लब के सदस्य गौरव कुमार ने किया। इस अवसर सैकडों छात्र छात्राएं सहित अनेकों शिक्षक मौजूद थे।

रिलायंस और डिज्नी मर्ज होगा, नीता अम्बानी होंगी ज्वाइंट वेंचर की चेयरपर्सन

मुंबई

रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड वायाकॉम 18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड और द वॉल्ट डिज़नी कंपनी ने वायाकॉम 18 के मीडिया और जियोसिनेमा व्यवसायों का स्टार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एसआईपीएल) में विलय का ऐलान किया है। अनुमोदन द्वारा इस समन्वय की पुष्टि की गई है।

रिलायंस ने एक ज्वाइंट वेंचर में 11,500 करोड़ रुपए का निवेश किया

इसलिए, यह घोषणा एक महत्वपूर्ण कदम है जो मीडिया उद्योग में एक नया आयाम स्थापित करने के लिए हुआ है। इस विलय की मूल्यांकन के तहत, रिलायंस ने एक ज्वाइंट वेंचर में 11,500 करोड़ रुपए का निवेश किया है। ज्वाइंट वेंचर में आरआईएल का नियंत्रण रहेगा और इसमें आरआईएल का 16.34 फीसदी, वायकॉम18 का 46.82 फीसदी और डिज्नी का 36.84 फीसदी हिस्सा है।

इससे पूरे उद्यम में ऐतिहासिक परिवर्तन की चर्चा हो रही है। संयुक्त उद्यम में नीता एम. अंबानी की नेतृत्व और उदय शंकर के गुरुत्व में रणनीतिक मार्गदर्शन के साथ, भारत में मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र में एक नई दिशा मिलेगी। इस संयुक्त उद्यम का अंदाजा है कि इसका संयुक्त राजस्व मार्च 2024 में करीब 26,000 करोड़ रुपए रहेगा। इस उत्कृष्ट उद्यम का मिशन है भारतीय दर्शकों को विविध मनोरंजन और खेल से जुड़े सामग्री का एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करना। संयुक्त उद्यम द्वारा संचालित 100 से अधिक टीवी चैनल और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जैसे जियो सिनेमा और हाटस्टार से एक नए उपयोगकर्ता अनुभव का आरम्भ होगा। इस एकीकृत प्रयास से, उक्त उद्यम में एकल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म और विनिवेशकीगत मूल्य के शीर्षकारी बनने की उम्मीद है।

न्यूज़ब्रीफ

आरबीआई आंकड़े : 1 नवंबर को समाप्त पखवाड़े में उधारी और जमा वृद्धि लगभग समान, उधारी और जमा दोनों ही 11.9 प्रतिशत की दर से बढ़ी

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने हाल ही में जारी किए गए ताजे आंकड़े द्वारा बताया गया है कि 1 नवंबर को समाप्त हुए पखवाड़े में उधारी और जमा की वृद्धि लगभग समान रही। इस दौरान उधारी और जमा दोनों ही 11.9 प्रतिशत की दर से बढ़ी हैं। यह स्थिति पिछले 30 महीनों में पहली बार आई है, जब उधारी और जमा की वृद्धि समान रही है। पिछले पखवाड़े की तुलना में, जिसमें जमा वृद्धि उधारी से अधिक थी, 18 अक्टूबर को समाप्त हुए पखवाड़े में इस स्थिति में पलटाव देखने को मिला। इसमें उधारी वृद्धि 11.5 प्रतिशत रही, जबकि जमा वृद्धि 11.7 प्रतिशत थी। यह बदलाव उस समय के बाद आया, जब आरबीआई ने बैंकों को उधारी और जमा अनुपात को कम करने के लिए निर्देशित किया था। विशेषज्ञों का मानना है कि आगे चलकर उधारी की वृद्धि जमा से अधिक रह सकती है, खासकर चौथी तिमाही में। यह आमतौर पर उधारी की सबसे सक्रिय अवधि होती है। इसके अलावा, एचडीएफसी बैंक जैसे बड़े निजी बैंक ने भी अपनी उधारी वृद्धि को धीमा किया है ताकि वह अपने उधारी और जमा अनुपात को कम कर सके।

जापान की अर्थव्यवस्था उपभोक्ता व्यय के दम पर लगातार दूसरी तिमाही में बढ़ी, वित्त वर्ष 2024-25 की अप्रैल-जून तिमाही में 0.5 प्रतिशत की दर से बढ़ी थी

तोक्यो। जापान की अर्थव्यवस्था उपभोक्ता व्यय के दम पर लगातार दूसरी तिमाही में बढ़ी और जुलाई-सितंबर में इसकी वृद्धि दर 0.9 प्रतिशत रही। शुक्रवार को जारी सरकारी आंकड़ों में यह बात सामने आई। विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वित्त वर्ष 2024-25 की अप्रैल-जून तिमाही में 0.5 प्रतिशत की दर से बढ़ी थी। मंत्रिमंडल कार्यालय के प्रारंभिक आंकड़ों के अनुसार घरेलू मांग में 2.5 प्रतिशत की वार्षिक दर से वृद्धि हुई। निजी खपत स्वस्थ घरेलू खपत के दम पर 3.6 प्रतिशत बढ़ी, जो जापान के सकल घरेलू उत्पाद का आधे से अधिक हिस्सा बनाती है निर्यात में 1.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। येन का कमजोर होना निर्यात के लिए फायदेमंद है, क्योंकि इससे जापानी उत्पाद विदेशों में सस्ते हो रहे हैं। हालांकि, पिछली तिमाही में इसका प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित रहा। इस साल की शुरुआत में जापानी येन 160-येन के स्तर पर कारोबार कर रहा था। अब यह 150-येन के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

12 रुपए से भी कम में 10 जीबी डेटा दे रही कंपनियां

मुंबई। भारतीय टेलीकॉम बाजार में इस समय मोबाइल डेटा प्लान्स पर दर्ज एक नई सुविधा के साथ उपभोक्ताओं के लिए आशीर्वाद प्रदान कर रही है। रिलायंस, जियो, एयरटेल और वोडाफोन ने अपने यूजर्स के लिए उपलब्ध डेटा प्लान्स के माध्यम से उपभोक्ताओं को 11 रुपये में 10 जीबी डेटा का लाभ देने की घोषणा की है। रिलायंस जियो का सस्ता 11 रुपये वाला डेटा प्लान उपभोक्ताओं को 10 जीबी हाई स्पीड डेटा प्रदान करता है, परंतु इसमें कॉलिंग और एसएमएस की सुविधा नहीं होती। इस प्लान का वैलिडिटी सिर्फ 1 घंटे की है। एयरटेल भी अपने यूजर्स के लिए इसी मूल्य पर 10 जीबी हाई स्पीड डेटा देने वाला डेटा वाउचर प्रदान करता है। इसकी भी वैलिडिटी एक घंटे की होती है। वोडाफोन आइडिया की ववीआई ने अभी तक 11 रुपये का कोई डेटा प्लान नहीं जारी किया है, लेकिन, 23 रुपये में उपभोक्ताएं एक दिन के लिए 1 जीबी हाई स्पीड डेटा उपयोग कर सकती हैं। ये सुविधाएं डिजिटल युग के यूजर्स को उपयोगकर्ता अनुभव में और भी मजबूती प्रदान करने में मदद करेंगी और उन्हें अपनी डेटा जरूरतों को पूरा करने का एक सामर्थ्यपूर्ण विकल्प प्रदान करेंगी।

लगातार 7वें दिन सस्ता हुआ सोना, चांदी की भी घटी चमक

नई दिल्ली

घरेलू सर्राफा बाजार में सोने के भाव में आज लगातार 7वें दिन गिरावट आई है। आज सोना 1,100 रुपये से लेकर 1,200 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हुआ है। इसी तरह चांदी के भाव में भी आज 1,500 रुपये प्रति किलोग्राम तक की गिरावट आई है। सोने की कीमत में आई गिरावट के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 76 हजार रुपये के स्तर से नीचे गिर कर 75,790 रुपये से लेकर 75,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी 70 हजार के स्तर से नीचे लुढ़क कर 69,490 रुपये से लेकर 69,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बना हुआ है। चांदी के भाव में भी गिरावट आने की वजह से दिल्ली सर्राफा बाजार में इसकी कीमत आज 89,400 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 75,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 69,490 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 75,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 69,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 75,690 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 69,390 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 75,640 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 69,340 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 75,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 69,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 75,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 69,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं, पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 75,690 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 69,390 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 75,790 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 69,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोने की कीमत में बड़ी गिरावट आई है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 75,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

अक्टूबर महीने में वस्तुओं का निर्यात दो अंक में सर्वोच्च स्तर पर

नई दिल्ली । भारतीय निर्यातकों के लिए खुशखबरी की घोषणा देश के व्यापारिक मंत्रालय ने की है। अक्टूबर महीने में वस्तुओं का निर्यात दो अंक में सर्वोच्च स्तर पर पहुंचा है, जो पिछले 28 महीनों में सबसे तेज वृद्धि दर्ज की गई है। इसके अनुसार, अक्टूबर में निर्यात 17.3 प्रतिशत बढ़कर 39.2 अरब डॉलर रहा है। व्यापार विभाग के अनुसार पश्चिमी देशों से मांग बढ़ने के चलते इस महीने निर्यात में वृद्धि देखने को मिली है। गैर-पेट्रोलियम, गैर-रत्न, और आभूषण समेत अन्य क्षेत्रों में वस्तुओं का निर्यात विशेष रूप से उछाल दिखा रहा है। अक्टूबर में समृद्धि की प्रमाणिक को मानते हुए, निर्यात 27.7 प्रतिशत बढ़कर 31.36 अरब डॉलर रहा है। इंजीनियरिंग उत्पादों, इलेक्ट्रॉनिक्स, रेडीमेड परिधान, और चावल में मांग बढ़ने से यह वृद्धि दर्ज की गई है। हालांकि, विगत दौरान आयात भी 3.9 प्रतिशत बढ़कर 66.34 अरब डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है, जिससे अक्टूबर माह में व्यापार घाटा 27.1 अरब डॉलर रहा है। व्यापार सचिव ने कहा कि हमें यह गर्व है कि निर्यात की दिशा में हमारे कदम साबित हो रहे हैं। विभिन्न क्षेत्रों में इस उत्थान का भविष्य तेल और धातुओं की कीमतों में अस्थिरता के बावजूद भविष्य स्वार्थपरक दिख रहा है। इसी संदर्भ में वाणिज्य सचिव ने कहा कि इस साल निर्यात का प्रदर्शन बेहतर हो सकता है और वित्त वर्ष 2025 में निर्यात 800 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। फिरो के अध्यक्ष ने कहा कि व्यापारिक संबंधों में सुधार के लिए यह उत्साहजनक चरण है। इसके साथ ही सेवाओं का निर्यात भी बढ़कर 21.3 प्रतिशत रहा है जिसके कारण आयात 26.3 प्रतिशत बढ़कर 17 अरब डॉलर रहा है। इससे सेवाओं के व्यापार मामले में कुल 17 अरब डॉलर का अधिशेष लगा है। इन्हीं संकेतों के पर्दाफाश के साथ भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा आंकड़े जारी किए जाएंगे और इसके बाद संशोधित किए जाएंगे। सार्वजनिक परिवहन और यातायात, आभूषण, ज्वेलरी, और पर्यटन सेवाओं में वृद्धि के साथ, निर्यात में इस राजाओं से संतुलनित कदम साबित हो रहे हैं। इस बढ़ती वृद्धि के साथ, भारतीय निर्यातकों को एक सकारात्मक संकेत मिल रहा है कि उनका प्रदर्शन मुख्य नए उचाईयों की ओर बढ़ रहा है।

बीकानेरवाला का दूसरा आउटलेट बठिंडा में खुला

बठिंडा

द मोंटाना ग्रुप ने शुक्रवार को खुदरा एवं आतिथ्य क्षेत्र में एक नया कदम उठाया, जब वे स्नैक फूड और रेस्तरां श्रृंखला के बीकानेरवाला के साथ मिलकर बठिंडा में एक नया आउटलेट खोलने की घोषणा की। इस नए बिक्री केंद्र का उद्घाटन पार्क पैनोरमा कॉलोनी में होगा, जिसे रिवर्स फूड ड्रेनेज कार्यक्रम के अंतर्गत लॉन्च किया जाएगा।

मोंटाना ग्रुप के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इस मौके पर विचार व्यक्त किया कि वे भारत की समृद्ध पाक विरासत को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने के लिए प्रयासरत हैं। साथ ही

भारत की समृद्ध पाक विरासत को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने के लिए प्रयासरत

वे भारतीय स्वाद को मुख्य स्थान पर लाएंगे, जो भारतीय पाककला परिदृश्य में वैश्विक मान्यता प्राप्त करने में मदद करेगा। कानेरवाला फूड्स प्राइवेट लिमिटेड के एक अधिकारी ने इशारों में जताया कि यह साझा पहल भारत की पाक विरासत की महत्वपूर्णता को देखते हुए की गई है। उन्होंने कहा कि इस भारतीय स्वाद को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने का मकसद ऐसे साझा काम के माध्यम से होगा, जो दुनिया भर में भारत की पाक विरासत को प्रस्तुत करेगा। बीकानेरवाला और मोंटाना ग्रुप द्वारा बठिंडा में एक नया बिक्री केंद्र खोलने का यह नया कदम निश्चित रूप से खुशियों भरा संदेश है, जो भारतीय पाककला को ग्लोबल पहचान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

एक महीने में खाद्य तेल के दाम 8 फीसदी बढ़े, सब्जियों की कीमतें में भी बढ़ोतरी हुई

मुंबई

तेल के दाम फिर से बढ़ गए हैं, जिससे लोगों की रोज़मर्रा की जिंदगी पर भारी पड़ा है। प्याज, टमाटर और लहसुन के बाद अब तेल की कीमतों में भी वृद्धि हुई है। खाद्य तेल के दाम एक महीने में 8 फीसदी तक बढ़ गए हैं। इसके अलावा सब्जियों की कीमतें में भी बढ़ोतरी हो गई हैं। खुदरा महंगाई अक्तूबर में लगातार उच्च स्तर पर रही है। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार मूंगफली तेल का दाम 14 अक्तूबर को 193.58 रुपये था, जो अब 195.59 रुपये हो गया है। सरसो तेल, वनस्पति तेल, सोया तेल, सूरजमुखी तेल, और पाम तेल की कीमतें सभी में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही चाय की कीमतें भी तीन फीसदी तक बढ़ गई हैं। सब्जियों की कीमतें भी बहुत महंगी हो गई हैं, जहां प्याज 70-80 रुपये, और आलू 30 रुपये किलो है।

अनुमानित रूप से नवंबर में सब्जियों के दाम थोड़ी कम हो सकते हैं, लेकिन प्याज की कीमतें अभी भी ऊंची रहेंगी। इससे सब्जी के दाम नवंबर महीने में स्थिर हो सकते हैं, लेकिन उनका वार्षिक औसत अभी भी ऊंचा है। आलू, टमाटर, और प्याज में वृद्धि के बाद, अब तेल और चाय महंगा हो गया है। इस स्थिति में, लोग किफायती रूटीन की तलाश में हैं जिससे उनकी रोज़मर्रा की जिंदगी पर आसानी आए।

कॉमकास्ट की यूनिवर्सल स्टूडियोज़ एक्सेल एंटरटेनमेंट में हिस्सेदारी खरीदेगी

यूनिवर्सल स्टूडियोज़ ने भारत की एक्सेल इंटरटेनमेंट में हिस्सेदारी खरीदने चल रही बातचीत

नई दिल्ली

हाल ही में अमेरिकी मीडिया कंपनी कॉमकास्ट कार्प की यूनिवर्सल स्टूडियोज़ ने भारत की प्रमुख फिल्म प्रोडक्शन कंपनी एक्सेल इंटरटेनमेंट में हिस्सेदारी खरीदने की बातचीत शुरू की है। इस डील के अनुसार यूनिवर्सल स्टूडियोज़ एक्सेल इंटरनेटमेंट में 50 प्रतिशत तक हिस्सेदारी ले सकता है। सूत्रों के मुताबिक, नयी पूंजी के निवेश के साथ यह सौदे हो सकता है।

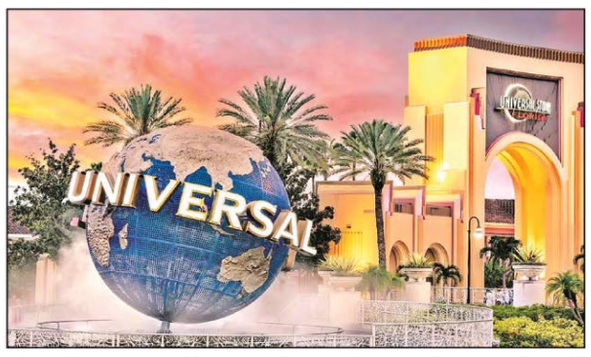

कंपनी ने इस पर अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। यह करार उस समय हो रहा है जब फिल्म उद्योग में पूंजी निवेश की मांग बढ़ रही है। हाल ही में आदर पूनावाला की सेरेपे प्रोडक्शन ने करण जौहर की धर्मा प्रोडक्शन में 1,000 करोड़ रुपये का निवेश कर 50 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी है, जिससे फिल्म प्रोडक्शन कंपनियों में निवेश की बढ़ती आवश्यकता पर चर्चा तेज हो गई है। प्राइवेट इक्विटी विशेषज्ञों के अनुसार कई प्रोडक्शन हाउस अब बड़े बजट की फिल्मों के निर्माण के लिए फंडिंग की तलाश कर रहे हैं ताकि वे अपने कारोबार को बढ़ा सकें।

एक्सेल जिसे फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी ने 1999 में स्थापित किया था, वित्त वर्ष 2023 में 44 करोड़ रुपये का राजस्व गँवाता है। हालांकि यह कंपनी कुछ अन्य प्रमुख निर्माताओं जैसे धर्मा, यश राज और टीसीरिज के मुकाबले छोटी है, लेकिन प्रसिद्ध फिल्म दिल चाहता है से इंडस्ट्री में महत्वपूर्ण पहचान बना लिया। इसके बाद एक्सेल ने एमेजान वीडिया और एमेजान एमजीएम स्टूडियो के साथ साझेदारी की है, जिससे वह डॉन 3, ग्राउंड जीरो, अग्नि और युध्रा जैसी फिल्मों को रिलीज़ करेगी।

अमेरिकी खर्च कटौती का सुझाव बाजार के लिए बुरा

वाशिंगटन

जेफरीज में इक्विटी रणनीति के वैश्विक प्रमुख क्रिस्टोफर वुड ने एक टेलीविजन इंटरव्यू में कहा कि डॉनल्ड ट्रंप 2.0 सरकार में एलन मस्क की 2 लाख करोड़ डॉलर तक की खर्च कटौती की योजना से अमेरिकी डॉलर मजबूत होगा लेकिन यह शेयर बाजारों के लिए नकारात्मक होगी।

उन्होंने कहा कि भारतीय शेयरों, खासकर मिडकैप और स्मॉलकैप में गिरावट अच्छी है और उन्होंने इसे बड़ी तेजी के बाद 'स्वाभाविक गिरावट' करार दिया है। अमेरिकी ट्रेजरी के आधिकारिक आंकड़ों से पता चलता है कि अमेरिकी सरकार ने वित्त वर्ष 2024

में (अक्टूबर 2023 से सितंबर 2024) 6.75 लाख करोड़ डॉलर खर्च किए थे। प्रतिशत में बात की जाए तो 2 लाख करोड़ डॉलर की कटौती से अमेरिका सरकार का सालाना खर्च 32 प्रतिशत घट जाएगा।

टेस्ला के मुख्य कार्याधिकारी मस्क को नए अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिसिएंशी का सह-प्रमुख नियुक्त किया है। वुड ने कहा कि जब तक मस्क अमेरिकी प्रशासन में बदलाव नहीं लाते और 2 लाख करोड़ डॉलर की कटौती करने में सक्षम नहीं हो जाते, तब तक ट्रेजरी बॉन्ड बाजार में बिकवाली बनी रहेगी। इससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था को मंदी-महंगाई का झटका लगेगा और निवेशक दूसरी जगहों का रुख कर सकते हैं। अगर ट्रंप वाकई ऐसी नीति के हिमायती हैं तो इसका मतलब होगा कि अधिकारों में कटौती करना।

ट्रंप 2.0 सरकार में मस्क की 2 लाख करोड़ डॉलर तक की खर्च कटौती से डॉलर मजबूत होगा

उनका अनुमान है कि अमेरिकी डॉलर की मजबूती केवल अल्पावधि में ही रहेगी - जनवरी 2025 में डॉनल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण तक। वुड का मानना है कि हालांकि शेयर बाजार के नजरिये से बढ़ते बॉन्ड प्रतिफल से ज्यादा खतरा पैदा हुआ है, जिसे बाजार लंबे समय तक नजरअंदाज नहीं कर पाएगा।सितंबर 2024 के मध्य के 3.6 प्रतिशत के स्तर से अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल अब बढ़कर 4.46 प्रतिशत हो गया है जो इस अवधि के दौरान लगभग 28 प्रतिशत की वृद्धि है। वुड के अनुसार इक्विटी के लिए जोखिम यह है कि एक समय ऐसा होगा जब शेयर बाजार बढ़ते बांड प्रतिफल को नजरअंदाज नहीं कर पाएगा।

वुड ने निवेशकों को भेजे अपने साप्ताहिक नोट ग्रीड ऐंड फियर में लिखा है, इक्विटी के लिए अन्य नकारात्मक बात यह है कि तरलता की स्थिति ऐसे समय लड़खड़ानी शुरू हुई है जब मूल्यांकन अपनी ऐतिहासिक ऊंचाई पर हैं। वुड ने कहा कि भारत की बात करें तो देश का रिजर्व बैंक वैश्विक घटनाक्रम के बावजूद ब्याज दरों में कटौती करने की जल्दबाजी में नहीं दिख रहा है।

22 नवंबर को रिलीज होगी अभिषेक की फिल्म आई वॉन्ट टू टॉक

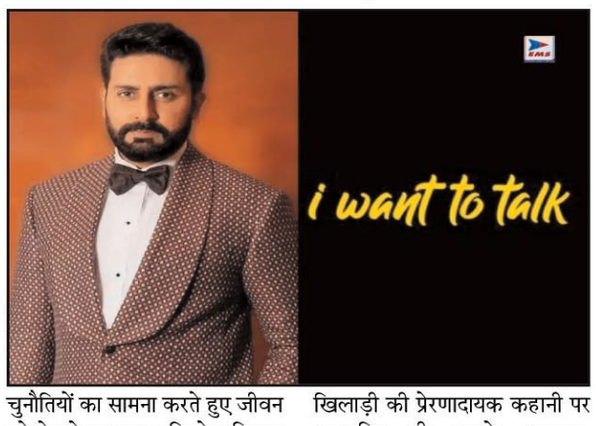

फिल्म आई वॉन्ट टू टॉक को लेकर अभिनेता अभिषेक बच्चन चर्चा में हैं। फिल्म के विषय पर अब उनके पिता, मेगास्टार अमिताभ बच्चन ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी है। अमिताभ ने अपने ब्लॉग में अभिषेक की फिल्म की तारीफ की और इसे समाज को जागरूक करने वाली कहानी बताया। इस फिल्म का ट्रेलर हाल ही में रिलीज हुआ, जिससे दर्शकों में एक नई उम्मीद और एक्साइटमेंट का माहौल बना है। फिल्म आई वॉन्ट टू टॉक का निर्देशन शूजित सरकार ने किया है और यह 22 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म का ट्रेलर देखकर दर्शकों से मिले-जुले रिएक्शंस आए हैं, लेकिन अमिताभ के शब्दों ने इस फिल्म को लेकर उत्साह और बढ़ा दिया है। अभिषेक ने इंस्टाग्राम पर इस फिल्म का ट्रेलर शेयर किया था, जिसमें उन्होंने अपने किरदार अर्जुन की असाधारण यात्रा को पेश किया है। फिल्म में अर्जुन को गर्दन की सर्जरी के बाद विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए जीवन को देखने का नया दृष्टिकोण मिलता है। फिल्म में अभिषेक के अभिनय को लेकर भी दर्शक काफी उत्साहित हैं, क्योंकि वह इस किरदार में कई लुक्स में नजर आ रहे हैं। इससे पहले, अभिषेक को आर. बाल्की की फिल्म घूमर में देखा गया था, जिसमें उन्होंने एक युवा बल्लेबाज की भूमिका निभाई थी। यह फिल्म एक असफल क्रिकेटर और एक युवा खिलाड़ी की प्रेरणादायक कहानी पर आधारित थी। इसके अलावा, अभिषेक का आगामी प्रोजेक्ट भी काफी दिलचस्प है। वह शाहरुख खान और सुहाना खान अभिनीत फिल्म किंग में नजर आएंगे, जिसमें उनका किरदार ग्रे शेड्स में होगा। यह फिल्म 2025 में रिलीज हो सकती है और फिल्म का निर्देशन सुजॉय घोष कर रहे हैं, जबकि निर्माण सिद्धार्थ आनंद द्वारा किया जा रहा है

फिल्म सिकंदर का मुकद्दर में तमन्ना के अलावा, अविनाश और जिमी शेरगिल नजर आयेंगे

बहुप्रतीक्षित फिल्म सिकंदर का मुकद्दर का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। इस फिल्म में पैन-इंडिया स्टार तमन्ना भाटिया ने अपने प्रशंसकों का ध्यान खींच लिया है। फिल्म में तमन्ना एक नए अवतार में नजर आएंगी। इसमें तमन्ना के अलावा, अविनाश तिवारी और जिमी शेरगिल भी मुख्य भूमिकाओं में हैं। तमन्ना ने इसमें कामिनी सिंह का किरदार निभाया है, जबकि अविनाश तिवारी सिकंदर शर्मा की भूमिका में हैं। जिमी शेरगिल ने एक दृढ़ पुलिसकर्मी जसविंदर सिंह का किरदार निभाया है, जो इस मामले को सुलझाने की कोशिश में है।

नेटफ्लिक्स ने ट्रेलर के साथ कैप्शन लिखा, कौन है मासूम, कौन है मुजरिम, और किसकी मूलवृत्ति है सबसे शातिर? देखिये सिकंदर का मुकद्दर, 29 नवंबर को, केवल नेटफ्लिक्स पर। इस रोमांचक फिल्म की शूटिंग के दौरान के दृश्य भी पहले ही सोशल मीडिया पर शेयर किए गए थे, जिससे दर्शकों का उत्साह और बढ़ गया था। तमन्ना के लिए यह साल खासा व्यस्त रहा है। हाल ही में उन्होंने अपनी बहुप्रतीक्षित तेलुगु फिल्म ओडेला 2 की शूटिंग पूरी की है, और इससे पहले उन्होंने तमिल ब्लॉकबस्टर अरनमनई 4 में शानदार प्रदर्शन किया था। इसके अलावा, उनका गाना स्त्री 2 से आज की रात भी काफी लोकप्रिय हुआ, जिससे तमन्ना ने शरीर की सकारात्मकता पर एक नई सोच को प्रेरित किया। करण जौहर द्वारा निर्मित उनकी अगली फिल्म डेयरिंग पार्टनर्स सहित कई आगामी प्रोजेक्ट्स के कारण तमन्ना अपने करियर की नई ऊंचाइयों पर हैं। बता दें कि नीरज पांडे के निर्देशन में बनी इस फिल्म में 60 करोड़ रुपये के सॉलिटेयर हीरों की चोरी के मामले में बेगुनाही साबित करने के लिए संघर्ष करते संदिग्धों के समूह की कहानी है।

फिल्म गेम चेंजर में जलपरी की तरह दिखीं कियारा

अभिनेत्री कियारा आडवाणी ने अपनी आगामी फिल्म गेम चेंजर का टीजर लॉन्च करने की घोषणा की है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर एक्ट्रेस ने दो शानदार फोटो शेयर की, जिसमें वह ब्लू रंग की ड्रेस में जलपरी की तरह दिख रही हैं। कियारा के इस लुक को देखकर उनके फैंस पूरी तरह से रोमांचित हो गए हैं और सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, कितनी खूबसूरत हैं आप, जबकि दूसरे ने कहा, टीजर का इंतजार है, और तीसरे ने लिखा, अब इंतजार नहीं होता है। कियारा ने पोस्ट में कैप्शन दिया, गेम चेंजर का टीजर कल आ रहा है। कियारा की आगामी फिल्म गेम चेंजर शंकर शनमुगम द्वारा निर्देशित है, जिसमें दक्षिण भारतीय सुपरस्टार राम चरण मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। राम चरण फिल्म में एक आईएएस अधिकारी के रूप में दिखेंगे, जो भ्रष्ट राजनेताओं के खिलाफ संघर्ष करता है और निष्पक्ष चुनावों की वकालत करता है। फिल्म का निर्माण दिल राजू और सिरीश ने किया है, और इसकी कहानी कार्तिक सुब्बाराज ने लिखी है। एक्शन कोरियोग्राफी अनबरीव ने की है, जबकि डांस कोरियोग्राफी प्रभु देवा, गणेश आचार्य, प्रेम रक्षित, बॉस्को मार्टिस, जॉनी और सैंडी द्वारा की गई है। निमार्ताओं ने पहले ही फिल्म के दो गाने रा माचा माचा और जरगांडी रिलीज कर दिए हैं, और अब सभी की नजरें फिल्म के बहुप्रतीक्षित टीजर पर हैं। एक करीबी सूत्र ने बताया कि फिल्म का टीजर लखनऊ में एक भव्य कार्यक्रम में स्टार कास्ट और निमार्ता दिल राजू की मौजूदगी में रिलीज किया जाएगा। यह फिल्म सिद्धार्थ आनंद द्वारा निर्देशित 2019 की हिट फिल्म वॉर का सीक्वल है, जिसमें ऋतिक के साथ टाइगर श्रॉफ और वाणी कपूर नजर आए थे। वॉर 2 में कियारा का किरदार भी फैंस के लिए काफी रोमांचक रहेगा। बता दें कि गेम चेंजर 10 जनवरी 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। कियारा आडवाणी को ऋतिक रोशन और एनटीआर जूनियर के साथ वॉर 2 में भी देखा जाएगा।

नाना पाटेकर के साथ दिखेंगे उत्कर्ष शर्मा

बॉलीवुड अभिनेता उत्कर्ष शर्मा, जिन्होंने गदर 2 में सनी देओल के बेटे के रूप में अपनी छाप छोड़ी, अब अपनी नई फिल्म वनवास के साथ दर्शकों के सामने आ रहे हैं। इस फिल्म में उनके साथ दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर भी होंगे, और इसकी रिलीज को लेकर फैंस के बीच जबरदस्त उत्सुकता है। वनवास उत्कर्ष के लिए एक अहम मोड़ साबित हो सकती है, क्योंकि वह अब भारतीय सिनेमा में एक युवा सितारे के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं। अपनी भूमिका को लेकर उत्साहित उत्कर्ष अब फिल्म के प्रमोशनल टूर पर निकलने वाले हैं। पहले भुवनेश्वर में प्रमोशन करते हुए, वह अपने फैंस से सीधे संवाद करेंगे, ताकि वह उनकी कनेक्टिविटी और लोकप्रियता को और बढ़ा सकें। फिल्म के गाने और उत्कर्ष का फिल्मी किरदार हमेशा से जमीनी स्तर के दर्शकों से जुड़ा हुआ रहा है, और अब वह बॉलीवुड में एक भरोसेमंद और रिलेटेबल फिगर बन चुके हैं। गदर 2 से लेकर वनवास तक, उत्कर्ष ने यह साबित कर दिया है कि वह एक वसेर्टाइल अभिनेता हैं, जो अलग-अलग भूमिकाओं को निभाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। नाना पाटेकर के साथ उनकी जोड़ी दर्शकों के लिए एक बेहतरीन अनुभव बनने वाली है।

कंगुवा के निर्देशक शिवा ने रॉकस्टार डीएसपी को सराहा

हाल ही में एक कार्यक्रम के दौरान फिल्म कंगुवा के निर्देशक शिवा से रॉकस्टार डीएसपी बहुत सराहना मिली। आभार व्यक्त करते हुए शिवा ने कहा, ह्लमैं डीएसपी गारू को धन्यवाद देना चाहता हूं। देवी श्री प्रसाद इस फिल्म के लिए एक बड़ा वरदान हैं, उन्होंने अद्भुत गाने दिए हैं। देवी गारू, हमें कुछ अद्भुत गीतों के साथ-साथ बेहतरीन बीजीएम देने के लिए धन्यवाद। न केवल निर्देशक, बल्कि मुख्य लीड सूर्या सर और फिल्म की पूरी टीम के साथ निमार्ताओं ने भी रॉकस्टार डीएसपी के योगदान के लिए अपनी सराहना व्यक्त की और बताया कि कैसे उनके प्रयासों ने फिल्म को दस गुना बेहतर बना दिया। कंगुवा के लिए, रॉकस्टार डीएसपी ने एक शानदार बैकग्राउंड स्कोर और ब्लॉकबस्टर एल्बम दिया है, जिसे प्रशंसकों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है। हाल ही में रिलीज हुए थलाइवन, योलो फायर सॉन्ग और माफी सॉन्ग जैसे ट्रैक ने प्रशंसकों को अपनी आकर्षक बीट्स से दीवाना बना दिया है, जिससे हर कोई बिना रुके झूमने पर मजबूर हो गया है। यह देश को अपनी धुनों पर थिरकाने के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता संगीतकार की प्रतिभा को दशार्ता है। अपनी रिलीज के बाद से, इन ट्रैकों ने इंटरनेट पर तहलका मचा दिया है और साल की सबसे बड़ी हिट बनने की ओर अग्रसर हैं। यह स्पष्ट है कि रॉकस्टार डीएसपी ने पूरे एल्बम में अपने संगीत का जादू बिखेरा है। प्रशंसक सिनेमाघरों में उनके संगीत की ताकत का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं और मूवी रिलीज के लिए उत्साहित हैं। कंगुवा के अलावा, रॉकस्टार डीएसपी ने हाल ही में हैदराबाद में अपने बहुप्रतीक्षित भारत दौरे की शुरूआत की। जबकि हैदराबाद कॉन्सर्ट ने उनके भारत दौरे की शुरूआत की, रॉकस्टार डीएसपी देश भर के कई और शहरों में प्रदर्शन करने के लिए तैयार है। हालाँकि अभी तक आधिकारिक तारीखों और स्थानों की घोषणा नहीं की गई है। प्रशंसक मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर, दिल्ली और अन्य उत्तरी क्षेत्रों में शो की उम्मीद कर सकते हैं, जिससे आगामी घोषणाओं के लिए महत्वपूर्ण चर्चा हो सकती है।

मीरा ने शाहिद की आदतों का किया खुलासा

शाहिद कपूर और मीरा राजपूत बॉलीवुड के सबसे पॉपुलर कपल्स में से एक हैं। दोनों अपनी खास केमिस्ट्री के लिए जाने जाते हैं, लेकिन हाल ही में मीरा ने एक चौंकाने वाला खुलासा किया है, जो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया है। मीरा ने करण जौहर के चैट शो कॉफी विद करण में शाहिद कपूर की एक आदत को लेकर अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा कि शाहिद की डकार लेने की आदत उन्हें बहुत परेशान करती है। इसके अलावा, मीरा ने यह भी बताया कि शादी के वक्त वह 21 साल की थीं और शाहिद के साथ उनका जीवन एक नई शुरूआत थी। मीरा के अनुसार, शाहिद बच्चों को बिगाड़ने में माहिर हैं, जबकि वह उन्हें नियंत्रण में रखना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को बिगाड़ना आसान है, लेकिन उन्हें सही दिशा में लाना थोड़ा मुश्किल होता है। मीरा ने यह भी कहा कि बच्चे के पालन-पोषण में पूरे परिवार का सहयोग अहम होता है। शाहिद और मीरा की शादी 2015 में हुई थी, और उनके दो बच्चे, मीशा और जैन हैं। शाहिद की अगली फिल्म देवा 14 फरवरी, 2025 को रिलीज होने वाली है।

ट्रोल होने के बाद मुकेश खन्ना ने दी सफाई

नब्बे के दशक में बच्चों के पसंदीदा शो में अभिनेता मुकेश खन्ना ने 'शक्तिमान' का किरदार निभाया था। इस शो के बाद वे बच्चों के पसंदीदा अभिनेता बन गये। कुछ दिनों पहले चर्चा थी कि 'शक्तिमान' पर फिल्म बनाई जाएगी और रणवीर सिंह 'शक्तिमान' का किरदार निभाएंगे। इस फिल्म के निर्माण के लिए मुकेश खन्ना ने रणवीर सिंह का विरोध किया। अब मुकेश खन्ना एक बार फिर शक्तिमान बन कर आ रहे हैं। अब उन्होंने बताया कि जब रणवीर उनके पास आए तो क्या हुआ था। अगर 'शक्तिमान' पर फिल्म बनानी है तो मेकर्स तय करते हैं कि किरदार कौन निभाएगा। लेकिन मुकेश खन्ना ने रणवीर सिंह के नाम का जमकर विरोध किया। उन्होंने कहा, "यह किसी बड़े अभिनेता के बारे में नहीं है, यह शक्तिमान की भूमिका निभाने के बारे में है। रणवीर इस भूमिका के लिए मेरे पास आए थे। वह मुझे मनाने आए थे। हमने दो घंटे तक बात की। मैं रणवीर के उत्साह की सराहना करता हूं और वह एक अच्छे अभिनेता हैं, लेकिन मैं अपनी राय पर दृढ़ था।" मुकेश खन्ना ने अक्षय कुमार के पृथ्वीराज चौहान के किरदार पर भी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, "उन्हें पृथ्वीराज जैसा महसूस नहीं हुआ क्योंकि सिर्फ मूंछें लगाने और विग न पहनने से कोई पृथ्वीराज चौहान नहीं बन सकता। अभिनेता का व्यक्तित्व किरदार के अनुरूप होना चाहिए।" दूसरी ओर, मुकेश खन्ना खुद 'शक्तिमान' बनकर वापस आ गए हैं। कुछ दिनों पहले उन्होंने अपने लुक की झलक दिखाई थी। लेकिन नेटिजन्स ने उन्हें ट्रोल कर दिया।

पलक तिवारी ने पहली बार इब्राहिम अली खान के साथ अपने रिश्ते पर तोड़ी चुप्पी

एक्ट्रेस श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी और सैफ अली खान के बेटे इब्राहिम अली खान को अक्सर एक साथ देखा गया है। इवेंट्स, पार्टीज, दोस्तों के साथ आउटिंग पर इस बार दोनों कपल के तौर पर आए हैं। ऐसे में सोशल मीडिया पर ऐसी चर्चा होने लगी कि उनका अफेयर चल रहा है और वे शादी भी करने वाले हैं। इब्राहिम और उनके परिवार के साथ पलक भी गोवा गई थीं। लेकिन अब पलक ने पहली बार बताया है कि आखिर दोनों का रिश्ता कैसा है। एक साक्षात्कार में पलक तिवारी को इब्राहिम से रिश्ते पर सवाल उठाए गए। इसके बाद उन्होंने कहा, "इब्राहिम और मैं केवल सार्वजनिक और सामाजिक समारोहों में मिलते हैं। हममें से कोई भी एक-दूसरे के संपर्क में नहीं है या एक-दूसरे को मैसेज नहीं करते है। मेरा नाम सात अन्य लोगों के साथ भी जोड़ा गया था। सोशल मीडिया के अनुसार मैं उन्हें डेट कर रही थी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं है।" इब्राहिम सिर्फ मेरा दोस्त है। मुझे उसके साथ बातचीत करना पसंद है। वह एक इंसान के तौर पर बहुत अच्छा है और वह जल्द ही डेब्यू करने वाला है।" हाल ही में हुई दिवाली पार्टी में इब्राहिम और पलक को साथ देखा गया था। इब्राहिम की मुलाकात विजय वर्मा और तमन्ना से हुई थी। वह वीडियो वायरल हो गया। इब्राहिम अक्सर पैपराजी की भीड़ में पलक को सुरक्षित रखते नजर आते थे। कभी-कभी वह उनका हाथ पकड़कर उन्हें कार में बिठाते नजर आते थे। नेटिजन्स को शक था कि पलक उनके पटौदी स्थित घर भी गई थीं। उनके कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो चुके हैं। पलक तिवारी ने सलमान खान की फिल्म 'किसी का भाई किसी की जान' से डेब्यू किया था। इब्राहिम ने करण जौहर की फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर काम किया था। जल्द ही वह थ्रिलर फिल्म 'सरजमीन' से डेब्यू करेंगे।

बॉलीवुड अभिनेता विक्रांत मैसी ने अपने कठिन समय को किया याद

कहा जाता है कि बॉलीवुड में काम पाने के लिए आपके सर पर गॉड फादर का हाथ होना जरूरी है। किसी व्यक्ति की सहायता से नौकरी पाना बहुत आसान है, लेकिन मनोरंजन की इस मायावी दुनिया में अपने लिए एक सही जगह बनाना बहुत मुश्किल है, जब आपका साथ देने वाला कोई न हो। बॉलीवुड में कई प्रामाणिक अभिनेता भी हैं, जिन्होंने बिना किसी की मदद लिए अपने दम पर अपनी नई पहचान बनाई है। इन्हीं में से एक हैं विक्रांत मैसी। विक्रांत बॉलीवुड के टॉप एक्टर्स में से एक हैं। सफलता के शिखर तक पहुंचने के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ी। विक्रांत का बचपन बहुत ही खराब हालात में बीता। हाल ही में उन्होंने एक इंटरव्यू दिया। इसमें उन्होंने अपने परिवार की झेली गई कठिनाइयों के बारे में बताया। विक्रांत ने एक इंटरव्यू में कहा कि उनके माता-पिता पहले कपूर परिवार के पड़ोसी थे, लेकिन कुछ पारिवारिक विवाद के कारण उन्हें घर से बाहर निकाल दिया गया।

उस समय उन पर दुखों का बड़ा पहाड़ टूट पड़ा। "माँ, पिताजी, मुझे और भाई सभी को घर से बाहर निकाल दिया गया। मुझे अपने परिवार के साथ एक गोदाम में रहना पड़ा क्योंकि वहां कोई अन्य उपयुक्त घर नहीं था। मेरा भाई उस समय बहुत छोटा था।

खाने के डिब्बों का काम करती थीं मां – विक्रांत ने आगे अपनी मां की मेहनत को भी याद किया। उन्होंने कहा कि मेरी मां ने हमारा घर चलाने के लिए बहुत मेहनत की। वह लोगों के लिए खाने के डिब्बे बनाती थी। इसके लिए वह सुबह 3 बजे उठ जाती थीं। इसके बाद 4 बजे से खाना बनाना शुरू हो जाता था। ठीक 6 बजे कुल 20 लोगों को लंच बॉक्स देना था। एक बार जब डिब्बे तैयार हो जाते, तो डिब्बे उन्हें ले जाना। इसके अलावा वह चौथी से सातवीं तक के बच्चों को पढ़ाती थीं। घर का सारा काम, खाना बनाना, साफ-सफाई करने के बाद रात को सोने जाने में मां को 12 या 1 भी बज जाता था।"

सूडोकू नवताल- 6974

सरल

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकू नवताल -6973 का हल

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2

शब्दजाल - 7721

फ क म हें द्र ग अं बा ला ल व
द री ल प्रे व जी स द ह क ड़
पा नी प त दी छ हि अ र्म र क
इं स ल क दि वा स सा ल ना क
डि आ त ग फ ज ना तू र ल क
य ह द गु दि री उ ती ण घ क
रो व ल ड़ या प दा जू भि व रा
क एं ऊ गां द ब क बा ए वा क
क ड ल व र्द गी स री द प नी
क गॉ ल प म हें द्र ग ढ़ प द
य मु ना न ग र स य ब प म

शब्द जाल में हरियाणा के 10 जिलों के नाम ढूंढिए. शब्द उपर से नीचे एवं तिरछे हो सकते हैं.

अंबाला,भिवानी,फरीदाबाद,यमुनानगर, पानीपत, गुड़गांव, करनाल, महेंद्रगढ़, रोहतक, हिसार

शब्दजाल - 7720 का हल

पी क ल व ग सो ना क प ल ओ
र ब ल न व ग ग से म ले म
त स र ल र्म वा पु रा रा ख क
क ज ज ग पु न न प न ली क
यू क दो ग द लं का ब ग झ क
क क ल प ह झ पू ना बू घ को
लि अ दे व ना र ल श र ल ल
प्ट ता दा ई धा ब क फ लो श पा
स बा चे न पी प ल र नी प कि
द पा ल प व जी र्त ऐ बें म स्ता
गु ल मो ह र न रा बा द प न

Jagrutidaur.com, Bangalore

अष्टयोग - 6674

	3	7	5			2
5	38		32	1	27	
	4		2	3	6	
3	32		32		33	
6		4	7		5	
	24		36	4	30	5
1			7		2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 6673 का हल

7	5	1	3	6	4	2
6	34	6	33	1	33	7
5	1	3	6	7	2	4
1	22	2	35	4	34	5
4	1	5	6	2	7	3
3	30	4	37	5	33	6
2	4	7	5	3	6	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

युगांडा ने 2025 अफ्रीका कप ऑफ नेशंस के लिए किया क्वालीफाई

कंपाला

युगांडा क्रेन्स ने अपने आखिरी दो ग्रुप के मैच खेलने से पहले अफ्रीका कप ऑफ नेशंस (एएफसीओएन) 2025 के लिए क्वालीफाई कर लिया है।

शुक्रवार को कंपाला में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपने मैच से पहले, युगांडा क्रेन्स ने अफ्रीका के सबसे बड़े फुटबॉल टूर्नामेंट के लिए टिकट बुक कर लिया, क्योंकि दक्षिण सूडान ने गुरुवार को जुबा में खेले गए ग्रुप के दूसरे मैच में कांगो गणराज्य को 3-2 से हरा दिया।

दक्षिण सूडान की जीत का मतलब है कि 10 अंकों के साथ तालिका में शीर्ष पर रहने वाला युगांडा और आठ अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहने वाला दक्षिण अफ्रीका स्वत: ही क्वालीफाई कर गया है, क्योंकि अपने आखिरी मैचों में दक्षिण सूडान (3 अंक) और कांगो (4 अंक) की जीत उन्हें उन अंकों तक पहुंचने में मदद नहीं कर सकती है, जो शीर्ष दो टीमें पहले ही हासिल कर चुकी हैं।

युगांडा के खेल राज्य मंत्री पीटर ओगवांग ने कहा, हमें बहुत खुशी है कि आखिरी दो मैच खेलने से पहले हमारी टीम ने मोरक्को में होने वाले एएफसीओएन 2025 के लिए क्वालीफाई कर लिया है।

युगांडा के कप्तान खालिद औचो ने सिन्हुआ को बताया कि हालांकि टीम पहले ही क्वालीफाई कर चुकी है, लेकिन वे प्रशंसकों के सामने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अच्छा परिणाम हासिल करने के लिए दृढ़ हैं। औचो ने कहा, हमने अभियान की शुरुआत से ही कड़ी मेहनत की है और हम उसी भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

युगांडा एएफसीओएन में आखिरी बार 2019 में भाग लेने के बाद वापस लौटा, जब यह मिस्र में आयोजित किया गया था। युगांडा क्रेन्स ने अपने अभियान की शुरुआत दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 2-2 से ड्रॉ के साथ की और कांगो गणराज्य को घरेलू मैदान पर 2-0 से हराया। क्रेन्स ने फिर से कंपाला में दक्षिण सूडान को 1-0 से हराया और जुबा में उसी टीम के खिलाफ 2-1 से कड़ी टक्कर दी।

न्यूज ब्रीफ

इंग्लैंड ने तीसरे टी20 में वेस्टइंडीज को हराकर सीरीज में 3-0 की बढ़त हासिल की

जमैका। सैम करेन और लियाम लिविंग्सटन की अच्छी बल्लेबाजी से इंग्लैंड ने तीसरे टी20 मुकाबले में मेजबान वेस्टइंडीज को तीन विकेट से हराकर सीरीज में 3-0 की बढ़त हासिल कर ली है। इस मैच में इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करते हुए मेजबान टीम को 8 विकेट पर 145 रनों पर ही रोक दिया। इसके बाद जीत के लिए मिले लक्ष्य को 19.2 ओवर में 7 विकेट पर 149 रन बनाकर हासिल कर लिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरे इंग्लैंड की शुरुआत खराब रही और उसने शुरुआत में ही फिल साल्ट, कप्तान जॉस बटलर और जैकब बेथल के विकेट खो दिये। केवल विल जैक्स ही 32 रन बना पाये। 75 रनों पर चार विकेट गिरने के बाद करेन ने 41 जबकि लिविंग्सटन ने 39रन बनाकर पारी संभाली। 123 के टीम स्कोर पर करेन पेवेलियन लौट गये। तब लिविंग्सटन ने जैमी ओवर्टन के साथ मिलकर टीम को 143 रन तक पहुंचाया। लिविंग्स्टन के आउट होने के बाद जैमी ओवर्टन और रेहान अहमद ने इंग्लैंड को लक्ष्य तक पहुंचाया। वहीं इससे पहले बल्लेबाजी करते हुए वेस्टइंडीज की आधी टीम 35 रन पर ही पेवेलियन लौट गयी। आउट होने वालों में अनुभवी निकलस पूरन और शे होप भी शामिल थे। इसके बाद कप्तान रोवमन पॉवेल ने 41 गेंद में 54 रन बनाकर पारी संभालने का प्रयास किया। उन्हें रोमारियो शेफर्ड 30 का साथ मिला। वहीं अल्जारी जोसेफ ने भी 19 गेंद में 21 रन बनाये। इससे वेस्टइंडीज 8 विकेट पर 145 रन ही बना पायी। इंग्लैंड की ओर से साकिब महमूद और जैमी ओवर्टन ने 3-3 विकेट लिए।

टायसन का जेक पॉल से मुकाबला होगा

टेक्सास। पूर्व हैवीवेट चैम्पियन माइक टायसन एक बार फिर रिंग में मुक्के बरसाते दिखेंगे। 58 साल के टायसन का मुकाबला इस बार यूट्यूबर से मुक्केबाज बने जेक पॉल से आर्लिंगटन स्थित एटी एंड टी रिंग में होगा। पॉल उनसे करीब 20 साल छोटे हैं और उनकी उम्र 27 साल है। इसी कारण इसे बैटल ऑफ जेनरेशन नाम दिया गया है। पहले ये मुकाबला 20 जुलाई को होना था पर टायसन के बीमार होने से इसे स्थगित करना पड़ा था अब ये भारतीय समय के अनुसार सोमवार सुबह होगा। इस मुकाबले से टायसन को दर्शक करीब दो दशक के बाद रिंग में देखेंगे। टायसन ने साल 2005 में केविन मैकब्राइड से हारने के बाद मुक्केबाजी छोड़ दी थी। 20 साल की उम्र में विश्व हेवीवेट टाइटल जीतने वाले सबसे युवा मुक्केबाज बने टायसन ने अपने करियर में 58 में से 50 मुकाबले जीते हैं। ऐसे में उनके प्रशंसकों को उम्मीद है कि वह फिर से बेहतर प्रदर्शन करेंगे। वहीं दूसरी तरफ पॉल को अपनी जीत का भरोस है। 2018 में करियर शुरू करने वाले पॉल ने अब तक 10 में से 9 मुकाबले जीते हैं और वह एक ही मैच हारे हैं। इस बार होने वाले मुकाबले में विशेष बदलाव किये गय हैं। इस मुकाबले में आठ राउंड होंगे, जिनमें हर राउंड दो मिनट का होगा।

भारतीय महिला हॉकी थाईलैंड को 13-0 से हराकर एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में पहुंची

राजगीर । भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में थाईलैंड को 13-0 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया है। भारतीय टीम ने अपनी इस तीसरे मुकाबले में विरोधी टीम को कोई अवसर नहीं दिया। भारत की ओर से दीपिका ने पांच गोल किये ये गोल दीपिका ने तीसरे, 19वें, 43वें, 45वें, 45वें मिनट में दागे जबकि प्रीति दुबे ने दो गोल नौवें, 40वें मिनट में किये। लालरेमसियामी ने 12वें और 56वें व ब्यूटी डुंगडुंग ने 30वें मिनट में एक गोल किया। नवनीत कौर ने 53वें और मनीषा चौहान ने 55वें, 58वें मिनट में एक-एक गोल किए। लालरेमसियामी ने इस मैच में उतरने के साथ ही अपने 150 मैच पूरे किये। वहीं प्रीति दुबे ने अपने 50 मैच पूरे किए। भारत ने पहले क्वार्टर में बेहतरीन प्रदर्शन किया। दीपिका ने तीसरे मिनट में ही गोल दाग कर भारतीय टीम को बढ़त दिला दी। इसके बाद अपना 50वां मैच खेल रही प्रीति ने एक गोल कर भारत की बढ़त को 2-0 कर दिया। लालरेमसियामी ने इसी क्वार्टर के 12वें मिनट में एक गोल किया।

प्रोफेशनल गोल्फ टूर ऑफ इंडिया के सीईओ नियुक्त हुए अमनदीप जोहल

नई दिल्ली

प्रोफेशनल गोल्फ टूर ऑफ इंडिया (पीजीटीआई) ने गुरूवार को जनवरी 2025 से अमनदीप जोहल को अपना नया मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) नियुक्त करने की घोषणा की है। भारतीय गोल्फ में एक सम्मानित नाम, जोहल अपनी नई भूमिका में व्यापक अनुभव लेकर आए हैं।

यह नियुक्ति हाल ही में एक और महत्वपूर्ण नेतृत्व वृद्धि के साथ हुई है, जिसमें दिग्गज क्रिकेटर कपिल देव ने इस साल जून में पीजीटीआई अध्यक्ष की भूमिका संभाली थी।

जोहल उत्तम सिंह मुंडी की जगह लेंगे, जिन्होंने इसकी स्थापना के बाद से संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जोहल, जो हाल ही तक पीजीटीआई बोर्ड में थे, 1 जनवरी, 2025 से कार्यभार संभालेंगे। 31 दिसंबर, 2024 तक की अंतरिम अवधि में, वह हैंडओवर प्रक्रिया को पूरा करने में मुंडी की सहायता करेंगे।

जोहल के सीईओ के रूप में पदोन्नति का स्वागत करते हुए, कपिल देव ने एक आधिकारिक बयान में कहा, अमनदीप लगभग 34 वर्षों से भारतीय और एशियाई गोल्फ सर्किट में हैं और यह बिल्कुल सही है कि कोई ऐसा व्यक्ति जो खेल में इतना डूबा हुआ है, पीजीटीआई का नेतृत्व करे। भारत में गोल्फ के लिए यह रोमांचक समय है और अमनदीप के नेतृत्व में, पीजीटीआई भारत और दुनिया भर में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए तत्पर है।

कपिल ने पीजीटीआई और भारतीय गोल्फ में उनके योगदान के लिए निवर्तमान सीईओ की सराहना की। उन्होंने कहा, उत्तम मुंडी की प्रतिबद्धता और दूरदर्शिता ने पीजीटीआई को भारत में प्रमुख पेशेवर गोल्फ टूर के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और उनके योगदान की बहुत सराहना की जाती है। मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री रखने वाले जोहल 1985 में जूनियर भारतीय टीम में जगह बनाने और चार साल बाद 1989 में राष्ट्रीय शौकिया चैंपियन के रूप में उभरने के बाद से भारतीय गोल्फ का अभिन्न अंग रहे हैं। तब से, उन्होंने कई भूमिकाएँ निभाई हैं, चाहे वह एशियाई और यूरोपीय टूर पर एक पेशेवर खिलाड़ी के रूप में हो, राष्ट्रीय कोच, पीजीटीआई के बोर्ड सदस्य और एशियाई टूर (2004) के संस्थापक सदस्य के रूप में रही हो। 55 वर्षीय जोहल ने कहा, मैं रोमांचित हूं और मुझे यह बड़ी जिम्मेदारी सौंपने के लिए पीजीटीआई को धन्यवाद देता हूं। यह शायद मेरे गोल्फिंग करियर की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है।

उन्होंने आगे कहा, मेरे पास मेरे प्रिय मित्र उत्तम मुंडी के लिए बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से पीजीटीआई के लिए एक मज़बूत नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

60 वर्षीय मुंडी ने विश्वास व्यक्त किया कि सीईओ के रूप में उनके उत्तराधिकारी अनुभवी जोहल इस भूमिका के लिए एक अच्छा विकल्प हैं, ताकि पीजीटीआई द्वारा अपनी स्थापना के बाद से पिछले 18 वर्षों में हासिल की गई सभी उपलब्धियों को और आगे बढ़ाया जा सके।

पीजीटीआई की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार उन्होंने कहा, मुझे खुशी है कि मैं अमनदीप को यह जिम्मेदारी सौंप रहा हूं, जो काफी अनुभवी हैं और गोल्फ के प्रति उनका जुनून बेमिसाल है। मुझे यकीन है कि पीजीटीआई को उनकी विशेषज्ञता से काफी लाभ मिलेगा।

सीईओ के रूप में अपने कार्यकाल को याद करते हुए मुंडी ने कहा, 2009 से यह मेरे लिए एक समृद्ध यात्रा रही है, जब मुझे पीजीटीआई को एक ब्रांड के रूप में विकसित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, जो 2006 में अस्तित्व में आने के बाद भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में था। मैं यह मानना चाहूंगा कि पिछले डेढ़ दशक में पीजीटीआई और भारतीय गोल्फ दोनों ने एक लंबा सफर तय किया है, जिसमें पीजीटीआई द्वारा प्रमुख मील के पत्थर हासिल किए गए हैं, जैसे कि इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ पीजीए टूर्स में शामिल होना, ऑफिशियल वर्ल्ड गोल्फ रैंकिंग सिस्टम का हिस्सा बनना, पीजीए टूर और डीपी वर्ल्ड टूर के साथ रणनीतिक साझेदारी पर हस्ताक्षर करना और इस सीजन में पुरस्कार राशि में लगभग 25 करोड़ रुपये की वृद्धि, जिसमें प्रत्येक इवेंट के लिए औसतन 1 करोड़ रुपये शामिल हैं।

उन्होंने कहा, इस बदलाव के साथ, पीजीटीआई का लक्ष्य भारत में पेशेवर गोल्फ को बढ़ावा देने, प्रतिभा को बढ़ावा देने और देश भर में खेल को बढ़ावा देने के अपने मिशन को जारी रखना है। हमें उम्मीद है कि कपिल देव और अमनदीप जोहल के नेतृत्व में पीजीटीआई नई उपलब्धियां हासिल करेगा और गोल्फ की दुनिया में अपना प्रभाव बढ़ाएगा।

ऑस्ट्रेलिया में अभ्यास सत्र के दौरान चोटिल हुए सरफराज

पर्थ

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज से पहले ही भारतीय खिलाड़ियों का चोटिल होना शुरु हो गया है। बल्लेबाज सरफराज खान को अभ्यास के दौरान कोहनी में चोट लगी है। भारतीय टीम पहले टेस्ट के लिए पर्थ के वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट एसोसिएशन (वाका) मैदान में अभ्यास कर रही थी इसी दौरान एक गेंद सरफराज को लगी। सरफराज के हालाकि पहले टेस्ट के लिए फिट हो जाने की उम्मीद है। मध्यक्रम में भारत के पास अनुभवी केएल राहुल हैं।

इसलिए सरफराज को पहले ही जगह मिलना मुश्किल है। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ बेहतरीन प्रदर्शन कर ध्रुव जुरेल की दावेदारी भी सरफराज से ऊपर है। जुरेल ने ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ सीरीज में दबाव के हालातों में 80 और 68 रनों की पारी खेली।

प्रथम श्रेणी क्रिकेट में अच्छे प्रदर्शन के आधार पर सरफराज ने इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की घरेलू सीरीज में अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया और लगातार दो अर्धशतकों के साथ अपनी यात्रा शुरू की।

वहीं सरफराज का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है। वह न्यूजीलैंड के खिलाफ सात पारियों में सिर्फ एक अर्धशतक बना पाए हैं। छह टेस्ट मैचों में सरफराज ने 37.10 की औसत से 371 रन बनाए हैं, जिसमें 11 पारियों में एक शतक और तीन अर्द्धशतक और 150 का सर्वश्रेष्ठ स्कोर शामिल है। सरफराज ने अभी तक भारत के बाहर एक भी टेस्ट नहीं खेला है और उछाल वाली पिचों पर खेलने का उन्हें कोई अनुभव नहीं है।

फीफा ने क्लब विश्व कप ट्रॉफी का किया अनावरण

जिनेवा

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन फुटबॉल (फीफा) ने पुनर्गठित फीफा क्लब विश्व कप की ट्रॉफी का गुरुवार को अनावरण किया।

विश्व फुटबॉल शासी निकाय ने घोषणा की कि ट्रॉफी को फीफा द्वारा डिजाइन किया गया था और इसे लक्जरी ज्वेलरी टिफ़नी के सहयोग से तैयार किया गया है। फीफा के अध्यक्ष जियानी इनफैंटिनो ने कहा, नवीन, समावेशी, अभूतपूर्व और वास्तव में वैश्विक, नया 32-टीम फीफा क्लब विश्व कप एक ऐसी ट्रॉफी का हकदार है जो इन सभी का प्रतिनिधित्व करती हो। एक स्वर्ण ट्रॉफी जो भविष्य का प्रतीक है और अतीत से प्रेरित है, प्रतिष्ठित और कालातीत दोनों है।

2025 क्लब विश्व कप 15 जून से 13 जुलाई, 2025 तक संयुक्त राज्य अमेरिका के 11 शहरों में आयोजित किया जाएगा। फाइनल न्यूयॉर्क के मेटलाइफ स्टेडियम में खेला जाएगा।

आईपीएल नीलामी में मार्की खिलाड़ियों के होंगे दो सेट

नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की फ्रेंचाइजियों को सूचित किया है कि आगामी खिलाड़ियों की नीलामी में मार्की खिलाड़ियों के दो सेट होंगे। यह नीलामी 24 और 25 नवंबर को सऊदी अरब के जेद्दा में होगी। नीलामी की तैयारी कर रहे फ्रेंचाइजियों को, बीसीसीआई ने बताया है कि दो मार्की लिस्ट होंगी, जिनमें प्रत्येक सेट में 8-9 खिलाड़ी होंगे। हालांकि, मेगा-नीलामी में दो एलीट लिस्ट होना असामान्य नहीं है, लेकिन 2022 में पिछली बड़ी नीलामी में केवल एक ही थी। हालांकि, 2018 और 2014 की नीलामी में दो सेट थे। एलीट ग्रेड में जगह बनाने वाले खिलाड़ियों में ऋषभ पंत, केएल राहुल, श्रेयस अय्यर, मोहम्मद सिराज, मोहम्मद शमी, अर्शदीप सिंह, आर अश्विन, मिशेल स्टार्क और जोस बटलर शामिल हैं। बेन स्टोक्स भी कट बना सकते थे, लेकिन उन्होंने इस साल की नीलामी के लिए पंजीकरण नहीं कराया है, जो जेद्दा के अबादी अल जोहर एरिना में आयोजित की जाएगी, जिसे बेंचमार्क एरिना के रूप में भी जाना जाता है। प्रत्येक मार्की खिलाड़ी ने खुद को 2 करोड़ रुपये का आधार मूल्य दिया है, उम्मीद है कि पहले दो सेट के अंत तक, उपलब्ध नीलामी पर्स का 30 से 50 प्रतिशत खर्च हो जाएगा। प्रत्येक फ्रैंचाइज़ी द्वारा कम से कम दो बड़े नामों को हासिल करने की संभावना है, जिनकी कीमत उन्हें औसतन 20-25 करोड़ रुपये के बीच हो सकती है, जो कुल उपलब्ध पर्स 641.5 करोड़ रुपये से कुल मिलाकर 200-250 करोड़ रुपये प्राप्त कर सकते हैं। फ्रैंचाइजी ने हाल ही में रिटेंशन पर अनुमत 1200 करोड़ रुपये में से 558.5 करोड़ रुपये पहले ही खर्च कर दिए हैं। दो दिनों की नीलामी की कार्यवाही खिलाड़ियों के पहले दो सेटों की बोलियों से तय होगी, जिनमें से अधिकांश के बिकने की उम्मीद है। पंजाब किंग्स, जिसके पास 110.5 करोड़ रुपये की सबसे बड़ी बैंक जमा राशि है, को सर्वश्रेष्ठ में से सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी मिलने की उम्मीद है। बोली लगाने का सही क्रम और मार्की सूची बीसीसीआई द्वारा अगले कुछ दिनों में जारी की जाएगी।

बीसीसीआई ने हाल ही में 1,574 नामों का एक रजिस्टर प्रसारित किया, जिसमें 1,165 भारतीय खिलाड़ी और 409 विदेशी खिलाड़ी हैं। इस सूची में 320 कैप्ड, 1224 अनकैप्ड और 30 एसोसिएट खिलाड़ी शामिल हैं। कुल 46 खिलाड़ियों को फ्रैंचाइजी ने बरकरार रखा है। बीसीसीआई ने फ्रैंचाइजी से उन नए नामों का सुझाव देने को कहा है, जिन्हें वे नीलामी में शामिल करना चाहते हैं। फ्रैंचाइजी को 12 नवंबर तक रजिस्टर से उन खिलाड़ियों की सूची के साथ जवाब देने के लिए भी कहा गया है, जिन्हें वे अंतिम सूची में शामिल करना चाहते हैं।

इंग्लैंड सीरीज के लिए विलियमसन की वापसी, नाथन स्मिथ को मिला मौका

वेलिंगटन

न्यूजीलैंड क्रिकेट (एनजेडसी) ने शुक्रवार को इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए राष्ट्रीय टीम की घोषणा कर दी है। केन विलियमसन कमर की चोट से उबर चुके हैं, जिसके कारण वे न्यूजीलैंड के भारत दौरे से बाहर रहे थे, लेकिन अब वे इंग्लैंड के खिलाफ होने वाले मैच के लिए टीम में शामिल हो गए हैं, जबकि वेलिंगटन के ऑलराउंडर नाथन स्मिथ को पहली बार टेस्ट टीम में शामिल किया गया है।

अनकैप्ड सीमर जैकब डफी भी टीम का हिस्सा हैं, जबकि बेयर सियर्स (घुटना) और काइल जैमीसन (पीठ) चोट के कारण टीम में नहीं हैं। पुणे में 13 विकेट लेने वाले बाएं हाथ के स्पिनर मिशेल सेंटनर वेलिंगटन और हैमिल्टन में होने वाले दूसरे और तीसरे टेस्ट के लिए टीम में शामिल होंगे। पहला टेस्ट 28 नवंबर से क्राइस्टचर्च में होगा।

26 वर्षीय स्मिथ ने इस सप्ताह की शुरुआत में श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया था। पिछले सीजन के प्लंकेट शील्ड में वे 17.18 की औसत से 33 विकेट लेकर सबसे ज़्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज़ थे और सितंबर में उन्हें सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट दिया गया। उन्होंने पिछले सीजन की काउंटी चैंपियनशिप में वॉर्सेस्टरशायर के लिए 21.14 की औसत से 27 विकेट लिए और तीन अर्धशतक भी लगाए। भारत के खिलाफ 15 विकेट लेने वाले एजाज पटेल को टीम में शामिल नहीं किया गया है, जिसका मतलब है कि घर से बाहर अपने सभी 85 टेस्ट विकेट लेने का उनका रिकॉर्ड अभी बरकरार रहेगा। विलियमसन के फिट होने से भारत में सीरीज के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी विल यंग पर अपनी जगह बरकरार रखने का दबाव बढ़ सकता है। शुक्रवार को पहले ही घोषणा की गई थी कि टिम साउथी इंग्लैंड सीरीज के बाद टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लेंगे, जब तक कि न्यूजीलैंड विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में नहीं पहुंच जाता। भारत में 3-0 की जीत ने उन्हें फिर से फाइनल में पहुंचने का मौका दिया है, हालांकि इंग्लैंड को हराने के बाद भी इसकी गारंटी नहीं होगी। चयनकर्ता सैम वेल्स ने कहा, विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के लिहाज से यह टीम के लिए बड़ी सीरीज है और अब टिम साउथी जैसे खिलाड़ी को विदाई देना भी इसे और भी महत्वपूर्ण बनाता है। टिम का करियर शानदार रहा है और वह महान ब्लैक कैप्स में से एक के रूप में जाने जाएंगे। मुझे यकीन है कि टीम और जनता टिम को इस बहुप्रतीक्षित सीरीज में एक शानदार विदाई देना चाहेगी। नाथन के लिए पहली बार टेस्ट टीम में शामिल होना भी एक रोमांचक समय है। नाथन एक शानदार प्रतिभा है जिसका प्रथम श्रेणी रिकॉर्ड साबित हुआ है और मुझे यकीन है कि वह टीम में बहुत सारा कौशल और ऊर्जा लेकर आएगा इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए न्यूजीलैंड की टीम- टॉम लैथम (कप्तान), टॉम ब्लंडेल, डेवोन कॉनवे, जैकब डफी, मैट हेनरी, डेरिल मिशेल, विल ओरुरके, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रवींद्र, मिशेल सेंटनर (टेस्ट 2 और 3), नाथन स्मिथ, टिम साउथी, केन विलियमसन, विल यंग।

उभरती आवाजें : राष्ट्रीय प्रेस दिवस का जश्न और पत्रकारिता का बदलता परिदृश्य

लेखक : जाहिद अहमद तापादार
आरओ, सह सीएचडी,
आईपीआरडी, बीटीसी, कोकराझार

हर साल 16 नवंबर को मनाया जाने वाला राष्ट्रीय प्रेस दिवस लोकतंत्र को मजबूत करने, जवाबदेही को बढ़ावा देने और सूचना के मुक्त प्रवाह को सुनिश्चित करने में प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका का जश्न मनाता है। यह दिन 1966 में भारतीय प्रेस परिषद की स्थापना का स्मरण कराता है, जो मीडिया उद्योग के विकसित परिदृश्य पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है। जैसा कि हम 2024 में इस अवसर को चिह्नित करते हैं, थीम, *प्रेस की बदलती प्रकृति,* प्रेस की परिवर्तनकारी यात्रा और आगे की चुनौतियों और अवसरों पर प्रकाश डालती है। प्रेस हमेशा से ही लोकतांत्रिक समाजों की आधारशिला रही है, जो लोगों की आवाज और सत्ता के प्रहरी के रूप में काम करती है। प्रिंट पत्रकारिता के शुरुआती दिनों से लेकर रेडियो और टेलीविजन के उदय और अब डिजिटल प्लेटफॉर्म के प्रभुत्व तक, जनमत को आकार देने और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका अपरिहार्य रही है। हालांकि, तकनीकी प्रगति, विशेष रूप से डिजिटल मीडिया के उदय ने नाटकीय रूप से समाचार बनाने, उपभोग करने और प्रसारित करने के तरीके को बदल दिया है। सोशल मीडिया, स्मार्टफोन और 24/7 समाचार चक्रों के आगमन के साथ डिजिटल क्रांति ने पत्रकारिता को और अधिक तात्कालिक, संवादात्मक और सुलभ बना दिया है।

आज, जिस गति से सूचना प्रसारित होती है, वह अभूतपूर्व है। समाचार वास्तविक समय में दर्शकों तक पहुंचता है, भौगोलिक बाधाओं को तोड़ता है और मीडिया को एक गतिशील, संवादात्मक मंच में बदल देता है। पारंपरिक प्रिंट और प्रसारण पत्रकारिता, जो कभी समाचारों का एकमात्र चैनल हुआ करता था, अब ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, ब्लॉग, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया चैनलों के साथ सह-अस्तित्व में है। इसने सूचना की पहुंच का विस्तार किया है और इसके निर्माण को लोकतांत्रिक बनाया है, साथ ही नागरिक पत्रकारिता ने गति पकड़ी है। लोग अब समाचारों को पहले हाथ से रिपोर्ट कर सकते हैं, जिससे मीडिया का परिदृश्य अधिक विविध हो गया है।

हालांकि, इस परिवर्तन ने चुनौतियां भी ला दी हैं। डिजिटल मीडिया के उदय ने गलत सूचना, फर्जी खबरों और स्थापित आउटलेट्स में विश्वास के क्षरण के बारे में चिंताएं बढ़ा दी हैं। पहले स्थान पर आने की होड़ में, कभी-कभी सटीकता का त्याग किया जा सकता है। पेशेवर पत्रकारिता और राय-आधारित सामग्री के बीच की रेखा धुंधली हो गई है, और असत्यापित सामग्री के प्रसार के साथ, प्रेस को अधिक जिम्मेदारी का सामना करना पड़ता है। यह सुनिश्चित करना कि प्रेस विश्वसनीय, नैतिक और भरोसेमंद बना रहे, जनता का विश्वास बनाए रखने और पत्रकारिता की अखंडता की रक्षा करने के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रेस की बदलती प्रकृति पत्रकारों को भी प्रभावित करती है। जबकि नई तकनीकों ने सूचना एकत्र करने और प्रसारित करने के लिए अधिक उपकरण प्रदान किए हैं, पेशा अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है। पत्रकारों को एक जटिल मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र को नेविगेट करना चाहिए, नए प्लेटफार्मों के अनुकूल होना चाहिए और वास्तविक समय में दर्शकों के साथ जुड़ना चाहिए। इसके लिए कौशल के एक नए सेट और इसमें शामिल नैतिक जिम्मेदारियों की समझ की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, सोशल मीडिया के उदय ने पत्रकारों को ऑनलाइन उत्पीड़न, गलत सूचना अभियानों और राजनीतिक दबावों के संपर्क में ला दिया है, जो सभी प्रेस की स्वतंत्रता को खतरे में डालते हैं।

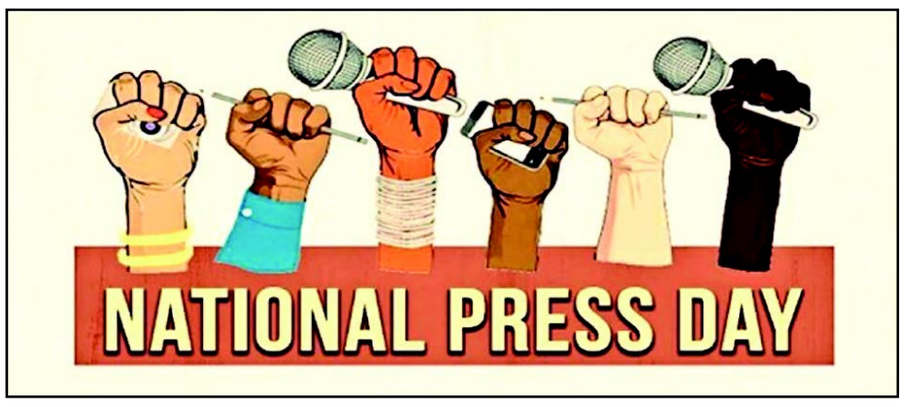

भारत में प्रेस ने स्वतंत्रता की लड़ाई से लेकर सत्ता को जवाबदेह बनाने की अपनी वर्तमान भूमिका तक, देश की लोकतांत्रिक यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसे-जैसे प्रेस विकसित हो रहा है, इसकी स्वतंत्रता की रक्षा करना और निष्पक्षता, सटीकता और जिम्मेदारी के मूल्यों को बनाए रखना आवश्यक है। प्रेस की स्वतंत्रता और जिम्मेदारी सुनिश्चित करने के लिए स्थापित भारतीय प्रेस परिषद नैतिक पत्रकारिता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर, हमें एक ऐसे प्रेस के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करनी चाहिए जो अनुचित प्रभाव से मुक्त हो और जनता को सूचित और शिक्षित करने के लिए सशक्त हो। *प्रेस की बदलती प्रकृति* की थीम भी निरंतर अनुकूलन की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। प्रेस को सत्य, निष्पक्षता और निष्पक्षता के अपने मूल सिद्धांतों को बनाए रखते हुए सामाजिक आवश्यकताओं और तकनीकी प्रगति के जवाब में विकसित होना चाहिए। डिजिटल प्लेटफॉर्म का उदय, न्यूजरूम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा जर्नलिज्म की बढ़ती भूमिका सभी एक ऐसे भविष्य की ओर इशारा करते हैं जहां प्रेस सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर चर्चा को आकार देने में और भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इन बदलावों को खतरे के रूप में देखने के बजाय, हमें इन्हें 21वीं सदी में प्रेस की भूमिका को नया रूप देने और मजबूत करने के अवसर के रूप में अपनाना चाहिए।

इस राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर, पत्रकारों के समर्थन के लिए असम सरकार और बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। दोनों सरकारें पत्रकारों के कल्याण के उद्देश्य से वित्तीय सहायता और कौशल विकास कार्यक्रमों सहित विभिन्न योजनाओं को लागू कर रही हैं। ये पहल पत्रकारों को अपने कौशल को उन्नत करने, नए मीडिया रुझानों के साथ बने रहने और तेजी से बदलते मीडिया परिवेश में अपनी पेशेवर क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करती हैं। ये प्रयास सुनिश्चित करते हैं कि पत्रकार अपनी भलाई और पेशेवर विकास को बढ़ावा देते हुए आधुनिक पत्रकारिता की चुनौतियों का सामना करने के लिए सुसज्जित हों।

इसके अलावा, समाज के विकास के लिए सरकार और मीडिया के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध महत्वपूर्ण हैं। प्रेस नागरिकों को सरकारी नीतियों, सामाजिक मुद्दों और स्थानीय चुनौतियों के बारे में सूचित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही, मीडिया से मिलने वाली रचनात्मक प्रतिक्रिया सरकारों को अधिक प्रभावी नीतियां बनाने में मार्गदर्शन कर सकती है। यह सुनिश्चित करने के लिए दोनों के बीच तालमेल आवश्यक है कि लोगों की आवाज सुनी जाए और सार्वजनिक चर्चा पारदर्शी, समावेशी और जीवंत बनी रहे। ऐसे दौर में जब संस्थाओं में भरोसा बहुत जरूरी है, मीडिया-सरकार की साझेदारी, आपसी सम्मान पर आधारित, एक जागरूक और सक्रिय नागरिक वर्ग को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय प्रेस दिवस 2024 न केवल चिंतन का समय है, बल्कि कार्रवाई का आह्वान भी है। हमें प्रेस की उपलब्धियों का जश्न मनाना चाहिए और साथ ही उसके सामने आने वाली चुनौतियों को भी स्वीकार करना चाहिए। यह प्रेस की स्वतंत्रता, सटीकता और जवाबदेही के सिद्धांतों के प्रति खुद को फिर से प्रतिबद्ध करने का अवसर है। नागरिकों के रूप में, हमें एक जीवंत मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करना चाहिए जो व्यक्तियों को सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाता है। पत्रकारों के रूप में, हमें उच्चतम मानकों को बनाए रखना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि मीडिया समाज में अच्छाई के लिए एक ताकत बना रहे।

अंत में, प्रेस की बदलती प्रकृति इसकी लचीलापन और अनुकूलनशीलता का प्रतिबिंब है। प्रिंट मीडिया से लेकर डिजिटल समाचार तक, प्रेस का मुख्य कार्य अपरिवर्तित रहता है: लोगों को सूचित करना, शिक्षित करना और सशक्त बनाना। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर, आइए हम मीडिया की उपलब्धियों का जश्न मनाएं, इसकी चुनौतियों का सामना करें और यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी सामूहिक प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करें कि मीडिया आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वतंत्र, निष्पक्ष और जिम्मेदार बना रहे।

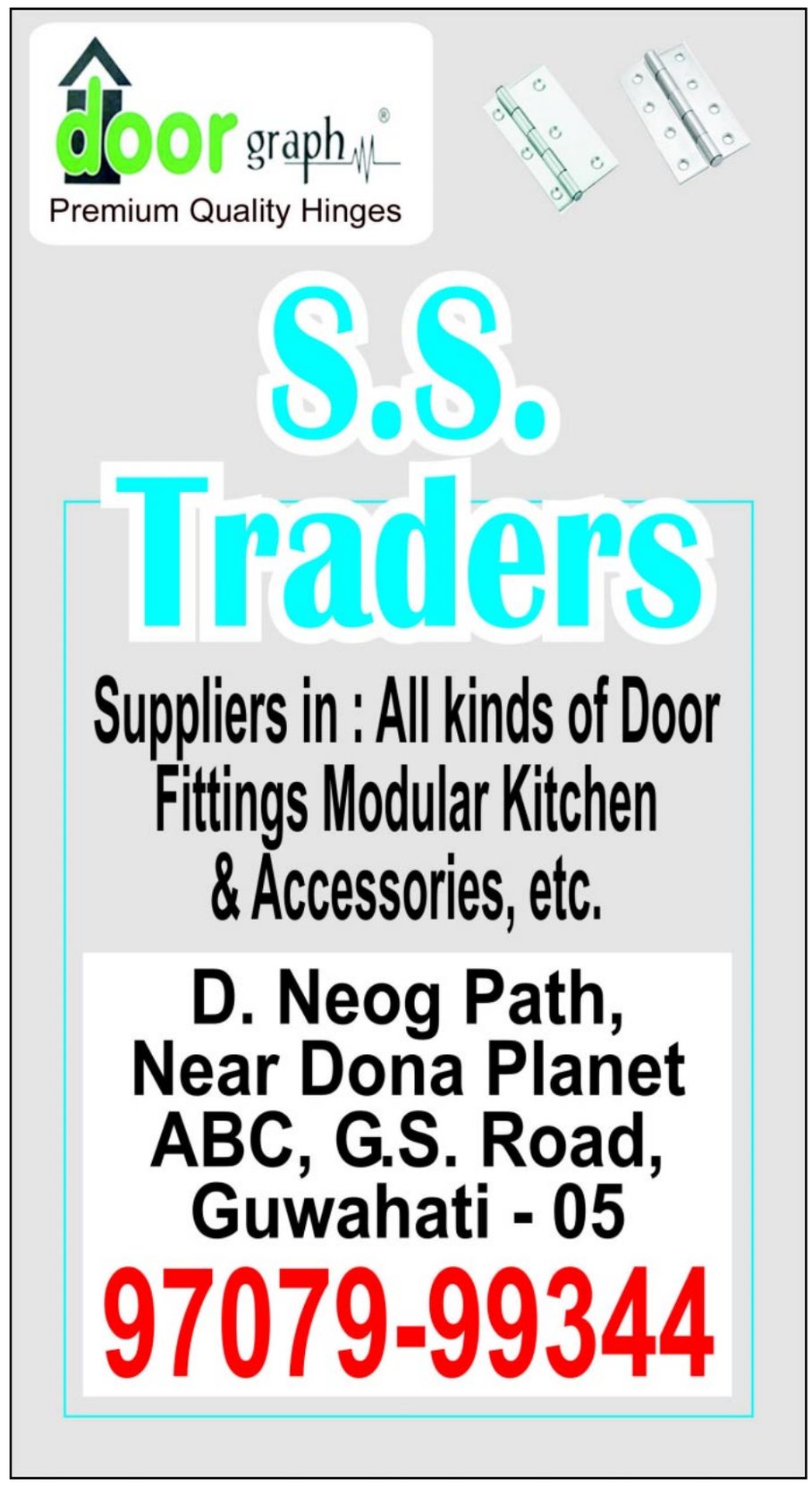

राष्ट्रीय प्रेस दिवस 2024

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के बारे में जानने योग्य कुछ बातें

भारत में 16 नवंबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो 1966 में भारतीय प्रेस परिषद (पीसीआई) की स्थापना की याद दिलाता है। यह भारत में प्रेस की भूमिका को मान्यता देने का अवसर है। भारत जैसे लोकतांत्रिक समाज में प्रेस को अक्सर *लोकतंत्र का चौथा स्तंभ* कहा जाता है। इसमें सरकार को जवाबदेह ठहराने और स्वतंत्र रूप से समाचार और सूचना प्रसारित करने की शक्ति है। प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए संसद द्वारा पारित प्रेस परिषद अधिनियम के तहत पीसीआई का गठन किया गया था। इस वर्ष राष्ट्रीय प्रेस दिवस की थीम है, *प्रेस का बदलता स्वरूप*। आधिकारिक समारोह दिल्ली के राष्ट्रीय मीडिया केंद्र में आयोजित किया जाएगा, जहां केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के बारे में जानने योग्य कुछ बातें यहां दी गई हैं :

संवैधानिक गारंटी : भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(ए) देश के लोकतंत्र की आधारशिला है क्योंकि यह प्रत्येक भारतीय नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देता है। कमोबेश इसी अनुच्छेद में प्रेस को लिखने, प्रकाशित करने और सूचना प्रसारित करने की स्वतंत्रता भी निहित है।

उचित प्रतिबंध : यद्यपि भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार मौलिक है, लेकिन निरपेक्ष नहीं है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 (2) में राष्ट्रीय सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था और शालीनता के आधार पर कुछ उचित प्रतिबंधों की रूपरेखा दी गई है।

प्रेस की स्वतंत्रता : प्रेस की स्वतंत्रता, भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का निर्णायक हिस्सा है। यह अधिकार भारतीय प्रेस को बिना किसी डर के जानकारी साझा करने और सरकार को जवाबदेह ठहराने की अनुमति देता है।

মুদ্রক एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए ईको प्रिंटिंग प्रेस, पोस्ट एवं पीएस : गड़चुक, कटाबाड़ी मस्जिद के पास, कामरूप (मेट्रो), गुवाहाटी-35 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
संपादक : राकेश शर्मा, मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम ● फोन : 0361-2960054 (संपादकीय)** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **(सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन)**